भोजपुरी कहानी संग्रह

नकीर

रामयश 'अविकल'

लकीर

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

रामयश 'अविकल'

www.bhojpurisahityangan.com

लकीर

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

रामयश 'अविकल'

भोजपुरी प्रकाशन, नई दिल्ली

www.sarvbhasha.in

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी प्रकाशन
जे-49, गली नं.-38, राजापुरी
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

शाखा
24, न्यू ट्रांसपोर्ट नगर, शिवपुरी न्यू कॉलोनी
गोरखपुर (उ.प्र.) 273016

ई-मेल : bhojpuriprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.sarvbhasha.in
☎ 011 35853664

लकीर (भोजपुरी कहानी संग्रह)
रामयश 'अविकल'
ISBN : 978-93-49584-08-2
प्रथम संस्करण : 2025

© रामयश 'अविकल'

मूल्य : ₹ 240.00

मुद्रक: आर. के. ऑफ़सेट प्रोसेस, दिल्ली

LAKEER

By Ramyash 'Avikal'

पुस्तक से संबधित किसी भी वाद-विवाद के लिए व्यवहार न्यायलय आरा भोजपुर मान्य होगा।

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

माई-बाबूजी, चाचा जी के त्याग तपस्या आ कर्मठता
के संगे जीवन संगिनी परिनिब्बुत उषा देवी आ
प्रख्यात कथाकार- कृष्ण कुमार जी को सादर

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

•	आशावादी स्वर की कहानियाँ	9
•	भोजपुरी कथा साहित्य में 'लकीर' से दलित चेतना के प्रवाह	10
•	भूमिका	13
•	सामाजिक समरसता के भूख	14
1.	सुझ-बूझ	17
2.	नेवर	23
3.	उल्लंघन	32
4.	ई भरम कब टूटीं?	41
5.	कोरहाग	51
6.	संगोरल सपना	60
7.	जिद	64
8.	मलिकार	71
9.	लकीर	78
10.	कारवां	87
11.	टुअर	93
12.	भूख	102
13.	शनिचरी	109
14.	हिंजड़ा	116
15.	भनक	122

www.bhojpurisahityangan.com

आशावादी स्वर की कहानियाँ

भोजपुरी के प्रख्यात साहित्यकार रामयश अविकल अपनी सद्य: प्रकाशित कहानी संग्रह "लकीर" के लिए बधाई के पात्र हैं। कहानी संग्रह लकीर की सभी कहानियां समाजिक बदलाव की एक सशक्त लकीर खींचने में कामयाब रही हैं। कहानी संग्रह में कुल मिलाकर पंद्रह कहानी हैं, यह सभी कहानियां समाज में हो रहे परिवर्तन की ओर इंगित करती हैं, खासकर दलित और स्त्री समाज में। कहना न होगा कि कहानीकार की भारतीय समाज पर मजबूत पकड़ है, इसीलिए वह भारतीय समाज में पसरे जातिवाद, लिंगभेद, बालमजदूरी, विधवाओं के साथ हो रही नाइंसाफी, दहेज व शराब के कारण हो रही मृत्यु, अंधविश्वास व पाखण्ड के चलते विघटित होते समाज की कुरीतियों के खिलाफ और इनको खत्म करने की बजाय जो इनको बनाये रखना चाहते है उनके खिलाफ यह कहानियां एक बदलाव के उदघोष की तरह है। जनविरोधी व्यवस्था व उसके ठेकेदारों, सामन्तवादियों, जातिवादियों, स्त्रिविरोधियों के खिलाफ वह खुद भी खड़े हैं व उनकी कहानियां भी खड़ी हैं। जातिवाद के कारण अंतरजातीय विवाह होने पर दलित दूल्हे की हत्या करना, दलित बच्चों को स्कूल में प्रताड़ित कर उन्हें शिक्षा से वंचित करना, दलितों से बेगार करवाना, उनको पूरी मजदूरी न देना, उनकी स्त्रियों के साथ बलात्कार करना आदि के खिलाफ़ कहानीकार रामयश अविकल पुरजोर आवाज़ उठाते हैं। रामयश अविकल की कहानी अन्याय अत्याचार और भेदभाव के खिलाफ बदलाव की बात करती है। यदि समाज को बदलना है, तो अंतरजातीय विवाह होने चाहिए, लड़कियां जरूर स्कूल जानी चाहिए, थर्ड जेंडर को बिना किसी भेदभाव के पूरे मौके चाहिए, किसी शिक्षक को द्रोणाचार्य नहीं होना चाहिए, दहेज प्रथा व नशाखोरी बंद होनी चाहिए। उनकी कहानियों का स्वर आशावादी और यथार्थवादी के साथ परिवर्तनकामी हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानीकार रामयश अविकल की कहानियां साहित्य के माध्यम से समाज में, पाठकों के मन में एक सार्थक व सकारात्मक लकीर खींचने का काम करेंगी। हार्दिक बधाई और शुभकामना।

– अनिता भारती

सुप्रसिद्ध लेखिका

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कथा साहित्य में 'लकीर' से दलित चेतना के प्रवाह

भोजपुरी के कवि, कहानीकार आ दस्तक पत्रिका के यशस्वी संपादक रामयश 'अविकल' के भोजपुरी कहानी संग्रह 'लकीर' के पांडुलिपि पढ़ रहल बानी, बुझाता कि भोजपुरी में दलित चेतना के पुरोधा रचनाकार प्रो. शत्रुघ्न कुमार जी के 'भ्रष्टाचार' से पढ़त आगे बढ़ि रहल बानी। मसलन 'भ्रष्टाचार' कहानी संकलन भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना आ ग्रामीण जीवन के गहिर पड़ताल प्रस्तुत करत बा ओहि लेखा ई संग्रह साल 2025 में ओही धारा के लमहर चाकर करत आगे बढ़ि रहल बा।

एह संग्रह में संकलित 15 कहानियन; जइसे 'सुझ-बूझ', 'नेवर', 'उल्लंघन', 'ई भरम कब टूटीं', 'कोरहाग', 'संगोरल सपना', 'जिद', 'मलिकार', 'लकीर', 'कारवां', 'टुअर', 'भूख', 'शनिचरी', 'हिंजड़ा' आ 'भनक'; समाज के अलग अलग पहलुअन के उजागर करत बा। लेखक भोजपुरी भाषा के सहजता आ जीवंतता के संगे सामाजिक विषमता, जातिवाद, शोषण, आ मानवीय संघर्ष के उकेरत बा।

'लकीर' के कहानियन के कथ्य भा थीम के बात कइल जाव त गंवई भारत, विशेष करके भोजपुरी समाज के जिनगी के साहित्य से अलोता राखल आ लुकावल सच्चाई के हमनी के सोझा रखत बा। एह कहानियन में सामाजिक भेदभाव, जातिगत गैरबराबरी, शिक्षा के कमी, आ गरीबी जइसन मुद्दन के गहराई से उकेरल गइल बा। हरेक कहानी एगो अइसन 'लकीर' खींच रहल बा, जवन समाज में व्याप्त रूढ़ियन आ सड़ल परंपरा के चुनौती दे रहल बा।

भोजपुरी के जादेतर साहित्यकार एकरा से मुंह चोरावत रहे लन, काहे कि भोजपुरी साहित्य में आजो मनुवादी परम्परा के वहम बाढ़ के पानी लेखा उफनात रहेला।उनका बुझाला कि दलित विषय पर लिखल माने भोजपुरी साहित्य के

www.bhojpurisahityangan.com

अपवित्र (profane) बना दिहल। साहित्य जब समाज के दर्पण ह त कब ले जातीय व्यवस्था से उपजल भेदभाव आ अमानवीयता के विरोध ना होई...?

रामयश अविकल जी के कुछ कहानी के कथ्य आ तेवर देखीं-

'नेवर' कहानी में जातिवाद आ शिक्षा के प्रति सामाजिक बाधा के उजागर कइल गइल बा। दीपक, जे एगो निम्न जाति से बाड़े, उनका स्कूल में भेदभाव के सामना करे के पड़त बा , बाकिर उनकर जिद आ मेहनत उनका सफलता के ओर ले जात बा। ई कहानी में शिक्षा के महातम के बतावल बा आ सामाजिक रूढ़ियन के तुड़े के प्रेरणा बा। एही लेखा, 'उल्लंघन' में तिलक आ साइकिल के प्रतीक के माध्यम से सामाजिक अपेक्षा आ व्यक्तिगत आज़ादी के बीच टकराव के दर्शावल गइल बा।

'ई भ्रम कब टूटी?' में लैंगिक भेदभाव आ रूढ़िगत परंपरा के चुनौती दिहल गइल बा, जहवाँ पार्वती आ चंद्रदेव जइसन पात्र सामाजिक बदलाव खातिर संघर्ष करत बाड़े।

'मलिकार' कहानी में शोषण आ सामंती व्यवस्था के क्रूरता के उजागर कइल गइल बा, जे ग्रामीण समाज में मजदूरन आ जमींदारन के बीच शक्ति असंतुलन के दर्शावत बा।

'लकीर' शीर्षक कहानी संग्रह के आत्मा ह, जवन जातीय भेदभाव के ख़त्म करे आ समानता के ओर बढ़े के संदेश देत बा।

रामयश 'अविकल' के लेखन शैली भोजपुरी भाषा के सहजता आ प्रामाणिकता से परिपूर्ण बा। लेखक भोजपुरी के ठेठ मुहावरा, कहावत आ बोलचाल के एह तरह उपयोग कइले बाड़े कि पाठक के गांव में बिहार के माटी के महक महसूस होखी। संवाद पात्रन के भावना आ सामाजिक संदर्भ के जीयतार करत बा।

लेखक के शैली कथात्मक आ संवादात्मक दुनू बा। कहानियन में संवाद के उपयोग पात्रन के चरित्र-चित्रण आ कहानी के कथानक के आगे बढ़ावे में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहल बा। जइसे, "नेवर" में दीपक आ मास्टर साहेब के बीच संवाद पाठकन के जातिवाद के गहिंर जड़ से परिचित करावत बा। लेखक कथानक के सरल राखत जटिल सामाजिक मुद्दन के प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करत बाड़े।

हालांकि, कुछ जगह प पाठ में तनिका दोहराव आ अनावश्यक विस्तार देखे के मिलत बा, जवन कहानी के गति के कम कर सकत बा। एकरा बादो, भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा के जीवंतता आ लेखक के संवेदनशीलता एह कमी के काफी हद ले संतुलित करत दिखाई देत बा।

'लकीर' में संकलित कुल कहानी आजू के समय में ओतने प्रासंगिक बाड़ी सन। कुल कहानी सामाजिक सुधार आ जागरूकता के आह्वान करत बाड़ी।

'संगोरल सपना' में छोटू के कहानी बाल श्रम आ शोषण के मुद्दा के उठावल बा, जवन भारत के कई हिस्सा में आजो एगो गंभीर समस्या बा। 'जिद' आ 'शनिचरी' जइसन कहानियन में नव्यक्तिगत दृढ़ता आ सामाजिक बदलाव खातिर संघर्ष के रेखांकित कइल बा। 'हिजड़ा' में अनिता के कहानी लैंगिक भेदभाव आ सामाजिक अपमान के खिलाफ एगो महिला के लड़ाई को दर्शावल गइल बा, जवन नारीवादी दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण बा।

लेखक इ कुल कहानियन के माध्यम से समाज के हाशिए प मौजूद लोगन - दलित, पिछड़ा, वंचित महिला, आ गरीब - के आवाज बुलंद करत बाड़े। कुल कहानी ना खाली सामाजिक कुरीतियन के आलोचना करत बाड़ी सन, बलुक आशावाद आ बदलाव के संभावना के रेखांकित करत बाड़ी सन।

हम कह सकत बानी कि रामयश 'अविकल' जी के "लकीर" कहानी संकलन के माध्यम से भोजपुरी साहित्य में एगो महत्वपूर्ण योगदान बा। इ संग्रह ना खाली भोजपुरी भाषा के समृद्धि के प्रदर्शित करत बा, बलुक सामाजिक जागरूकता आ सुधार के एगो मजबूत संदेश दे रहल बा। लेखक के संवेदनशीलता, भाषा के प्रामाणिकता, आ सामाजिक मुद्दों के प्रति गहरी समझ एह संग्रह के विशिष्ट बना रहल बा। इ संग्रह ओह पाठकन खातिर एगो प्रेरणादायी पाठ होई, जवन सामाजिक बदलाव आ ग्रामीण भारत के वास्तविकता के समझल चाहत होखस। 'लकीर' ना खाली एगो साहित्यिक कृति ह, बलुक समाज के बदले के एगो आह्वान बा, जवन भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में एगो मील के पत्थर साबित होई।

– डॉ. संतोष पटेल

अध्यक्ष,

भोजपुरी जन जागरण अभियान,नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका

रामयश अविकल जी अपना गजल विधा खातिर प्रसिद्ध बाड़ें, उनकर गजल में भी मूल चिंता गाँव के गरीब-दुखिया के ही जाहिर होला. त ई बात त निश्चित बा कि रामयश जी बाकी कउनो भी विधा में हाथ अजमइहें त उनकर विषय गाँव, गाँव के समाज अउर वोह समाज के सारा ताना बाना अपने पूरे कमीबेसी के साथ रही. रामयश जी के गजल से अगर आप सब परिचित हई पहिले से त आप जरूर पढ़ले होइब–

नेह छोह प्रेम सनेह भला कइसे पनपी
जेने देखीं सगरे ई नफरत बोआत बा
ऊंच-नीच बड़-छोट में आदमी बँटाइल
खंड-खंड समाज भइल जहर घोरात बा'

समाज के कड़वी सच्चाई यह गजल में देखात बा. रामयश जी के यह कहानी संग्रह में ई सच्चाई अउर विस्तार के साथे हम सबके बीच में आ रहल बा. समाज में रहला के बावजूद हम सबके नजर वो सब विडंबना पर जल्दी ना पड़ेला जहाँ कहानीकार के रूप में रामयश जी के नजर पहुँचल बा. काहे से हम सबके आदत हो गइल बा समाज के हर अच्छा-बुरा के स्वीकार कइला के, लेकिन एक कहानीकार के त फर्ज बा सवाल करब, रामयश जी अपना हर कहानी के माध्यम से समाज के एक-एक समस्या पर प्रश्न खड़ा कइले हउवै।

अंधविश्वास, पाखंड, दहेज जइसन सामाजिक-धार्मिक समस्या के गहराई से पड़ताल कइला के साथ-साथे रामयश जी के कहानी संग्रह एक समाधान भी प्रस्तुत करे के कोशिश करत बाटे, यह मामला में ई एक महत्त्वपूर्ण किताब हो जाले. खाली प्रश्न खड़ा करब ही रचनाकार के उद्देश्य ना हौ, रचनाकार अपना पात्रन के सहारे समाधान भी पाठकन के बीच रखत बा. रामयश जी के शब्द में कहीं त–

दीया उम्मीद के बुतल नइखे हार से उम्मीद छुटल नइखे।

रामयश जी के ढेर सारा बधाई. उम्मीद बा: कि उनकर ई प्रयास एक उदाहरण के रूप में स्थापित होई।

धन्यवाद

– देवेश

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक समरसता के भूख

भोजपुरी साहित्य जवना तेवर के साथ उपस्थित हो रहल बा ओकरा के दरकिनार कर के नइखे चलल जा सकता। समाज में जवन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आ न्यायसंगतता के बदलाव हो रहल बा, ओकर बानगी भोजपुरी कथा साहित्य में देखे के मिल रहल बा।जवन कि समाज में एगो नया आ सार्थक दृष्टि देता।

एही बीच भोजपुरी पत्रिका 'दस्तक' के संपादक आ रचनाकार रामयश 'अविकल' जी के रचना समाजिक समरसता खातिर मुखर रूप से रोज आवेला।आज जब अविकल जी अपना प्रथम कहानी संग्रह 'लकीर' के पांडुलिपि हमरा के पढ़ें के देनी,त हमार मन में जवन अनुराग आइल ओके कइसे रोक पवती।

रामयश अविकल जी के एह कहानी संग्रह में कुल पन्द्रह गो कहानी बा,जवन कि अपना नाम के अनुरूप भोजपुरी कथा साहित्य खातिर एगो लकीर खींच रहल बाड़ी स। 'सूझ-बूझ' से लेके 'भनक' तक हर कहानी में जवन जीवंतता, सजीवता आ मुखरता दिख रहल बा, ओकर कवनो जोर नइखे।

संग्रह के एगो सशक्त कहानी ' भनक' के पढ़त कमलेश्वर जी कहानी ' मांस का दरिया ' के याद आ गइल ,जवन कि युवा महिला जुगनू के कहानी ह,जे बीमारी के चलते वेश्यावृत्ति करे के मजबूर हो जात बाड़ी।जहां जुगनू के दुख, मजबूरी आ उनकर भावना के चित्रित कइल जाता।एह कहानी में केवल एगो महिला के व्यक्तिगत त्रासदी ही नइखे, बल्कि एह में समाज के ओह मूल्यन आ संरचना प भी सवाल उठता, जे जुगनू के ओह स्थिति में धकेलता। कंवरजीत जइसन दलाल जुगनू के शरीर से, भावना से खेलता।दर्द से कराहत जुगनू के तब तक नइखे छोड़त, जब तक ऊ आपन मानसिक विकृति के भूख नईखे मिटा लेत। जहां ब्याज के पैसा के

www.bhojpurisahityangan.com

कंवरजीत सेक्स से चुकता करता,ओइजे रामयश जी के रूपेश एगो अलग चरित्र पेश कर रहल बाड़े वेश्या राम्भा से।इनकर नैतिकता, मानवीय संवेदना एगो मिशाल बा,जवन कि आज के युवा पीढ़ी के दृष्टि देता। स्त्री सशक्तिकरण के बुलंदी पर ले जाये वाला सीख देत ' भनक ' के रूपेश दमदार चरित्र बाड़न।

पहिलकी कहानी ' सूझ-बूझ ' अंधविश्वास के परंपरा के तोड़त नायक धनेश के कबीर के रूप अहसास करावत बिया,जब धनेश कहत बाड़न- "ई सब ढकोसला हऽ बाबूजी। अंधविश्वास हऽ। आस्था के नाम पर ढेर अंधविश्वास ठीक ना हऽ। एह से नोकसान छोड़ फायदा ना होखे। जहवां तक सरग-नरक के बात बा, त सुख के सरग आ दुख के नरक कहल जाला। दुनिया में जे जइसन करी, ओइसन ओकरा एहिजे भोगे के परी। अगर केहू सब सुविधा से भरल-पूरल बा, आ देहि में कवनो रोग-दुख नइखे तऽ समझीं की ओकर सरग एही धरतीये पऽ बा।"

थर्ड जेंडर के लेके भी अविकल जी एह संग्रह में कलम चलवले बानी। हिंदी साहित्य से लेके भोजपुरी साहित्य तक में एह विमर्श पर अपेक्षाकृत कम काम भइल बा, लेकिन जवन भइल बा ऊ काबिले-तारीफ बा।

हिंदी उपन्यासकार महेंद्र भीष्म जी अपना उपन्यास 'मैं पायल' में पायल के पिता के पायल के प्रति आपन आक्रोश व्यक्त करत कहत बाड़न–"ये जुगनी।हम क्षत्रिय वंश में कलंक हुई है, साली हिजड़ा है...।" ओइजा पायल के पारिवारिक स्तर से ही जवन तिरष्कृत, उपेक्षित आ प्रताड़ित कइल जाता,ऊ भोजपुरी कथा साहित्य में हिजड़ा अनिता के परिवार अपनावता।ई एगो आशावादी दृष्टिकोण अविकल जी अपना कहानी ' हिजड़ा ' में दे रहल बानी।एह तरीका के साहित्य 15 अप्रैल 2014 के दिन न्यायमूर्ति के.एस.राधाकृष्णन आ न्यायमूर्ति ए.के सीकरी जी द्वारा दिहल निर्णय के निश्चित सामाजिक रूप से मजबूती प्रदान करी।

ओइजे शनिचरी शैक्षणिक योग्यता के बल पर समाज में सावित्रीबाई फुले नजर आवत बाड़ी।

कुल मिला के 'लकीर' के सभ कहानी अपने आप में दमगर बाड़ी स। कहानी पढ़त वेब सिरिज लेखा छोड़े के मन ना करी।बिंब, कथानक सामयिक आ गंभीर

www.bhojpurisahityangan.com

बा। भोजपुरी कथा साहित्य में ई संग्रह नवीन दृष्टि देत मील के पत्थर साबित होई, उम्मीद के साथे। अपने सभे सब कहानी के जरूर पढ़म, त रउआ अंदर यथार्थवाद जरूर पनपी। अतना सशक्त संग्रह खातिर रामयश 'अविकल' जी के हार्दिक आभार। भोजपुरी साहित्य के असहीं समृद्ध करत रहीं, पुनः अशेष बधाई आ शुभकामना।

– **डॉ. पुष्कर**

कवि एवं आलोचक सह राष्ट्रीय महासचिव
भोजपुरी जन जागरण अभियान

www.bhojpurisahityangan.com

सुझ-बूझ

तपेसर के रिटायर भइला के, अबहिं सालो-माथ ना लागल रहे, कि उनुकर घरनी के बेमारी से देहि थउसि गइल। खटिया धऽ लेली। बोली-चाली बंद हो गइल। सबके असरा टूटल जात रहे। तुलसी गंगाजल दिआए लागल। तपेसर के बड़ बेटा धनेश अमेरिका में इंजीनियर। अब उनुके राह ताकात रहे। छोटका बेटा काशी एगो सरकारी इसकूल में शिक्षक। इसकूल निअरे रहे, रोज घरे से जात-आवत रहन।

तपेसर काशी से सलाह कइलें– "इनका के बैतरनी पार उतरे खातिर काहे ना अब बाछी छूआ दिहल जाए...?"

काशी हँ में जबाब देलें। सोलह हजार में बाछी किनाइल छुआ के पंडित जी के दान दिआ गइल। बाछी छुअइला के एके दिन बाद ऊ, गुजरि गइली। दाह संस्कार बक्सर भइल। काम क्रिया नधा गइल। बाकिर धनेश अभी तक घरे ना अइलें।

क्रिया नधाये के बेरा तपेसर से पंडित जी कहनीं "जजमान बाछी छुआ के तू बड़ा पुण्य के काम कइल। तोहार घरनी अब बैतरनी पार उतर गइली। बाकिर जबले दसकर्म ना होई, तबतक उनुका आत्मा के शांति ना मिली, ना बैकुंठ जा पइहें। एकरा खातिर कुछ अउरी काम तोहरा करे के परि।"

"कवन काम बाबा...?"

तोहरा मेहरारु के व्यवहार बड़ा निम्मन रहे। सब केहू से बढ़िया से बोलत रही। आज उनुके दुआ के प्रभाव बा कि तोहर एगो लइका इंजीनियर आ एगो शिक्षक हो गइल। तोहरा के भगवान कुछुओं के कमी नइखन देले। आपन मेहरारु के नाम पऽ दिल खोल के दान करिह। बाभन के जवन-जवन दान करब, सब उनुका मिली।"

"सब तइयारी होत बा बाबा...।"

"शास्त्र के अनुसार दुधारु गाय के दान सबसे उत्तम हऽ। दान-दक्षिणा देवे से बैकुंठ के दरवाजा अपने-आप खुलि जाला।"

www.bhojpurisahityangan.com

"ठीक बा बाबा... सब होई।"

गाँवहि में चालिस हजार के गाय किन के तपेसर ओकरे मौआर घरे छोड़ देलें कि जहिया दान करे के होई ओहि दिन आई। बीतत समय के साथे धनेश घरे आ गइलें। माई से भेंट ना भइला के कचोट उनुका चेहरा पर झलकत रहे।

धनेश पूछलें– "कवन-कवन समान अभी किने के रहि गइल, बाबूजी...?

"सब समान किना गइल बा। आज एगो गाय चालिस हजार में किनाइल बिया, तोहरा माई के नाम पर दान करे खातिर।"

"केकरा के दान दिआइ बाबूजी...?"

"ई सब बाभन के दान होई।"

"बाभन के दान करे से का होई? एह से जादा नीक रहे कि गरीबन के दान होइत, तऽ दुआ मिलीत। गरीब आदमी के आत्मा तृप्त होइ त, माई के आत्मा के शांति मिलीत। दुधारु गाय से केहू गरीब के जीविका के साधन हो जाई। ओह भरल-पूरल आदमी के दान करें से का फायदा...?"

"शास्त्र के अनुसार बाभन के दान कइल उत्तम हऽ। जेकरा नाम से दान होई ओकरा सरग में जगहा मिल जाला। आवा-गमन से ऊ मुक्त हो जाला।"

"ई सब ढ़कोसला हऽ बाबूजी। अंधविश्वास हऽ। आस्था के नाम पर ढ़ेर अंधविश्वास ठीक ना हऽ। एह से नोकसान छोड़ फायदा ना होखे। जहवां तक सरग-नरक के बात बा, त सुख के सरग आ दुख के नरक कहल जाला। दुनिया में जे जइसन करी, ओइसन ओकरा एहिजे भोगे के परी। अगर केहू सब सुविधा से भरल-पूरल बा, आ देहि में कवनो रोग-दुख नइखे तऽ समझीं की ओकर सरग एही धरतीये पऽ बा।"

"इहां के परम्परा के बारे में तोहरा विशेष जानकारी नइखे। तू त शहर मे रहि के पढ़ाई कइल, नोकरी लाग गइल चल गइल अमेरिका, जेकर जतना साधन शक्ति बा, ओतने में सब केहू ई परम्परा के निभावे ला। पंडित जी खातिर ई सब जोगाड़ भइल बा, त उनुके दान दिआई। आगे से तोहरा लोग के जवन मन करे ऊ करिह लोग।"

"ठीक बा जइसन राउर इच्छा। राउर इच्छा के सम्मान कइल जाई। बाकिर ई गाँव में जतना गरीब लाचार बा हम सब केहू के माई के नाम पर धोती साड़ी आ कम्बल बॉटबि। काहे कि जाड़ा के दिन में गरीब आदमी के राहत हो जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

"इहो बढ़िया काम बा, करऽ हमहूँ अपना सकान भऽ सहयोग करबि।"

धनेश शहर से सब समान किन के ले अइलें। सब केहू के बाँटल गइल। गाँव में एगो नया मिशाल कायम भइल। सगरे चरचा होखे लागल कि बड़ नीक काम भइल तपेसर के घरे। आखिर विदेश मे रहत बा ओकर सोच अलग किसिम के रहबे नू करी।

धनेश के छुट्टी खतम भइल चल गइलें आपन नोकरी पऽ। दान-दक्षिणा से पंडित जी गद्-गद् रहन। अभी महिनों ना लागल रहे कि पंडिताईन के मिजाज खराब हो गइल। आरा मे केस ना सम्हरल, पटना ले जाए के परल। इलाज में जादा खरचा होखे से दान मे मिलल गाय बेचे के परल। गाँवहि के एगो बाबूसाहेब गइया के किन लेलें।

गाय जबतक दूध देत रहे, तबतक बाबूसाहेब खूब दाना-चोकर खिआवत रहन। जब बिसूक गइल तऽ पगहा खोलि के छोड़ देलें। बधार में थोर-ढ़ेर चरे, ना त दोसरा के दुआरे-दुआरे नाँद मे मुँह मारत चले। कुछ दिन बाद गइया बेमार हो गइल। बाबूसाहेब इलाज ना करवलें। एक रात शिव मंदिर के निअरे गइया मरि गइल। बाबूसाहेब देखलें त चमरटोली जाके सरजू से गाय मरला के खबर कइलें! "जाके उठा ले आवऽ, ओकर चाम-ताम छोडा लिहऽ।" कहि के चल अइलें।

सरजू महटिया के चल गइलें मजूरी करे। गते-गते दिन चढ़ि गइल, दुपहरिया हो गइल। एने गाय-फुल के दोबरी हो गइल। घाम में रहे से तनी-तनी बसाए लागल। बाबूसाहेब के बेचैनी बढ़े लागल। आपन लइका हरिशंकर के सरजू के घरे भेजलें त सरजू के मेहरारु बतवली– "उहां के घरे नइखीं काम करे गइल बानी।" हरिशंकर लवटलें त बाबूसाहेब पूछले– "का हो, कहां बा सरजुआ...?"

हरिशंकर कहलें– "ओकर मेहरारु कहत बिया कि काम करे गइल बाड़े।"

ई सुनि के बाबूसाहेब के बेचैनी अउरी बढ़ि गइल। बाबूसाहेब बड़बड़ाए लगलें– "बिहाने सावन के आखिरी सोमारी बा। गाँव में इहे एकलौता शिवजी के मंदिर बा। काल्हू कइसे जल चढ़ीं? बिहान होत-होत गाय के महक से नाक ना देल जाई। ससुरी के मुए के रहे तऽ दोसरा जगह मुईत।"

मंदिर के पुजारी बाबूसाहेब से पूछलें– का जी कवनो ना आइल हटावे खातिर?

बाबूसाहेब कहलन– "सरवन! चमरन के ढ़ेर मन बढ़ि गइल बा। दू गो चार गो पढ़ लिख के नोकरी का करे लगलन स कि ओहनी के जमीन पर गोड़ें नइखे धरात।

www.bhojpurisahityangan.com

सरवा, सरजुआ के हम अपने से जाके खबर कइनी तबो ना आइल। मन करऽता कि ओकरा के बान्ह के मारी...।"

हरिशंकर कहलें– "चमरन के ढ़ेर नखरा बढ़ि गइल बा। आजु सांझि के बेरा ओकरा से फरिआ लिआई।"

बाबूसाहेब दाँत पीसत कहलन– "हँऽ हो, सरवन के मन आकाश पर चढ़ि गइल बा। ओहनी के औकात बतावहीं के परी।"

पुजारी जी कहलन– "तनी नरमहिं से बाबूसाहेब! कसहूं काम निकाले के बा। अब पहिलेवाला बात नइखे।"

बाबूसाहेब आ हरिशंकर सांझ के सरजू के दुआर पर गइलें। सरजू के खटिया पर बइठल देखि के उनुकर अउरी बी. पी. बढ़ि गइल।

आँख तरेर के कहलें– का रे सरजुआ! तोरा के कुछ कहले रहीं...। तोरा दुआर पर हम अपने आके कहनी तबो ना अइले? अतना हिम्मत हो गइल तोरा कि हमार बात के उठा देले। का मन में बा तोरा...? अबहीं चल दू-चार गो आदमी लेके जल्दी ओहिजा से उठा ले आव? काल्हे सोमारी बा। गाँव भर के लोग जल ढ़ारे ला, कइसे जल ढ़ारी लोग...?

सरजू खटिया पर से उठ के भिरी आके कहलें– "बाबूसाहेब तनी ठीक से बोलीं... अरे... तरे... मत करीं...। आ कान खोल के सुन लीं हमनी के डांगर उठावल छोड़ देनी जा। हमनी के किरिया खा लेले बानी जा कि ई काम अब ना करबि जा।"

सरजू के बात सुन के बाबूसाहेब के भक मार देलस। नरम हो गइलें। आपन खींस दबावत कहलन– "काहे सरजू अइसे काहे कहऽ ताड़? काहे खीसिआइल बाड़? चलऽ ना त रात में कुकुर सिआर दुरगति कर दिहे सऽ गइया के। बिहान भइला के बाद नाक ना देल जाई।"

"ए बाबूसाहेब एक बेर कहनी तऽ ना सुनाइल"- सरजू कहलें। आगे बात बढ़ावत सरजू कहलें– ई जमाना ढ़ेर बाउर बा। टी. बी. में देखनी हा कि ना, गुजरात के ऊना में गाय के चाम छोड़ावल कतना मंहगा परल लोग के। बिना मोह-माया के कसाई लेखा मारत रहन स गउरक्षक। कहीं त ऊ विडियों मोबाइल में बा देखा दीं...? हमहूं चाम छोडावे जाइब आ आके गउरक्षक मारे लगिहन स त का करबि?"

"कवना के दिन बा मारे के"– बाबूसाहेब कहलन।

www.bhojpurisahityangan.com

सरजू कहलें– "ऊ केहू के आंवक मे नइखन सऽ। ओहनी के ऊपरे से सपोट बा। ओहि गउरक्षकन से कहीं गउमाता के दाह संस्कार कर सऽ। राउर काम हो जाई, आ ओहनी के गउमाता के सेवा हो जाई।"

बाबू साहेब कहलन– "लागत बा कि तोहनी के कवनो भड़का देले बा?"

सरजू कहलन– "हमनी के केहू नइखे भड़कइले।"

बाबू साहेब कहलन– "चल-जवन मजूरी कहब तवन देहबि।"

सरजू कहलें– "कवनो मजूरी ना चाहीं, राउर गाय हऽ दूध रउआ खइनी, मर गइल त, हम फेकीं...?"

बाबू साहेब कहलन– "मरल गउमाता के फेंकल पुन्य के काम हऽ। माई आ गाई में ढ़ेर फरक ना हऽ।"

सरजू कहलें– "ई पून्य के काम अपने काहे नइखी करत...? माई आ गाई में कवनो फरक नइखे तऽ उनुका के बढ़िया से दाह संस्कार करीं। बक्सर-बनारस ले जाईं। हमहू थोरे दूर कान्हा लागि जाइब।"

ई बात सुन के बाबूसाहेब के खींस ना अड़ाइल सरजू पर हाथ छोड़ि देलें। हरिशंकर लाठी तान लेलें। सरजू अपना के पीछे हट के बचा लेलें। संजोग अइसन रहे कि तपेसर ओइजे रहन। तपेसर डपट के बोललें– "ई का करत बानी बाबू साहेब...?" तबले ढ़ेर लोग जुटि गइल।"

बाबूसाहेब तपेसर से कहलन– "देखत बाड़ नू ई कइसे बोलऽता...?"

तपेसर कहलन– "हँ, देखत बानी कि रउआ तबड़ाक चलावत बानी आ राउर लइका लाठी तनले बा। आज लाग जाइत तऽ निमने बाजा बाजित। का समझ के तबड़ाक चला देनी हा? जब ई कहऽता कि हम ई काम ना करबि, तबो रउआ रिगिर कइले बानी। बरिआरी का करा लेहबि...? अब ई संभव नइखे। इहो जान लीं कि पूरा मोहल्ला के आदमी सामूहिक किरिया खइले बाड़े कि ई काम ना करबि जा।"

बाबूसाहेब कहलन– "जल में रहि के मगर से बैर...? काल्हु कवना पड़े निकलब लोग...? ढ़ेर मंहगा परि जाई।"

तपेसर कहलें– "जाईं... जाईं... पहिले गउमाता से फरिआईं।"

बाबूसाहेब कहलन– "ठीक बा काल्हुये बुझा जाई। कह के गोड़ पटकत चल गइलें। ओहि रात में गाय के बगल में गडहा कोड़ के ओहि मे तोप दिआइल।

www.bhojpurisahityangan.com

बिहान भइला सवर्ण लोग बैठक करिके चमरटोली के लोग के सामाजिक बहिष्कार कइलन। बनिया से समान देवे से माना कर दिआइल। दावा-दारु मिलल बंद हो गइल। गाँव में आइल-गइल मना हो गइल। गाँव के बाहर निकले पर रोक लागि गइल।

एह सामाजिक बहिष्कार से चमरटोली के लोग तिलमिला गइलें। मारे-काटे खातिर उतारु हो गइल लोग।

सरजू कहलें– "बिना कुर्बानी के आजादी ना मिले, अब समय आ गइल बा कुर्बानी देवे के।"

एह बात पर ढ़ेर लोग सहमत रहे। बाकिर तपेसर सहमत ना रहन।

तपेसर कहलन– "खून-खराबा कवनो समस्या के निदान ना हऽ। सब लोग धीरज धर लोग। हम प्रशासन से बात करत बानी। तपेसर जिलाधिकारी कार्यालय में बड़ा बाबू के पद से रिटायर रहन। उनुकर मेहनत आ लगन से जिलाधिकारी खुश रहत रहन। भोरहरिये अन्हारे में तपेसर गाँव से निकल के जिला मुख्यालय पहुँच के जिलाधिकारी से जा के भेंट कइलें, आ सब बात बतवलें। जिलाधिकारी महौल ना बिगड़ जाए एह चलते एस. डी. ओ. के भेजलें। बारह बजत-बजत एस. डी. ओ. आ डी. एस. पी के साथे थाना पहुँचल। दूनों पक्ष के बात सुनला के बाद बहुत समझवला के बाद आपस में समझौता करावे में सफल हो गइलें। फिर से गाँव में लोग आपसी मेल-मिलाप से रहे लगलें। तपेसर के सुझ-बूझ के चलते खून-खराबा होत-होत टलि गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

नेवर

ई बात ह तीस बरिस पहिले के। ओह घरी गाँव में जातिवाद ऊँच-नीच भेदभाव, शोषण, दमन चरम प। वर्णव्यवस्था में जे सबसे नीचला पावदान पर होखे चाहे, वर्णव्यवस्था के बाहर दलित समुदाय के लोग के कवनो मोल ना। खासकर दलित जाति के लोग के जिनिगी नरक से तनिको कम ना। शोषण, दमन अतना कि जीअल दुभर। ई लोग के कीड़ा-मकोड़ों से मोल कम। ई लोग के आदमी में गिनती एकदमे ना। ई नफरती स्वभाव सवर्ण लोग में सइयों बरिस से अधिके टाईम से ढ़ोआत आवऽता। ई नफरती स्वभाव जादा दलिते से काहे...? आजतक ई मजरा समझ से परे बा।

अइसने स्वभाव के गाँव ज्ञानी जी के टोला। कहे खातिर ई टोला, बाकिर आठ सौ से अधिके घर के गाँव। थोर-ढ़ेर सब बिरादरी के लोग ई गाँव मे। बाकिर सबसे जादे संख्या ब्राह्मण आ राजपूत के। ई गाँव में दबदबा इहे लोग के। शिक्षा-दीक्षा के ममिला में इहे लोग आगे। बाकिर जनसंख्या के अनुपात में ढेर कम। अउरी सब बिरादरी में शिक्षा के घोर अभाव। ई सब बिरादरी में ज्ञान के रोशनी एकदमे ना पहुँचल। ई लोग खातिर ई गाँव ज्ञानी जी के ना, अज्ञानी जी के टोला। गरीबी अधिके। गाँव में मजदूरी के सिवाय जीविका के कवनो साधन ना। कुछ लोग दिल्ली गुजरात कमाये गइलें, बाकिर टिकलें कम। राजपूत ब्राह्मण छोड़ के केहू लगे एको कट्ठा जमीन ना। सभे भूमिहीन। रोजी-रोजगार खातिर खेती गिरहती पर निर्भर। दबउअल अतना कि मजूरी मांगे के हक ना। जवन मिल जाय ओहि पर संतोष।

रामलगन कलकता के चटकल के मजदूर। चटकल कारखाना बंद भइल। राम लगन गाँव ध लेलें। राम लगन बंगाल के लोग के शिक्षा के प्रति आकर्षण देख के बहुते प्रभावित। उनुको आपन लइका के पढ़ावे के लालसा जागल। उनुकर लइका दीपक के उमिर भ गइल रहे इसकूल जाय के। एक दिन दीपक के लेके गाँव के इसकूल

www.bhojpurisahityangan.com

में गइलें। इसकूल के हेडमास्टर चौबे जी गाँवहीं के। राम लगन दीपक के नाम लिखे खातिर निहोरा कइलें। चौबे जी मने-मने चिहइलें कि अब चमरो का पढ़िहें स...? ऊ नाम लिखे के चाहत ना रहन। ऊ टारत कहले– "जाके मैदान में बइठ त बाद में बोलाइब तोहरा के।" दूई घंटा से अधिके देरी बइठला के बाद रामलगन फेर उनुका लगे जाके निहोरा कइलें। चौबे जी कहनीं– "जा काल्हु अइह, आज काम ढ़ेर बा त काल्हे लिख देबा" राम लगन चल गइलें। बिहान भइला राम लगन दीपक के लेके दुबारा गइलें। फेर चौबे जी कहनीं– "आज भ काम रह गइल बा। जा बिहान अइह।"

रामलगन सीधवा लवट गइलें। बिहान भइला फेर जाके निहोरा कइलें– "दउराई मत बाबा! आज लिख लीं नमवा लइका के।"

चौबे जी कहनी– "दउरावत नइखी हो। काम आ गइल रहे ढ़ेर। हेड़ ऑफिस में रिर्पोट भेजे के रहे। बइठ आज लिखा जाई।"

चौबे जी के बुझा गइल, कि ई मानी ना, बिना नाम लिखइलें। ढ़ेर देरी अनमने मन से दीपक के नाम लिखनी ऊहां के। ज्ञानी जी के टोला के इसकूल मे आज पहिला दलित लइका के नाम लिखाइल। ब्राह्मण और राजपूत के छोड़ के दोसर केहू के लइका ना पढ़त रहन। दीपक के नाम लिखाते गाँव में तेजी से खबर फैल गइल। जइसे एकदमे अजूबा हो गइल। सवर्ण समाज के लोग आपस में बतकही करे लागल कि अब चमरो पढ़िहें स... त जूतवा कवन सीहि...? डांगर कवन ढ़ोई...? ई निमन नइखे होत। जाके गुरु जी से मिले के परी। बिहान भइला कुछ लोग इसकूल जाके चौबे गुरुजी से पूछलें– "ई का कर तानी गुरु जी...?"

गुरु जी पूछनी– "का भइल...?"

ऊ लोग पूछलें– "हमनी के लइका अब चमरा संगे बइठ के पढ़िहें स...?"

गुरु जी कहनी– "हम का करी...? हमरा त मजबूरी बा। केहू लइका लेके आई ओकर नाम लिखे के परी। हम मना ना कर सकीं। हम एगो सरकारी मुलाजिम बानी। सरकार के आदेश पालन करे के मजबूरी बा। अच्छा एह में घबराय के का बा? ई कतना दिन टिकीं...? महीना भीतरे भाग जाई। ई का पढ़िहें सऽ? एकरा के सबसे पीछे बइठाइबि।"

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ लोग कहलें– "अइसे ना होई गुरु जी। ओकरा के रोज कवनो बहाना बना के पिटाई करीं, जे ऊ हमेशा खातिर आइल छोड़ देवें।"

गुरु जी कहनी– "ठीक बा...। हमहूं त चाहते बानी कि ई भाग जाय। आ नाहिये भागी त का करब...? ओकरा पर ध्यान ना दिआई। बाकिर क्लास टीचर त कुंअर किशोर जी बानी। सब केहू के मालूमे बा कि ऊहां के कवन विचार के आदमी हईं। सभे इहो जानऽता कि ऊहां के नास्तिक हईं। ना धर्म माने के बा ना देवी-देवता, ना भगवान के मानिला ऊहां के। मंदिर के झांकियों ना मारिलें। जाति-पाति, भेद-भाव ऊ ना करस। उनुका नजर में सब आदमी बरोबर बा। दुख के बात बा कि ऊहां के एके लइका आ पाँच बरिस के होके अइसन बेमारी में चपेटाइल कि ऊ उबर ना पावल लइका। ऊहां के बहुते रोपया खर्च कइनी बाकिर ऊ लइका ना बांचल। उहां के घरे उजर गइल। फेर कवनो बाल-बच्चा ना भइल। घर मे अकेले दूनो बेकत।"

ऊ लोग कहलें– "छोड़ीं उनुका से के बोली...? जे धरमे नइखे मानत, ना भगवान ना पूजा पाठ। एहि से त बेटा चल गइल, तबो आँख नइखे खुलत। पूजा-पाठ प्रार्थना अराधना करे से भगवान के कृपा बरसे ला। भगवान के कृपा से सबकुछ होखे के बा। बिना भगवान के दुनिया एक दिन ना टिकीं। जे सारा ब्राह्मण्ड के चलावे उनके के अनादर करी केहू त ऊ कबो निमन से रही? ऊ हरमेश परेशानी मे रही।"

गाँव के लोग अपना अपना लइका के सीखा देलें। चमरा से फरके रहे के। इहो बतइलें कि छुआ गइला प गंगाजल से पवित्र करे के परी। पवित्र आ अपवित्र का होला लइकन के का मालूम...? बाकिर दीपक के जाति सब लइका जान गइलें। दीपक के देखते चमरा-चमरा कहे लगलें, सब लइका। चमरा से फरके रहि ह सऽ। कवनो छुअइह स मत। ना त अपवित्र हो जइब स। लइकन आपसे में एक दोसरा के हिदायत करे लगलें। नफरत के कारण दीपक के एको संघतिया ना बनलें इसकूल मे। अलग-थलग दीपक रहे के मजबूर। अपमान के घोंट पी के रह जाय दीपक। दुई दिन इसकूल ना गइलें दीपक। हेडमास्टर चौबे जी आ लइकन खुश कि अब चमरा भाग गइल। अब पढ़े ना आई। दीपक के बाबूजी पूछलें– "इसकूल काहे नइख जात...? कवनो बात बा का?" दीपक रोवे लगलें आ इसकूल के सब घटना बतवलें। बाबूजी उनुका के समझावत कहलें– "लइकने नू कहत बाड़ें स, कहे द। लइकन के बात लेके मत चल। समाज में जातिवाद पहिले से रहल बा आगे भी रही। ई खतम ना होंई। केहू के

www.bhojpurisahityangan.com

चमरा कहे से आदमी पढ़ी-लिखी ना...? हमनी के चंवरवंशी हईं जा। चंवर से लोग चमार कहे लागल। हमनी के पूर्वज देश के शासक रहीं। समय सबके बदले ला। जीवन मे उतार-चढ़ाव निश्चित बा। बाबा साहब डा. भीम राव आंबेडकर जी के कहनाम– "शिक्षा शेरनी के दूध ह, जे पीहिं ऊहे दहाड़ी।" जहां तक अपमान के बात बा, डॉ. आंबेडकर के जतना अपमान भइल ओतना नइखे होत। उनुको इसकूल मे पीछे ना बहरी बइठे के परल रहे। इसकूल में उनुको पानी पिये के अधिकार ना, कारण कि घड़ा छुआए के डर से फरके से चपरासी पानी पिआवे। उनुको महरा महरा आ अछूत कह के अपमानित कइल जात रहे। डॉ. आंबेडकर ओह नफरती लइकन के परवाह ना कइनीं। खूब मन लगा के पढ़नीं। अतना पढ़नीं कि देश के संविधान लिख देनीं। इहे संविधान से देश संचालित होऽता। तोहरा आपन नाम रौशन करे के बा। कवनो निमन काम में बाधा आई। जिनिगी के नामे संघर्ष ह। जे हर तरह के बाधा पार करत गइल ऊहे कामयाब भइल। ई सब एक कान से सुन, दोसर कान से निकाल लऽ। आपन पढ़ाई पर ध्यान द। काल्हु से इसकूल रोज जा, नागा मत कर।"

दीपक बिहान भइला से रोज इसकूल जाय लगलें। इसकूल मे गुरु जी के पढ़ावल ध्यान से सुन के लिख लेस। खूब मेहनत करे लगलें पढ़ाई में। सलाना इंतिहान मे फर्स्ट अइले। लइकन मे अउरी खलबली मच गइल कि ई चमरा फर्स्ट कइसे हो गइल? हेडमास्टर चौबे जी चिहइनी कि ई फर्स्ट कइसे हो गइल? ओकर कापी अपने से दोबारा जाँच कइलें। कुंअर किशोर के ध्यान अब दीपक पर गइल। सोचें लगले कि ई लइका बहुत आगे जाई। अतना अपमान सहला के बादो फर्स्ट आइल। एकर हौसला ना टूटल। ई मजबूत इरादा के लइका बुझाऽता। थोरहू ध्यान दिआई त जरुर कुछ बन के देखाई। अइसे भी दीपक के चेहरा कुंअर किशोर के लइका के चेहरा से कुछ मिलत जुलत रहे। कुंअर किशोर के मन मे आकर्षण आ सहानुभूति दीपक के प्रति बढ़ल। अब आपन लइका के अक्स दीपक मे देखे लगलें। मने-मन ठान लेले ई लइका के सहयोग करे खातिर। कहाव ह कि दुनिया मे एगो राह बंद हो जाला त दूसर राह खुल जाला।

दीपक से कुंअर किशोर कहनीं– "आज सांझ के हमरा घरे अपना बाबूजी के लेके के अइहें।"

www.bhojpurisahityangan.com

सांझ के दीपक अपना बाबूजी के संगे उनुका घरे जाके भेट कइलें। कुंअर किशोर जी रामलगन के समझवनी आ कहनीं– "एकर पढ़ाई मत छोड़इह। पूरा गाँवे लागल बा कि ई पढ़ाई छोड़ देवें। जवन खरचा लागी हम देब।"

ई बात सुन के रामलगन भावुक हो गइले। आँख से लोर बहे लागल।

इहो कहनीं– "जा बिहान से सांझ के बेरा एक घंटा हम पढ़ा देब एकरा के।"

रामलगन के हौसला बढ़ल आ दीपक के मन मे अउरी उत्साह। दीपक रोज पढ़े जाय लागल सांझ के उनुका घरे। आ घरहूँ आके खूब मन लगा के पढ़े।

एक दिन रामलगन, दीपक के कोटा से किरासन तेल लेवे खातिर भेजलें। कोटा के डीलर जगत नारायण, बाबू साहेब। जबान के बहुते फूहर। किरासन तेल बांटे के बेरा खूब झांव झांव करिहें। निमन बोली कमे निकली उनुका मुंह से। केहू के अरे तरे करे में आहस ना। एगो त आधा तेल ओनिये बेच दिहें आ रोना रोइहें कि अबकी कमे तेल मिलल। आगे महीना पूरा तेल मिले के चाहिं। बाकिर ऊ आगे महीना कबो ना आवे। उनुकर कुकाठ बोली के कारण जादे लोग के जवन तेल मिले चुपचाप लेके चल जालें। केहू कुछुओ ना बोले कि, के इनिका से मुंह खराब करे जाई? दीपक के तेल कम मिलल। दीपक निहोरा करे लगलें– "कम से कम एक लीटर अउरी दे दीं। अतना से काम ना चली। हमार इंतिहान निअरे बा। कइसे पढ़ाई होई...?"

जगत नारायण कहलें– तोरा पढ़ाई के ठीका लेले बानीं...? पढ़ के जज का बनबे...? जूतवा के सीहि...? भइल बाड़े पढ़ांकू? हई पगलाइल देख चमरा के। का जाने पढ़ के का करी, का बनी...? भइल बा पढ़निहार। "बाप-दादा ना खइलस पान, दांत निपोर के गइलस जान।" बाप दादा जिनिगी भर जूता सिअलस। ई चलल बा पढ़ांकू बने...। जवन मिलल बा ऊ ढ़ेर बा। अइसन बात बोल के जगत नारायण ओहरा देले दीपक के। दीपक के पढ़ाई कइल उनुका एकदमे ना सोहाय। दीपक के बड़ा खराब लागल। डबडबा गइल, हतास हो गइल दीपक।

सांझ के गुरु कुंअर किशोर से सब बात बतवले दीपक। गुरु जी समझवनी आ कहनीं– "अब तोहरा कुछुओ नइखे बनेके, अब जज बने के संकल्प ल कि हम जज बनके रहब। जज बन के देखा द। आ एह लोग के घमंड नेवर करे के ठान ल। हम सब राह बताइबि कि कइसे जज बनल जाला।"

www.bhojpurisahityangan.com

दीपक के हौसला अउरी बढ़ल। मैट्रिक के इंतिहान में टॉप भइलें। अब दीपक के इरादा अउरी मजबूत भइल। बाकिर ज्ञानी जी के टोला के एको लइका फर्स्ट ना भइले। जादे फेल आ कुछुए पास कइले। दीपक के खबर सुन के गाँव के लोग में बेचैनी समा गइल।

कहे लगलें लोग– "ई चमरा टॉप कइसे भइल। एकरा त आगे पीछे केहू आदमी बा ना।"

एक आदमी कहलें– "आरे तु लोग जानत नइख...? कुंअर किशोर नू एकरा के मदद आ पढ़ावे लें।"

दोसर आदमी कहलस– "अइसने आदमी नू छोट जातिअन के मन बढ़ा देता।"

तीसर आदमी कहलस– "इहो चमरन के मन बढ़ावते नू बाड़ें...? मनबढ़ू हो जइहे स त केहू के सलामो ना करिहें स। ना केहू के मलिकार, गउंवा कहीहे स। उल्टे, मुंह लडावे लगिहें स। अब चमरन के सबक सीखावल जरुरी बा।"

ओही रात के दीपक के खपरैल घर के लाठी डंडा से पीट के सब खपड़ा थूर दिआइल। संयोग से ओह रात के घरे ना रहे दीपक। रामलगन दूनो बेकत कसहूं भाग के जान बचइलें। मोहल्ला के लोग के धमकावल गइल कि कह दिह स, "रामलगना से कि ढ़ेर पढ़ा लेलस लइका।"

ई लोग के उमेद ना रहे कि चमार होके टॉप कर जाई। जब टॉप कर गइल त ई लोग के जातीय अहंकार उफान मारे लागल। अपमान समझे लागल लोग कि हमनी के लइका आधा फेल हो गइले, फर्स्ट त एको ना।

दलित के थाना मे जाय के हिम्मत कहां? जे जाय के साहस कईलें ओकरा के उल्टे फंसा दिआइल। रामलगन इहे समझ के थाना ना गइले कि ऊहां गइला से कुछ होई ना। राम लगन के मन में डर समा गइल। ऊ डर से टूट गइलें। सोचे लगले कि अब दीपक के पढ़ा के खतरा मोल लेल ठीक नइखे। एके लइका बा दुश्मन के नजरी पर चढ़ गइल। कब कवन का कर दी, कवनो ठेकान नइखे। ऊ दीपक के पढ़ाई छोड़ देवे के कहलें। दीपक के मन निराश। सोचे लगलें कि हमार सपना के का होई? सपना सपने बन के रह जाई? गुरु जी से कइल संकल्प के का होई...? इहो मन मे बात आइल कि हम केहू के कुछ बिगाड़त नइखी, तबो लोग हमरा संगे अइसे काहे करऽता? हम

www.bhojpurisahityangan.com

त खाली पढ़ते नू बानी...? दोसरा के कवनो नुकसान त होत नइखे। पढ़ल कवनो अपराध त ना होला। हमरा पढ़े से लोग के जलन काहे...? बहुत सोचत-सोचत समझ में आइल कि चमार भइल त ठीक बा, बाकिर चमार होके पढ़ल ठीक नइखे। सांमती आ मनुवादी सोच के आदमी के चमारन के अनपढ़, गंवार, भूखा, नंगा, फटेहाल, आ झोपड़ी में रहल पसन परेला। पढ़ लिख के सूट-बूट आ बढ़िया मकान मे रहल एकदमे पसन ना।

गुरुजी से दीपक, मिल के सब बात बतवलें। ऊहां के कहनीं– "तोहरा बाबूजी से हम बतिया लेब। तोहरा हिम्मत नइखे हारे के। तोहरा से जादे डॉ. आंबेडकर के संगे दुर्व्यवहार भइल। जतना उनुका अपमान भइल, तोहरा संगे कमे होऽ ता। डॉ. आंबेडकर भी अपमान के कारण पढ़ाई छोड़ दिहती तब। आज तोहरा लोग के हाल का होइत? अनुमान से परे बा। तोहरा इसकूल का इसकूल के गेट के पास से गुजरे के मोका ना मिलित। ई उनुके देन बा कि तोहरा पढ़े के मिलल। तोहरा लोग के इसकूल के ओरे झांके के हक ना रहे।"

दीपक पूछले एकर कारण गुरु जी?

गुरु जी कहनी– "एकर मूल कारण धर्म, धार्मिक ग्रंथ आ जातिवाद। जब तक धार्मिक ग्रंथ आ धर्म रही, तब तक धर्माधंता आ जातिवाद रही। भेदभाव उत्पीडन होई। दलित महिला के बलात्कार, हत्या दमन होई। दूसर कारण सइयों जाति में विभाजन, बिखराव, हरेक जाति के मजबूत घेरा। परिणामस्वरूप एकता कबो न होई। ना एकता होई ना दमन, शोषण रुकी। जातीय उत्पीड़न के कारण डॉ. आंबेडकर हिन्दू धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म अपना लेनी। अब तोहरा से इहे कहे के बा कि तू आपन पढ़ाई मत छोड़। जाके शहर के कॉलेज मे नाम लिखा के जम के पढ़। आपन आ अपना समाज के नाम रोशन कर। कॉलेज से छात्रवृति मिलि आ बाकि हम मदद करब।"

दीपक गुरु जी के गोड़ छू के आशीष लेले लवट गइलें। बिहान भइला शहर जाके कॉलेज में नाम लिखइलें। होस्टल में रह के पढ़े लगलें। समय पर आई. ए., बी. ए., कइले आ एल. एल. बी. के पढ़ाई में लाग गइले। एल. एल. बी. के इंतिहान में अव्वल भइलें। कुछुवे महीना बाद न्यायिक सेवा खातिर बहाली निकलल। फारम भरलें। समय पर इंतिहान भइल। बढ़िया नंबर से पास भइले। मजिस्ट्रेट के पद पर

www.bhojpurisahityangan.com

सलेक्सन भइल। योगदान कइला के कुछ महीना बाद छुट्टी अइलें। कुंअर किशोर गुरु जी के घर गइलें। पाव छू के आशिष लेलें। दीपक के सफलता देख के गुरु जी के आँख से लोर बहे लागल। जइसे उनुकर अपने लइका मजिस्ट्रेट बनल होखे। दीपक के आपन लइका लेखा मानत रहीं गुरु जी। गुरु जी सोचे लगनी की अगर सबके समान अवसर मिले त केहू भी आगे बढ़ सकेला। मेरीट, बपौती ना ह केहू के। योग्य मार्गदर्शक आ जरुरी संसाधन रही त दलितों जाति के लइका बहुत आगे जा सकिहें। बाकि समाज में भेद-भाव के जड़ अतना गहीर बा कि लोग ई बिरादरी के राह में रोडा बन जाता लोग।

दीपक के मजिस्ट्रेट बनला के खबर गाँव मे चर्चा के विषय बन गइल। ढ़ेर लोग जर भून गइलें। चमरा कइसे जज बन गइल। इ सब कुंअर किशोर के मदद करे से भइल। लागऽता कि कुंअर किशोर चमरन के माथा पर चढ़ा दिहन।

दीपक अपना माई-बाबूजी के संगे लेके शहर चल गइलन।

अब गाँव मे दलित लोग के संगे उत्पीड़न आउरी बढ़ गइल। दलित समाज के लइका अब कवनो पढ़ ना पावे। एही जुगत मे सवर्ण समाज के लोग माथा लगलें खपावे। गाँव मे मजदूरी मनमना दिआय से लोग के पेटे ना भरे त लइका का केहू पढ़ाई। भूख के आग अतना कि पेट के सिवाए दोसर कवनो बात सोचे के सावंग कहां...? गते गते लोग में आक्रोश बढ़े लागल। सब मजदूर मिल के मजदूरी बढ़ावे के मांग करे लगलें। मजदूरी बढ़ावे खातिर गाँव के सामंत एकदमे तइयार ना। ई मांग ओह लोग के जइसे अहंकार पर बडहन चोट क देलस। बिलबिला उठल लोग। कहे लगलें लोग– "अब चमरा सिर उठावे लगले सा।" पहिले जवन मजदूरी दिआए, ऊ चुपचाप लेत रहन सा। अब इ सब के मुंह खुले लागल। एहनिन के अब सिर कुचलल जरुरी हो गइल। ना त आगे चल के माथा पर चढ़े लगिहें सा।

एहि खींस मे प्लान बना के एक रात सामंत लोग चमरटोली में ढ़ेर लोग के घर में आग लगा देलें। कुछ आदमी जर के मर गइलें, संगे मवेशिओ जर गइली सा। इ खबर आग लेखा सगरे फैल गइल। अखबारन में हेड लाइन बनल। नेता मंत्री आ डी. एम., एस. पी. गाँव के दौरा कइलें। गाँव में पुलिस कैम्प लागल। थाना में अनुसूचित जाति/जन जाति अत्याचार निवारण कानून के तहत केस भइल। डेढ़ दर्जन से अधिक लोग के नाम परल। कुछ लोग धरइले आ कुछ लोग सरेंडर कइलें। एही लोग के संपति

www.bhojpurisahityangan.com

जप्त कके पीडित लोग के मुआबजा दिआइल। इ घटना के मुख अपराधी जगत नारायण के तरवा हिल गइल। हरेक तारीख के कोर्ट मे इ सब जना के जज के सोझा पेशी होखे।

एने दीपक के काम से, ऊपर के सब जज खुश। समय पर प्रोमोशन भइल। बदली के बाद अपने जिला मे संयोग से उहें कोर्ट में योगदान कइले, जवन कोर्ट में इ लोग के केस रहे। तारीख पर सब जना कोर्ट के कटघरा में खाड़ भइले आ दीपक के देखते मुड़ी गड़ा गइल। बाकिर जगत नारायण के नजर दीपक पर परते जइसे उनुका देहि पर दस घइला पानी उझुला गइल होखे। लाज से उनुकर मुड़ी गडाइल त उठल ना। केस कुछ अउरी बरिस चलल। दीपक के कलम से ऊ लोग के बीस बरिस खातिर सजाय भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

उल्लंघन

बात बीस बरिस पहिले के हऽ। ओह समय आ अभी के समय में अतना बदलाव भइल बा कि पुरान-नया के कवनो मेल नइखे। बस एगो तिलके-दहेज के बेमारी आजो ओइसने बा, जइसन पहिले रहे। तनी सा रुप-रंग बदल गइल बा। ई बेमारी खतम होखे के कवनो उम्मेदो नइखे। सब केहू के बेटी के बिआह के बेरा बुझाला कि तिलक, दहेज के प्रथा ठींक नइखे। ई खतम होखे के चाहीं। बेटा के बिआह के बेरा ई प्रथा खूब नीक लागेला अउरी बढ़ चढ़ के माँग होखे लागेला। बलुक प्रदर्शन फिजूलखरची आ चमक-दमक अउर-बढ़त जाता।

लइका खातिर बियाह में तीन गो चीज के मांग होत रहे। साइकिल, घड़ी आ रेडियो। साइकिलो में रेले, हरकुलिस, आ एटलस। घड़ी में एच. एम. टी., सोना रीको आ सीको। रेडियो में फिलिप्स, मरफी आ बुश। बेटिहा पहिलहीं से ई तीनों चीज खातिर मन बना के राखत रहें कि ई देबहीं के परी ना त लड़िका रुस जाई।

जीउत के पहिलवंठे बेटा रहे। ओकर नाँव सूरज धइले रहन। जइसन नाम ओइसने काम। फुटबॉल के अतना बढ़िया खेलाड़ी कि जिला में ओकरा नाम के तूती बोलत रहे। मैदान में गेना धऽ लेवे त हाहाकार मचि जाय। लइका सेआन सभे ओकरा के चिन्हत रहे। पढ़ाइयो में अपना क्लास में अउवले रहत रहे।

सूरज पऽ से एक पीठिये दू गो बेटी रही सऽ जीउत के। बड़की बेटी के बिआह तीन बरिस पहिलहीं हो चुकल रहे। ओह बेटी के बिआह के बेरा-तूलतलामत ना करे के परल। एगो दूर-दराज के हितई में सुनर-सुभेख गुने बात बन गइल। बाकिर छोटकी बेटी के बेरी बर खोजत-खोजत उनुकर पनही टूट गइल। कतहीं बर मिले त घर ना, आ घर मिले ते बर ना..। जब दूनो मिल जाय त तिलक के भारी डिमान्ड सुन हिआव ना चोपत रहे। जीउत, एक दर्जन से अधिके लइका देखलें, बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

सटाव कतहीं ना भइल। बात बनत-बनत बिगड़ जाय। करवट बदलत बिहान होत रहे। रात के नींद, दिन के चैन उनुकर दूनों हेरा गइल रहे। कहाव हऽ कि नामो के असर परेला। जीउत एह बेटी के नाम आसतुरनी धइले रहन, काहे कि दूनो बेकत के आसरा रहे कि अबकी बेटा होई आ हो गइल बेटी। आस टूट गइल। एही चलते एकर नाम आसतुरनी पर गइल। ईहो कहल जाला कि दुनिया में मोटा-मोटी सभे आपन जोड़ा लेके आइल बा। देर होला अन्हेर ना होखे। जेकर प्रारब्ध जहवाँ ले जाई, ऊ ओहिजे जाई।

जीउत के साढ़ू बटेसर एगो लइका बतवलें, आ कहलें– जाके देख लीं। पसन पर जाई त सबकुछ हमरा पर छोड़ देबि। जीउत के एह बात से कवनो जादा खुशी ना भइल। ढ़ेर लोग एहि तरी कहलें बाकिर भइल कुछुओ ना। खोदा पहाड़ निकली चुहिया...। बेटी के बात रहे... मन ना माने। आजु-काल्हु ना करस। तड़के बेटहा के दुआर पर हाजिर हो जासु।

बटेसर जवन लइका बतवले रहन ऊ जीउत के गाँव हरनाथपुर से तीन कोस दूर परत रहे जगनपुरा। जाए-आवे के कवनो साधन ना। जेठ के महीना रहे। भोरहरिये उठि के तइयार होत अकास में लाली धऽ लेले रहे। घर से निकल के डेगरगर चललें। तीन कोस दूर उहो घाम में पैदल। डेगरगर चलला के बादो पहुँचत-पहुँचत नव बजि गइल। गाँव में नाम पूछत-पूछत बेटहा रामधेआन के दुआर पर पहुंचलें– "रामधेआन जी से भेट करे के बा।"

"का बात हऽ? कहां से आइल बानी...?" हमहीं रामधेआन हई।

हमार साढ़ू बटेसर भाई रावा लगे भेजले बानीं। आ बतवलें बानी कि राउर लड़िका बियाह जोग बाड़े। हमरो एगो बेटी बिया ओकरे खातिर रउरा दुआरे आइल बानी।"

बटेसरो रामधेआन के खबर ना कर पवलें रहले कि एगो आदमी लइका खातिर जा तारें। खुद जीउते सब बात बतवलें।

रामधेआन कहले– "लइका के बिआह करे के बिचार त जरुर बा बाकिर एह साल ना अगिला साल।"

www.bhojpurisahityangan.com

"कवनो बात नइखे। हमरो अकुताई नइखे। राउर जब इच्छा होई तबे करबि। तनी बबुआ के देखाइ दीं।" जीउत कहले।

"आइले बानी तऽ अइसे कइसे जाइबि, लइका देखिए के जाइब, बाकिर पहिले मुँह हाथ धोई के पनपियाव त करीं।" रामधेयान संस्कारवश कहलें– "एकरा बिना कुछ ना बिगड़ी पहिले देखा दीं। बादे में ई सब होई।"

रामधेआन कहलें– "गरमी के दिन बा पहिले पानी पीहीं।"

बाकिर जीउत आपन बात पर अड़ल रहेलें। रामधेयान घरे खबर पेठवलें लइका के आवे खातिर। बतकही होत रहे तबले लइका आ गइल। जीउत लइका देखलें। छव फीट के लाम-लहकार गेहुआ रंग बड़ा सुभेखगर लइका रहे। ना पसन होखे के बाते ना रहे।

पनपियाव का बाद जीउत लइका से नाव-गाँव, पढ़ाई-लिखाई के बारे में पुछलें। लइका आपन नाम किसन बतवलस। जीउत लइका के हाथ एक सौ एक रोपया सगुन धरवलें।

थोरे देर रामधेआन से अउरी बतकही भइल। लइकी देखे खातिर जीउत हाथजोरी कइले। रामधेआन अभी लइकी देखे के फेर में ना रहन, बाकिर जीउत के अधिका निहोरा से ऊ तइयार भइले। एकरा बाद जीउत घरे लवटलें।

अबले दुपहरिया हो चलल रहे। कड़कड़हटि घाम खरवरिया नाचत रहे। लूक अतना जोर चलत रहे कि चले के हिआव ना करत रहे। देहि झोकरा जाए। चढ़ल दुपहरिया में परल रहन जीउत। दोसर कवनो हितई रहित तऽ दुपहरिया बिताइये के चलतें। माह पैंतर में ऊ परल रहन। निअरा ना कवनो गाँव-गिरान ना पेड़ रुख रहे।

घरे आवत-आवत मिजाज लुकहर गइल। जीउत के घरनी एक लोटा पानी दिहली आ कठवत में गोड़ धोवली। जीउत एक सुरकिये एक लोटा पानी पी गइलें। ओहिजे खरहरे बंसखट पऽ पसरि गइलें। थोरे देरी में मिजाज अहथिर भइल तऽ रामरती पूछली– "का भइल? लइका कइसन बा? पसन पड़ल...?"

"ठीके बा... आसतुरनी लायक जोग लइका बा।" जीउत कहलें। बिहान होते जीउत सूरज के बटेसर लगे भेजके लइका पसन के खबर पेठवलें। इहो बतावे के कहलें कि अगिला एतवार के लइकी देखे आई लोग, ओह दिन ऊहो आ जइहें।

www.bhojpurisahityangan.com

बटेसर एतवार के दिन सबेरहीं जीउत लगे जुमि गइलें। सब इंतजाम करि के दूनो साढ़ू दलानी पर बइठ के बतिआवते रहे लोग, तबले चार आदमी के संगे रामधेआन पहुँचलें। राम-सलाम भइल। बटेसर, रामधेआन से हाथ मिलवलें। बटेसर आ रामधेआन एके इसकूल में पढ़त रहन जा। दूनों जन संघतिया हऽ लोग। बटेसर डाकिया के काम करेलन। रामधेआन के गांवे चिट्ठी बाँटे खातिर आवत-जात रहन बटेसर। गरमी के दिन रहे हाथ-गोड़ धो के मुँह में मीठा डाल के पानी पीअल लोग। तुरंते सौफ के शरबत आइल सभे पीअल। रामधेआन लइकी देखे के निहोरा कइलें। आसतुरनी के रंग-रुप बड़ा सुभेख रहे। दोहरा बदन लाम-लहकार ऊपर से गोराई रंग सुनरई में अउरी चार-चाँद लगावत रहे। आसतुरनी के देखते रामधेआन कहले– "जवन सोचले रहीं तवन मिल गइल।"

लइकी के नाव-गाँव आ पढ़ाई के बारे में पूछलें। ओह समय लइकी के पढ़ावे के ढ़ेर चलावा ना रहे। गरीब आ साधारण खाता-पीता घर के लइकी विरले पढ़त रहीं सऽ। गाँव के कुछुए लोग लइकी के इसकूल भेजत रहे। आसतुरनी गाँव के मीडिल इसकूल में सातवां तक पढ़ के पढ़ाई छोड़ देले रहे। रामधेआन लइकी के एक सौ एकावन रोपया सगुन देले। आ जाय के कहलें। जीउत लेन-देन के अटकर लगावे खातिर पूछलें– "हमरा का-का तइयारी करे के परी? रउरो कुछ डिमान्ड बा?"

रामधेआन कहले– सब कुछ आजे आ एहिजे होई?

जीउत कहलें– "ठीक बा दू दिन के बाद हमनी के आईब जा।"

रामधेआन कहलें– "बड़ा बढ़िया बा आई... स्वागत बा। ओहिजे बतकही होई।"

एह बीच में जीउत आपन खास हित-नाता जे रहे संगे चले खातिर खबर पेठवलें।

जीउत आपन आदमी लेके रामधेआन के दुआर पर पहुँचलें। बटेसर बहरे-बहरे उहां गइल रहन। पानी-पतर पीअल के बाद जीउत बटेसर से बात आगे बढ़ावे के कहलें। एने-ओने के बतकही होत रहे तबले बटेसर कहलें– "जवन काम खातिर आइल बानी जा तवने होखे। राउर का मांग बा बोलीं का लेबि, कतना लेबि?"

"का मांगे के बा? जवन एह घरी चलत बा तवने देबि!" रामधेआन कहलें–

www.bhojpurisahityangan.com

"खोल के कहीं हमरा सकान होई तबे न देहब!" जीउत पूछले–

"आरे ओही हिसाब से तिलक चढ़ाइब कि हमरा शिकायत ना होखे। लइका खातिर रेले साइकिल रीको घड़ी आ फिलिप्स के रेडियो जरूर चाहीं। एह में कवनो कटौती ना होखे के चाहीं।" रामधेयान आखिर खुलले।

जीउत तीनों चीज देबे के सकरले तबो पूछलें, "नगदो बता दीं कतना लेइब?"

"राउर लइकी हमरा जंच गइल बिया। जाई एकावन हजार दे देबि।" रामधेआन कहले।

जीउत अधीर होत मिमियइले– "हमरा के उठाई, राउर शरण में आइल बानी। बेटिहा के दिहला से धन ना होखे।"

"तऽ रउरे कहीं का देबि?" रामधेआन मुस्कियइले।

"हमहूं कुछ कहीं?" बीच में बटेसर टोकले।

"एकइस हजार पर फाइनल करऽ" रामधेआन भाई। रोपये-पइसा सब कुछ ना होला। अउरी कुछ देखे के चाहीं। बेटिहा के उबारल पुन्य के काम हवे। बटेसर आपन राय दिहलें।

"जा जवन कहि देलऽ तवन मानही के परी।" रामधेआन कहलें। फेर जीउत आ बटेसर के निहोरा पर रामधेआन एही साल बिआह करे के तइयार हो गइले। पंडित बोलाइ के असाढ़ में दिन धराइल आ दूनो जना बिआह के तइयारी में लागी गइल लोग।

दिन नियराइल त जीउत समान कीने खातिर सूरज के साथे शहर गइलें। बरतन-बासन पहिलहीं से रामरती गते-गते कीन के रखि देले रही। कपड़ा-लाता के साथे-तेल, डालडा, घड़ी, साइकिल, रेडिया किनाइल। सब समान लेके बस पड़ाव पहुँचल लोग। अचके में सूरज के इयाद आइल कि साइकिल के रसीद दोकाने पर छूट गइल। "तूँ सब समान लेके एहिजे बइठऽ आ साइकिल पर बान्हल समान के धेआन रखीह।" कहि के सूरज रसीद लेवे खातिर चल गइले।

थोरिके देर में एगो लइका आ के जीउत के गोड़ छू के कहलस– "गोड़ लागत बानी चाचा... का हाल बा? एहिजा काहे बइठल बाड़ऽ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"आरे आसतुरनी के तिलक के समान कीने के आइल रहीं जा। साइकिल के रसीद दोकाने पर छूट गइल बा, ऊहे लेवे खातिर सूरजा गइल बा। तिलक के बात बा रसीद के मांग होई तऽ कहां से दिआई?" जीउत सोझिआ नियर सब बता दिहलें। फिर पूछले– "तूँ के हवऽ बबुआ?"

"चाचा चीन्हत नइखऽ...? तोहरा घरे केतना बेर गइल बानी।" लइकवा कहलस।

जीउत पूछलें– "तुहूँ सूरजा सँगे गेना खेलेलऽ...?"

"हाँ! चाचा ओकरे सँगे खेलीला। सूरजा हमरा से कहले रहे कि अइहे समान कीने के बा। बाकिर हमरा आवे में लेट हो गइल हा। साइकिल चढ़ि के चाल देखलस सूरजा...?"

ना हो कहां बेंवत लागल हा...? सामान अतना लदाइल बा कि पैदल आवे के परल हा।" जीउत कहलें।

"हे तेरी के! चला के देख लेवें के चाहीं नू...?" लइका कहलस।

घरे चल जाई आ कवनो दिक्कत होई तऽ दुकानदार बदली...? ना बदली। चाचा हम चला के देख लेत बानी कि कइसन चलत बिया?

"समनवा खोल के रख दे बबुआ तब चलइहें... ना तऽ तेल, डालडा बा गिर जाई।" जीउत कहलें।

लइकवा एक दू फेरा निअरे चलवलस, आ कहलस– "बड़ा कड़ा चलत बिया चाचा... आ खट-खट के आवाजो करत बिया।"

अतने कहि के झटके से रोड पर निकल गइल। कुछ देरी भइल आ साइकिल लेके ऊ ना लवटल त जीउत के मन घबराये लागल। कहाँ चल गइल? समान छोड़ के कइसे ओके देखीं...? अपने मन में बुदबुदाय लगलें। ओहि घरी सूरज आ गइल, पूछलस– "साइकिल कहां बा?"

जीउत सब बात बतवलें। कहलन– "तोर संघतिया बतावत रहे आ ईहो कहलस कि सूरजा संगे गेना खेलीला।"

www.bhojpurisahityangan.com

सूरज बस पड़ाव आ रोड़ पर सगरे देख लेलें, कतहीं ना लउकल ऊ लइका। ऊ वाकिया समुझ गइल आ कहलस– "साइकिल चल गइल। कवनो ठग रहे, लेके भाग गइल।"

सुन के जीउत के कटले देहि खून ना। ओहिजे थसकि गइलें। "अब का होई? का तिलक चढ़ी...? कहां से अतना पइसा आई कि फेर साइकिल किनाई? कवन मुंह लेके जाइब तिलक चढ़ावे?" जीउत बड़बड़ाए लगलें। कुछ लोग जुट गइल। समझावल लोग। सांझ के बेरा हो गइल आ आखिरी गाड़ी लागल रहे। सूरज हाली-हाली समान बस पऽ लादि के जीउत के बांह धऽ के गाड़ी पर चढ़लवस। गरीबी आ लाचारी आदमी के बेबस बना देला। जवना से आदमी ना रो पावे, ना हँस पावे। घरे पहुँचते सुन के रामरती रोवे लगली। टोला भर के मरद-मेहरारु जुट गइल। सब लोग अपना हिसाब से समझावे लागल– "जवन भइल तवन भइल। अब रोवे से समान लवटि के ना आई। रसीद बा नू...। देखावल जाई बेटहां के। मानी ना...? ना मानी त देखल जाई अब हित होखे जात बा। समझी ना...? अब आगे के तइयारी कर लोग।"

जीउत के हूक हो गइल। रात के खाना ना खइले। आधा रात के बाद तबीयत खराब हो गइल। अपने में बुदबुदाये लगले– "साइकिल कहां से आई? का चढ़ाइब? कवन मुंह लेके जाइबि तिलक चढ़ावे।" होत बिहान सूरज डॉक्टर से देखवलस उनुका के। सुई-दवाई दिआइल। "इनिका के आराम करें दीं जा।" कह के डॉक्टर चल गइलें।

एके दिन बाद तिलक के दिन रहे। सब तइयारी हो गइल रहे। बाकिर जीउत के तबीयत जस के तस बनल रहे। साइकिल गायब होखे से आ गरीबी के मार से खटिया धऽ लेलें जीउत। रीन-महाजन लेके बिआह के तइयारी कइले रहन, बाकिर तिलक जाए के हालत में ना रहलें। सूरज आग-पाछ में परल रहे। आखिर दिल-दिमाग अहथिर करके तिलक चढ़ावे गइलें।

पानी पीअला के बाद तिलक चढ़ावे के बुलाहट भइल। नगद पहिलहीं दिया गइल रहे। सब समान चढ़ल। बाकिर साइकिल त रहे ना।

रामधेआन पूछलें– "साइकिल का भइल? हम कहले रहीं कि लइका के समान में कटौती ना होखे के चाहीं। बिना साइकिल के बिआह ना होई।"

www.bhojpurisahityangan.com

सूरज सब घटना बता देलें आ कहलें– "बाबूजी एही चलते बेमार बाड़ें। आज तिलको के दिन ना आ पवलें। रसीद देखीं साइकिल के।"

"साइकिल चढ़ावे के ना रहे तऽ कांछ के घरे रहि गइलें।" रामधेआन गुरमुसाइल बोलले।

"हम झूठ एकदमे नइखीं बोलत। हमार बात के विश्वास करीं।" सूरज अनुनय कइले।

सूरज के बात रामधेआन माने के तइयार ना भइलें। बहुत लोग समझावल बाकिर रामधेआन टस-मस ना भइलें। बेटहा के शान उनुका के आन्हर आ बहिर दूनो बना देले रहे। "सब समान उठा के ले जा।" ऊ खींस में बोल देलें।

बेटहां होखे के शान बड़प्पन के नशा आदमी के निमन जबून के परख खतम कर देला। गरीबी अइसन चींज हऽ कि आदमी के हाथ-गोड़ रहते, कबो-कबो लाचार बना देला।

रामधेआन किसन के चौका प से उठे के कहलन। सुन के सूरज डबडबा गइले। लोर ढ़रक गइल आँखि से। किसन सब घटना के मूकदर्शक बनल रहन। बाबूजी के जिद से उनुका अनस लागत रहे। सूरज के ढ़रकल लोर सच्चाई बेआन करत रहे। किसन उनुकर लाचारी समझत रहन। एगो समान खातिर बेबस इंसान के बेइज्जत कइल उनुका बड़ा खराब लागत रहे। बाकिर लचार रहन।

रामधेआन फेरु कहलें– "चल उठ किसना चौका पर से, तोरा के कतना बेर कहीं। अब ई बिआह ना होई।"

किसन बाबूजी के व्यवहार देख के खीसिन मात गइलें। आज तक बाबू-माई के जबाब ना देले रहन ना कवनो बात के उल्लंघन कइले रहन। मन में सोचलन कि बाबूजी के बात के उल्लंघन करे से एगो लाचार इंसान के मान-सम्मान बांचि जाई तऽ कवनो पाप ना कहाई। ऊ बइठले बइठल कहले– "बाबूजी अब बस करीं। चुप हो जाईं। ढ़ेर हो गइल।" फेर पंडित जी से आगे के बिधि करे के कहलें।

रामधेआन के भक् मार देलस। आज तक जबाब ना देले रहे किसन। आजु का हो गइल एकरा? उनुका अपने बेइजती बुझाये लागल। अपना के सम्हारत उहां से

www.bhojpurisahityangan.com

चल गइलन। तिलक चढ़ गइल। बाबू-माई खीस में मातल रहन। गोड़ लगलस तऽ गोड़ हटा लिहल लोग।

समाज में किसिम-किसिम के लोग होलें। केहू कहे कि घोर कलजुग आ गइल। केहू कहे भठजुग आ गइल। ई लइका त समाज में अपना बाप के मूड़ी झुका देलस। बिआह करे खातिर बाप के कहल ना मनलस। केहू-केहू कहे कि बड़ा नीक कइलस बाकिर ढेर लोग किसन के एह खातिर सराहल।

हमरा ई पुरान घटना आजु फेर मन में याद आ गइल। ओघरी दहेजई साइकिल खातिर किसन के बिआह ना रुकल बाकि आजु बेटिहा के ना जाने कवना-कवना चीजु खातिर बेइजती आ दुर्दशा झेले के परत बा। केतना के मोटरसाइकिल, कार खातिर सजल बरात लवट जातिया। किसुन नियर केतना लड़िका एघरी लउकत बाड़न?

www.bhojpurisahityangan.com

ई भरम कब टूटी?

आरा से पटना जाए खातिर सबेर में शटल ट्रेन से बढ़िया कवनो गाड़ी नइखे। एह गाड़ी के खासियत बा कि एकदम समय पर पटना उतार देलें। एक लेखा डेली पसींजर के गाड़ी होखे के चलते जब खुल जाले त मेल भा एक्सप्रेस सब एकरा पीछे-पीछे चले ली स। एही चलते सब जातरी के कोशिश रहेला कि शटल कसहू धरा जाए।

नारायन के ऑफिस के काम से पटना जाए के रहे। गाड़ी आवे के आधा घंटा पहिले से टिकट कटावे खातिर लाईन में लागल रहन। एगो त लमहर लाईन ओहू में ठेला-ठेली। ऊपर से गरमी आपन जवानी पर रहे। ओह दिन किरिन फूटते तिरिख घाम कइले रहे। घामे मिजाज तिरमिरा जात रहे। जातरी के भीड़ ओसहीं। पसेना से देहि के कपड़ा भींज के पोतन। नारायन काउन्टर से अभी दूरे रहन, तबले गाड़ी के आवे के घोषणा हो गइल। लाईन में खाड़ जातरिन के हड़बड़ी बढ़े लागल। बगल से टिकट ना देवे आ लाईन से आवे के हिदायत के साथे ठेला-ठेली अउरी बढ़ि गइल। थोरहीं देरी में गाड़ी प्लेटफार्म पर आ गइल। नारायन अभियो चार आदमी के पीछे रहन। गाड़ी छूटे आ ऑफिस में लेट पहुंचे के डर से नारायन के धकधकी अउरी बढ़े लागल। नारायन काउन्टर में हाथ ढुकवलें रहन गाड़ी खुले के सीटी मरलसि। गाड़ी चल देलस। अभी गाड़ी धीमे रहे। हाथ में टिकट मिलते नारायन लुति हो गइलें। कसहू गेट के सिकचा धई के बोगी में घुसलें। बोगी भींड़ से अड़सल। गते-गते संसरलें। एक जगे खाड़ होकें लमहर सांस लेलें। रुमाल से आपन चेहरा से टपकत पसेना पोछलें।

अबहिं गाड़ी थोरे दूर बढ़ल रहे। एगो सीट पऽ बइठल जातरी उनुका से कहलें– "एह पर पाँचे आदमी बा, एही मे जगह बना के रउओ बठि जाईं। काहे कि आगे स्टेशन पर केहू ना केहू बईठिये जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

अइसे त गाड़ी में जगह रहलो पर केहू के केहू ना कहे। अपने जगहा बना के बइठे के परेला। नारायन बड़ा एहसानमंद भइलें। एह मेहरबानी खातिर धन्यवाद देलें ओह जातरी के। एही क्रम में दूनो आदमी के बीच बतकही शुरु हो गइल। नारायन टिकट कटावे के भइल परेसानी के बखान करे लगलें, "एडभांस टिकट के व्यवस्था रहे तऽ बड़ा आराम रहे। अब टिकट कटावें में गींजन हो जाता। ढ़ेर लोग के गाड़ी छूट जाता, ना त बिना टिकट के गाड़ी धऽ लेता। ई सोचि के कि जवन राह में होई तवन देखल जाई।"

एही तरी बतकही करत-करत एक दूसरा से परिचय पाती होखे लागल। नारायन आपन नाव के साथे बतवलें कि "हम स्टेट बैंक आरा में काम करिला। लगले हाथ ओह जातरी से परिचय पूछलें"

ऊ जातरी आपन नाव चन्द्रदेव आ बिजली विभाग पटना में कर्मचारी बतवलें। साथे अपना घर गोढ़ना रोड में बतवलें आ कहलें– "हम डेली पंसिजरी करिला।"

नारायन कहलन– "हम अभी किराया के घर में बानी, बाकिर गोढ़ना रोड के गौतम नगर में जमीन लेले बानीं।"

चन्द्रदेव कहलन– "हमरो घर गौतम नगर में बा। बहुत बढ़िया...। घर बनावे के काम लगाईब तऽ कवनो किसिम के मदद के जरुरत होई तऽ हमरा के जरुर इयाद करबि। हमरा से जतना मदद होखे लायक होई तऽ हम जरुर करबि।"

एहि तरे बतकही होत-होत समय कट गइल आ गाड़ी पटना स्टेशन पर पहुंचि गइल। दूनो आदमी उतरलें। नारायन चन्द्रदेव से हाथ मिलावत कहलें– "कवनो किसिम के सेवा के जरुरत होई तऽ जरुर कहबि, राउर स्वागत बा।"

इहे कहि कि दूनो आदमी आपन-आपन राह धइलें।

चन्द्रदेव के रोपया के जरुरत रहे, एह से ऑफिस के टिफिन के बेरा रोपया निकाले खातिर ए. टी. एम. में गइलें। पॉकिट से ए. टी. एम. कार्ड गायब। पॉकिट से सब कागज निकाल के खोजलें। कार्ड ना रहे। घबडइलें कि का भइल? घरहि छूट गइल का, कि कतही गिर गइल? घरे मोबाइल से आपन घरनी पार्वती से सवचलें– "ए.टी.एम. कार्ड निकाल के रखले बाड़ु का?"

www.bhojpurisahityangan.com

पार्वती चिहइली– "ना... जी, हम काहे खातिर राउर कार्ड लेहिब? देखी आपन पॉकिट भा बेग-ओग में। कतहिं रखले होइबि। रउआ तऽ एक दमे भोर बिसना हईं।"

चन्द्रदेव बेगो में खोजलें बाकिर ना मिलल। स्टाफ लोग से पूछलें– हमार कार्ड केनहूं हेरा गइल बा, केहू भाई के मिलल बा का? सगरे से ना में जबाब मिलल। स्टाफ लोग सलाह देलें, "कार्ड के जल्दीये बंद करवा दीं।"

सांझ के लवटला के बाद घर में सगरे खोजलें। तबो ना मिलल। बिहान भइला चन्द्रदेव ऑफिस ना गइलें। ए.टी.एम. कार्ड बंद करावे खातिर स्टेट बैंक गइलें। नारायन के टेबुल के भिरी आस्ते से खाड़ हो गइलें। नारायन आपन काम में बाझल। मुड़ी उठवलें त सामने चन्द्रदेव के देखि के चिहइलें, पूछलें– "कब से खाड़ बानी? का बात बा? काल्हुये गाड़ी में बातचीत भइल आजु रउआ हाजिर बानी।"

चन्द्रदेव कहलें– "हमार ए. टी. एम. कार्ड कतहीं गिर गइल। ओहि खातिर हम आइल बानी की ओकरा के बंद करा के नया कार्ड लेहिब।"

नारायन एगो फारम भरवा के ए. टी. एम. के बंद करवा देलें आ नया ए. टी. एम. कार्ड देलें। चन्द्रदेव घरे लवटि गइलें।

नारायन आपन काम में लागि गइलें। चन्द्रदेव बड़ा खुश भइलें कि जल्दीय सब काम हो गइल। स्टेट बैंक में कवनों काम करावल आसान बात ना हऽ। छोट काम खातिर दिन भर लाग जाला। चन्द्रदेव घरे पहुंचलें त पार्वती पूछलीं– "काम ना भइल का?" बड़ा जल्दीय आ गइनी?"

कार्ड देखावत पार्वती से चन्द्रदेव कहलें– "बैंक में एगो नया संघतिया बाड़न। कुल्ही काम कुर्सी पर बइठलें करा देलन।"

पार्वती सुन के खुश भइलीं। गते-गते दूनो संघतिया के बीच दोस्ती के बिया अंकुरे लागल। दूनो जना एक दोसरा के घरे जाय आवे लगलन। सुख-दुखः में एक दोसरा के साथ निभावे लगलें।

नारायन सामाजिको काम आगे बढ़-चढ़ के करत रहन। जवन तबका से आइल रहन ओह तबका के दुखः दरद उनुका जेहन में मौजूद रहे। शोषण-दमन प्रताड़ना से उबरके खुदे आगे बढ़ल रहन। अउरी लोग के उबारे खातिर एगो सोच राखत रहन। कहल जाला समाज भा देश के विकास तबे होई जब समाज के हरेक

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ग के लोग विकास के मुख्यधारा में आ जइहें। कवनों व्यक्ति भा समाज के विकास के मुख्य आधार शिक्षा हऽ। बिना शिक्षा के बिकास असंभव बा। इहे सब उद्देश्य के पूरा करे खातिर "दलित विकास सेवा संघ" के नाव से एगो संस्था के स्थापना कइलें। कवनो बड़हन काम करे खातिर शुरुआत छोटहने होला। संस्था से लोग जुड़त गइल आ शहर से निकल के गाँव-गाँव तक फैल गइल। गरीब लाचार लइका-लइकी शिक्षा के व्यवस्था ई संस्था कइले रहे। जवना से शिक्षित होके आपन एगो पहचान आ देश के विकास में योगदान दे सके। संत महापुरुषन के आदर्श आ उनुकर विचारधारा, सोच अपनावे खातिर लोग के प्रेरित कईल जात रहे। समाज में फैलत अंधविश्वास, नशाखोरी, कुरीति से दूर रहे खातिर लोग में जागरन पैदा कईल जात रहे। एही खातिर समय-समय पर संत महापुरुषन के जन्म दिन मनावल जात रहे। एह अवसर पर संत महात्मा के जीवन दर्शन, आदर्श उनुकर सोच, विचारधारा विस्तार से बतावल जात रहे।

एतवार के दिन सबेरहिं चन्द्रदेव, नारायन के घरे गइलें। चाय के साथे बतकही होत रहे। दूनो-जना के इआरी अतना हो गइल रहे कि सुख-दुखः दोसरा से खुल के कहत आ सुनत रहे लोग। चन्द्रदेव आपन घर में पार्वती से चलत कलह के बारे में बतवलें– "जब से सुनीता (बेटी) के इंजीनियरींग में प्रवेश परीक्षा खातिर फारम भरवलें रहीं तबे से रोज कबो ना कबो मुहांठूठी होत रहत बा। काल्हुये रिजल्ट निकलल। सुनीता के पास होखला के खबर सुन के पार्वती नाक-भंव चढ़वले बाड़ी।"

उनुकर कहनाम बा– "बाहर पढ़े खातिर बेटी ना जाई। बेटी जात के बाहर, उहो अकेले रह के पढ़ावल कवन जरुरी बा? के देखी, का करत बिया का नइखे करत? पढ़त बिया कि घूमत बिया? बर-बेमार पड़ी तऽ के देखी...?"

हम समझावत-समझावत हार गइनी। बाकिर समझे के नावे नइखी लेत। जिद धइले बाड़ी कि बाहर ना एहिजे पढ़े।

अगर बाहर पढ़े जाई तऽ हम जहर-माहूर खाके सूति रहबि। टोला-मोहल्ला के मेहरारुओं कान भर देले बाड़ी सऽ। जानते बानी के केकरा के बढ़न्ती देखल चाहे ला? जादे लोग टांग खिचहीं में रहे ला। पार्वती के हाल बा कि केहू कह दिही कि कउआ कान लेले जात बा तऽ कान ना टोइहें। कउआ के पीछे दउडे लगिहन।

www.bhojpurisahityangan.com

चन्द्रदेव नारायन से कहलन– "एक दिन आके रउवो तनि समझा के देखी, हो सकेला राउर बात मान जासु।"

ठीक बा हम आइबि- नारायन कहलें।

नारायन बैंक से छूटला के बाद चन्द्रदेव के घरे गइलें। चाय-पानी पीअला के बाद पार्वती कहली– "तनि इहां के समझाईं कि बेटी-टाटी के बाहर में अकेले रख के इंजीनियरींग पढ़वला बिना कवन हरजा बा? एहिजे रहि के कवनो पढ़ाई पढ़ी तऽ का दिकत बा? एहि मोहल्ला में कतना बेटी पढ़त बाड़ी सऽ। केकर बाहर पढ़े जात बाड़ीस? बेटी जात बाहर में अकेले रहि के का पढ़ी, का करी, के देखे वाला रही? कहाव हऽ– "जवानी आ पानी खाले में बहेंला। इहें बात हम कहिया से कहत बानी, बाकिर इहां के बूझे के तइयारे नइखीं।"

नारायन कहलें– "ई राउर बेटी हऽ एकरा पर रउआ ना विश्वास करब तऽ के करी? अभी जब कॉलेज में पढ़े जात बिया तऽ ऊ का करत बिया, कहां जात बिया? रउरा देखे त नइखी जात। आज जमाना कहां से कहां चल गइल। जमाना के हिसाब से आदमी अपना में बदलाव ना लाई त ऊ पिछड़ जाई। अब त लइकी हरेक इंतिहान में टॉप करत बाडी स। लइका लोग के पीछुआ देली सऽ। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, डी. एम., सी. एम, प्रधानमंत्री तक लइकी बनत बाड़ी स। अपना मन लायक बात ना सुन के पार्वती अनसा के कहली– "रउओं उहें के पछ लेतानी...?"

नारायन कहलें– "हम केहू के पछ नइखी लेत। हम त जमाना के बात कहऽतानी। लइका-लइकी के पसन के विषय ना पढ़ाईब त कबो सफल ना होइ। रहल बात बाहर जाके पढ़े के त उहां लइकिन खातिर अलगे रहे के होस्टल रहेला। उहां लइकन के आइल-गइल मनाही रहेला। एह से डेराए के काम नइखे। बाहर रहे से लइका भा लइकी में आत्मनिर्भरता आ आत्मविश्वास बढ़ेला। कहीं जाए आवे से झिझक या डर खतम हो जाला। उहां कतना लइकी पढ़त बाड़ी, कवनो इहे अकेले थोरहिं पढ़ीहें।"

नारायन के बात काटत पार्वती कहलीं– "हमरा दोसरा के देखा देखी नइखे करे के, के का करऽता? हमरा का मतलब बा दोसरा से? बेटी-टाटी के ढ़ेर पढ़ा के का होई? कतनो पढ़ी तऽ घर में चुल्हा-चौकी करहीं के पड़ी नू...। ई कतना दिन हमरा भीरि रही? बिआह-शादी होई अपना घरे-दुआरे चल जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

ई त दुनियादारी बा, सब लइकिन के आपन बाप-मतारी छोड़ के दोसरा के घरे जाए के परेला। एगो बात अउरी जान लीं कि कम पढ़ल लइकिन के बिआह करे में दिकत बा। आजु-काल्हु सभे ग्रेजुएट आ टेकनिकल डिग्री वाली लइकी खोजत बा। एह चलते लइका भा लइकी के बिना भेद-भाव के खूब पढ़ावे के जरुरत बा।"

पार्वती पढ़ल-लिखल ना रही। उनुका के समझावल आसान बात ना रहे। पुरान रीति-रेवाज में पोसाइल पार्वती के व्यक्तित्व पर रुढ़ीवादी छाप साफ नजर आवत रहे। पूजा-पाठ रोज करेलीं, अंधविश्वास में उनुकर मन हरमेश डूबल रहेला। ऊ आपन जिद छोड़े के तइयार ना रही।

नारायन कहलें– "सुनीता के इच्छा पूछनी कि ऊ का चाहत बिया?"

पार्वती कहली– "हम का पूछी? बाप-बेटी के एके गटी बा।"

सुनीता एह घटनाक्रम के मूकदर्शक बन के गंभीरता के परिचय दे रहल बिया। काहे कि ओकर लड़ाई त उनुकर पापा लड़ते रहन।

नारायन फिर कहलें– "इंजीनियरींग के पढ़ाई कठिन होला। एकर ढ़ेर मांग बा। आ मान-सम्मान भी बा। जेकर बेटा-बेटी इंजीनियर बन जाला त बाप-मतारी के माथा गर्व से ऊँचा हो जाला। आ बेटा-बेटी के जिनिगी संवर जाला। बाप-मतारी के इहे कर्तव्य हऽ कि आपन बाल-बच्चा के जिनिगी बना देवे के।"

अतना समझावला के बादो पार्वती टस से मस ना भइली। नारायनों अब हतास हो चलल रहन।

आखिरी बार पार्वती से कहलन– "ई बात जान लीं कि पहिले के जुग-जमाना नइखे। आज काल्हु के लइका-लइकी बड़ा जिदी होत बाड़ें। मान लीं कि बेटी के पसन के विषय ना पढ़े के मिली आ एही खींस-पीत में जहर-माहूर खाली, चाहे फांसी लगा लीं। तब कवन भाव के पर जाई? बेटा जब जहर-माहूर खाई भा फांसी लगाई त ओकर बात कुछ अउरी होला। बाकिर बेटी ई काम कर दी त ढ़ेर सवाल खाड़ हो जाई। राह चलल मुश्किल हो जाई। अब ढ़ेर ना कहब। इंसान खातिर इशारा ढेर होला।"

ई बात सुन के पार्वती के दिमाग पर करेन्ट लेखा लागल। जइसे दिमाग झनझना गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

कहली– "इहो हो सकेला...?"

कटला पेड़ लेखा भहरा गइली। तबो अनमने मन से कहली– "जाईं रउआ सभे के जवन मन करे तवन करीं जा। हम कुछुओ ना बोलबि। बाकिर एगो अउरी कहबि– "अतना पइसा कहां से आई?"

चन्द्रदेव खातिर इहो एगो बड़ बाधा रहे। एगो पार पवलन तऽ दोसर खाड़ हो गइल। ताड़ से गिर के खजूर पऽ अटकलें।

नारायन कहलन– "चिन्ता करे के बात नइखे। बैंक से पढ़ाई खातिर लोन मिलेला। ई काम हमरा पर छोड़ दीं।"

सुनीता के रैंकिंग बढ़िया रहे, कौन्सीलिंग के बाद मन पसंद विषय आ कॉलेज आई.आई.टी. दिल्ली मिलल।

दूई दिन बाद चन्द्रदेव दिल्ली आई.आई.टी. पहुंचलें। फीस के साथ होस्टल के कुल्ही खरचा के हिसाब आ नाम लिखावे वाला फारम लेके लवटले। नारायन से मिल के लोन खातिर सब प्रक्रिया भइल। एक दिन बाद लोन के चेक मिल गइल। चन्द्रदेव सुनीता के लेके दिल्ली जाके नाम लिखवा देलें। होस्टल के कमरा मिल गइल। सुनीता पापा के साथ कमरा में पहुंचली। ऊहां पहिले से दूगो छात्रा रही, उनुका से परिचय भइल। थोरे देर तक रहला के बाद इतमिनान होके चन्द्रदेव घरे लवटलें। सुनीता कॉलेज के गेट तक आके पापा के विदा कइली आ आपन पढ़ाई में रम गइली।

अब दूनो संघतिया इतमिनान से आपन-आपन काम में लाग गइल लोग।

फरवरी महीना रहे संत रविदास जयन्ती समारोह के जोर-शोर से तइयारी भइल रहे। शहर के टाउन हॉल में जयन्ती समारोह के आयोजन होत रहे। एह अवसर पर स्थानीय विधायक से लेले नेता मंत्री सिरकत कइले रहन। हॉल खचाखच भरल रहे। मीडिया के लोग एह अवसर पर नेता-मंत्री के रहे से पूरा कवरेज करत रहन। स्थानीय टी. वी. पर सीधा प्रसारण होत रहे। छुट्टी रहे से चन्द्रदेव घरहि रहन। पार्वती टी. वी. खोलले रही। नारायन के टी. वी. में देख के चिहइली। चन्द्रदेव के बोला के देखवली आ पूछली– "ई नारायन नू हवें।"

चन्द्रदेव कहलन– "हाँ हाँ नारायन हवें।"

www.bhojpurisahityangan.com

पार्वती पूछली– "रविदास त चमार रहन। ई ओह में का करत बाड़न! इहो चमारे का हवें?"

चन्द्रदेव जानत रहन कि नारायन दलित सेवा संघ के नाव से एगो संस्था चलावे लन।

पार्वती दोबारा पूछली तऽ चन्द्रदेव कहलें– "चमारे हवें।"

ई बात सुन के पार्वती नाक-भंव चढ़ा लेली। कहली– "राम रे राम हमार घर भरनठ हो गइल। छीः छीः सब कप-प्लेट गिलास कुर्सी छुआ गइल। चन्द्रदेव के डपट के बोलली– "जाईं... रउआ दुनिया में दोस्ती-इयारी करे खातिर आदमी ना मिलत रहे। गइल रहीं चमार जोरे इआरी करे। ब्राह्मण कुल में जनम लेके नाश देनी रउआ। चमार आ ब्राह्मण जोरे इयारी होखे के चाहीं?"

गंगाजल से सब कुर्सी टेबल धोअली आ कप-प्लेट गिलास सब एगो बोरा में डाल के सीढ़ी के नीचे रख देली। भनर-भनर कइलें रहीं।

चन्द्रदेव के मिजाज गरम भइल जोर से डपटलें– "ना चुप रहबू? तबे से भचर-भचर कइले बाड़ू। कवन जमाना के मेहरारु हउ। तोहरा के शहर मे लें अइनी कि कुछुओ अकिल-बुद्धि हो जाई बाकिर तु जवन रहू तवने रहि गइलू। जमाना कहां से कहां पहुंच गइल। ई अबहि चमारे-दुसाध में भुलाइल बाड़ी। आदमी बोली व्यवहार, संस्कार से बड़ होला ना कि जात से बड़ होला। ऊ भला कतना सीधा-सपाटा आदमी बाड़न। अइसन आदमी ललटेन लेके खोजबू त ना मिलीहें। आज के जमाना में के केकरा के मदद करत बा? जे बा से खाले में गिरावे के फेर में रहत बा। ई आदमी मोका बेमोका संगे खाड़ रहत बाड़ें।"

पार्वती मुंह चमकावत कहली– "रउवे रखीं आपन इयारी। हमार घर में अब उनुका नइखे आवे के। सब धरम नशा गइल।"

चन्द्रदेव खीसिआ के कहलें– "नशाई तोहार धरम? तुही रोके लू...? अब जहिया, आ जइहे घरे तऽ हमार मुंह ना देखबि।" पार्वती कह के पलंग पर बइठ के सीसिके लगली।

घर के झगड़ा पसरा घाव लेखा गते-गते मोहल्ला में पाटि गइल। कहल बा कि देवालों के कान होला। सगरे कानाफूसी होखे लागल।

www.bhojpurisahityangan.com

चन्द्रदेव आ नारायन के इयारी कमेसर के फूटली आँखे ना सोहात रहे। कमेसर चन्द्रदेव के पड़ोसी रहन। कवनो बात भनक लागते इनिका तितिकी लेस देत रहे। मोहल्ला में केहू के निम्मन से रहल भा केहू के बढ़न्ती देख के उनुका खूब डाह बरत रहे। केहू के मिलजुल के रहल देखि के ऊ चाहत रहन कि कइसे बिगाड़ करवा दीं। पार्वती के कान भरे मे कमेसरो के हाथ रहे। नारायन के चन्द्रदेव के घरे आवे जाए से ढ़ेर लोग चिन्हत रहे। चन्द्रदेव दूनो बेकत के झगड़ा सुन के कमेसर बेचैन हो गइलें कि ई खबर कइसे नारायन तक पहुंचाई? बिहान भइला पइसा निकाले के बहाने कमेसर बैंक पहुँचले। नारायन कमेसर के देखि के चन्द्रदेव के हाल-चाल पूछलें। कमेसर के बिना मंगले मुराद पूरा हो गइल। खूब मीरिच मसाला लगा के चन्द्रदेव दूनो बेकत के झगड़ा के कथा बतवलें। नारायन सुनि के चिहइलें। मन में बड़ा दुःख भइल। सोच में परि गइलें कि आजुओ अइसन सोच वाला आदमी बा। ठीक कहाव हऽ कि जेकरा के भला करबि ओकरे से बिगड़ि जाई। नारायन ममस के रह गइलें। मुंह से अपने आप निकल गइल– "ई भरम कब टूटी?"

बइसाख के महीना में खूब लगन रहे। कहियों कहियो दू से तीन गो नेवता पुरावे के परत रहे। चन्द्रदेव के एके दिन दू गो नेवता रहे। एगो अपना पड़ोसी के रहे आ एगो दोसरा मोहल्ला में रहे। दूरवाला नेवता पहिले करि के जल्दी लवटे खातिर चन्द्रदेव दूनो बेकत मोटरसाइकिल से रवाना भइलें। नेवता कर के लवटे के बेरा राह में एगो गाड़ीवाला धक्का मार देलस। चन्द्रदेव थोरहि हटि के गिर गइलें, पार्वती सटले मोटर साइकिल के नियरे गिरल रही। कुछ लोग चन्द्रदेव के उठावल, उनुका हलुके चोट रहे। पार्वती के कपार आ नाक से बहुत खून गिरत रहे। धावा-धाई दू चार गो आदमी अस्पताल पहुँचवलें। डॉक्टर देख के तत्काल दूगो सुई देके बैन्डेज पट्टी बन्हला के बाद कहलें– "मरीज के शरीर से ढ़ेर खून निकल गइल बा। खून चढ़ावल जरुरी बा।" पार्वती अभी बेहोश रही। चन्द्रदेव के अउरी घबड़ाहट बढ़ि गइल।

डॉक्टर से कहलन– "अतना रात के कहवां खून मिली सर...?"

डॉक्टर कहलन– "आज ना तऽ काल्हु सबेरे खून चढ़ावे के परी तबे मरीज बांचि पइहें।"

चन्द्रदेव ओही रात मे सगरे हित-नाता आ नारायन लगे फोन कइलें। खबर पावते नारायन ओही रात में दनाक से सदर अस्पताल पहुँचलें। रात भर नारायन,

www.bhojpurisahityangan.com

चन्द्रदेव के साथे रहले। ढ़ाढ़स बढ़ावत रहन। बिहान होत-होत सभे हीत-नाता जूटि गइल। तीन आदमी खून देवे के तइयार भइलें। खाली चन्द्रदेव के सार के खून पार्वती के खून के ग्रुप से मेल खइलस। एक बोतल उनुकर खून चढ़ल बाकिर डॉक्टर कहलें– "कम से कम एक बोतल खून अउरी लागी। चन्द्रदेव के चेहरा से पसेना टपके लागल।

नारायन आपन खून जाँच करवलें तऽ पार्वती के ग्रुप से मेल खा गइल। नारायन के खून पार्वती के चढ़ल। थोरे देरी के बाद पार्वती के होश आ गइल। डॉक्टर पार्वती के देखले आ कहलन– "अब राउर मरीज खतरा से बहरी बाड़ी, एक सप्ताह के दवाई लिख देत बानी। सांझ तक घरे ले जा सकत बानी। बैन्डेज एक दिन बीच कर के बदले के परी।"

चन्द्रदेव पार्वती के घरे ले अइलन। गते गते ठीक हो गइली। जब पता चलल कि उनुकर देहि में नारायन के खून चढ़ल बा, तब उनुका बड़ा आत्मग्लानी भइल, रोवे लगली। कहली– "हमरा से बड़ गलती हो गइल। राउर संघतिया के अइसन बात बोल देनी।"

पार्वती के लोर से नारायन के खिलाफ जमकल उनुका मन के सब मईल धोआ-पोछा के बाहर निकल गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

कोरहाग

धीरज के होटल मैनेजमेंट के पढ़ाई खतम भइल। होटल में सहायक मैनेजर के नोकरी मिलल। नोकरी लागते अगुआ उनुका बिआह खातिर दुआर के माटी कोड़ देलें। एके दिन बीच होखे कि अगुआ जुटले रहस। एगो सुभेख आ संस्कारी लइकी सुशीला से बिआह भइल धीरज के। साल बितत जउंआ लइका आ लइकी भइल सुशीला के। दुई साल बितल त धीरज के विडियो कॉन्फ्रेन्सींग से इन्टरभीव भइल। दुबई के एगो पाँच सितारा होटल में योगदान कइलें। सुशीला गाँव में।

साल बितल त धीरज छुट्टी अइलें। शहर के एगो बढ़िया इसकूल में लइकन के नाम लिखवइलें। घर किराया पर लिआइल। ओहि शहर में सुशीला के माई-बाबूजी आ भाई राम सुंदर। छुट्टी खतम होते धीरज चल गइलें दुबई। सुशीला के अकेलापन ना महसूस होखे। लइकन के पढ़ाई के जिम्मेदारी सुशीला प। ओह लोग के टियूसन खातिर राम सुंदर एगो शिक्षक लगा देलें। बाकी समय में सुशीला लइकन के पढ़ावस। सुशीला लइकन के जिनगी संवारे में जुट गइली। बचत करे के प्रवृति सुशीला के अपना बाबूजी के लेखा, गैर जरुरी खर्च एकदम ना। लइकन के पढ़ाई आ घर खर्च से जवन पइसा बांचे, ऊ बैंक में जमा करस। बाबूजी से सीखले रही कि बूँदे बूँदे तलाब भर जाला। गते-गते कुछ बरिस के बाद एगो बढ़िया रकम हो गइल। ऊ सोचली कि शहर में आपन घर हो जाई त किराया के पइसा बांची।

धीरज छुट्टी अइलें त ओहि शहर में जमीन लेवे के निहोरा कइली।

धीरज कहलें– "जमीन अतना सस्ता बा?"

सस्ता नइखे बाकिर "जहां चाह ऊहां राह"। कोशिश कइला पर हो जाई।

"अतना पइसा कहां से आई।" धीरज कहले।

"कुछ रोपया हम बटोरले बानी। अउरी पइसा बाबूजी रिटायर आइल बानी त ऊहां से लेके हो जाई।"

www.bhojpurisahityangan.com

बाबूजी के प्राइवेट नोकरी। जादा से जादा पी. एफ. कटल होइ ऊहे नू मिलल होई। जादा पइसा थोरे मिलल होई।

अभी लइकन के पढ़ाई जरुरी बा। जमीन लेल ना। अब पढ़ाई बड़ी मंहगा हो गइल।

सुशीला कहली– "अभी एक से दुई साल में काम हो सकेला। फेर हाई इसकूल से कॉलेज मे जाई लोग त अउरी खर्च बढ़ीं। रउवा चिन्ता बा लइकन के पढ़ाई खातिर त हमरो ओतने चिन्ता बा। सब गते गते हो जाई।"

"बाकिर जमीन कहां बा? के पता करत चली?"

"हमार बाबूजी जमीन बतिअइले बानी"

धीरज जाके जमीन देखले त पसन परल। जमीन धीरज के नामे लिखाइल। गते गते घर बनल, सुशीला के बाबूजी के देख रेख में।

घरबास के दिन धराइल त धीरज अइलें। घरबास के दिन सुशीला भूखल। घर के पूजा के बाद सुशीला मुंह में परसाद डाल के पानी पिअली। अचानक उनुकर तबियत खराब। डॉक्टर से देखावल गइल। तत्काल आराम भइल। बाकिर ऊ बेमार रहे लगलीं। जांच-भइल। ब्लड कैंसर निकलल। धीरज तनाव में। ऊपर से लोग किसिम किसिम के बात करे की, जमीन ठीक नइखें। ई तोहरा लोग के सहल ना। घर में आवते बेमारी हो गइल। आगे का होई ना, होई...? मुंबई ईलाज शुरु भइल। कुछ महीना इलाज चलल। बाकिर सुशीला ना बंचली। बीच महाधार में छोड़ गइली। धीरज के आँखी के सोझा अन्हरिया छा गइल। अभी लइकन के मीडिल इसकूल पास कके हाई इसकूल में नाम लिखाइल रहे। चिन्ता से धीरज के देह सुखा गइल। लइकन के पोसे-पाले आ पढ़ावे के समस्या खाड़। विदेश के नोकरी बदली के त बाते ना। जहां एगो राह बंद हो जाला त दोसर राह खुल जाला। उनुकर एगो हित दुसर बिआह करे के उनुका के सलाह देलें। आ इहो कहलें कि हम बिआह करा देब। बाकिर धीरज द्वन्द में। लइका के बिआह के उमिर ना। कवनो राह ना लउके। घर सम्हारे के गरज, मजबूरी में राजी भइलें। कुछुये महीना बाद एगो विधवा से बिआह खातिर बात आगे बढ़ल। ओह विधवा सुनिता के देहि एको नान्ह-बार ना। सुनिता के सवांग पिअकड़। जेठ के लुक आ दारु के गरमी सुनिता के सवांग सुखले अइठा गइलें। अस्पतालो ना पहुंचलें। सवांग के मरते सास गोतनी के फूटली आँख

www.bhojpurisahityangan.com

ना सोहास। घर में कोरहाग। डाइन कहाय लगली। सास रोअस आ खोबसस ई हमार बेटा के खा गइल। ई बांझी कोख देके डाइनपन सीखले बिया। एहि से एको एकर नान्ह-बार ना भइल। ई कोरहाग सुनिता के सहाय ना। ससुराल में रहल मोसकिल। नईहर आ गइली। नईहरो में भाई-भउजाई खातिर भारी। कतही के ना रहली सुनिता। धीरज के घर सम्हारे के गरज आ सुनिता के एगो नया जिनिगी शुरु करे के ललक। बिआह भइल।

धीरज के छुट्टी खतम होते, जाय के बेरा सुनिता के समझावत कहलें– "हमार बिआह करे के कवनो सवख ना रहे। बाकिर ई लइकन खातिर कइनीं। ई लइकन के अपना जमला लेखा मनिह। बढ़िया से बनइह-खिअइह आ खइह। समय पर लइकन के इसकूल भेजिह। टियूसन मत छोडइह। जवन ओह लोग के मन करी ऊहे बनइह। एह लोग खातिर तुही सब बाड़ू। लाढ़-प्यार खूब करिह कि ई लोग के मतारी के इआद मत आवे।"

सुनिता कहली– "भले हमरा देहि के ना ह लोग। बाकिर अब हमरा खातिर दोसर के बा? इहे नू बा लोग। हम ई लोग के मतारी से कम प्यार ना करब। एह लोग के कुछुओ कमी ना करब। रउआ चिन्ता मत करीं। हम सब सम्हार लेब।"

धीरज दुबई खातिर रवाना। मोसकिल से छव महीना लइकन के बढ़िया से आ समय पर खायक-पानी देलीं। गते-गते बदलाव आवे लागल उनुकर स्वभाव में। शुरु क देली सौतेली मतारी वाला व्यवहार। घर में सास-ससुर रहलें ना। उनुका सुख चैन आ आराम के जिनिगी जीए के सवख चढ़ल। अब लइकन के प्रताडना शुरु कइली। ना टाइम पर नास्ता ना इसकूल। रात में अधिके रोटी बना देस। ऊहे बासी रोटी खिआ के भेजस इसकूल। देरी ले सुते के आदी। बरतन लइकन से धोवाअस। ई सिलसिला रोज के। अपना पसन के खायक बना के खा लेस। जवन बांचे तवन लइकन के मिले। कबो पेट भरे कबो ना। खायक मांगला पर गारी मिले। कबो दिन भर उपासे राखस। अक्सरहां सुनिता बाजार जाके कुछुओ खा लेस। इसकूल से अइला पर लइकन से कह देस कि हमार मिजाज ठीक नइखें। सब बरतन परल बा, दूनो मिल के धोअ स। खा स खायक बना के। सोझा मुंह खोलल मना। लइकन के सेहत खराब होखे लागल।

राम सुंदर एक दिन उनुका घरे गइलें। लइकन के दशा देख, पूछले– "काहे दुबरा गइल लोग? तोहरा लोग के तबियत ठीक बा नू?"

www.bhojpurisahityangan.com

झटके पर सुनिता कहली– "बड़ा टुनकाह आ निखूराह बा लोग भईया! हरमेश बेमार पड़ते रहे ला लोग।"

राम सुंदर पूछले– "टाइम पर खायक दे ताड़ु नू?"

"अइसे काहे कह तानी भईया! हमार लइका ना ह लोग?"

"भले हमार कोखी के ना, बाकिर हमरा खातिर इहे नू बा लोग? हम एहि खातिर नू आइल बानी?"

"ना दुबराइल बा लोग एहि से पूछनी हा"

"जानत नइखी रउवा कि ई कतना निखूराह बा लोग"

"ठीक बा एह लोग के खाय के कमी मत करिह"

"ना भईया कवनो चीज के कमी बा? सब कुछ त भरल बा।"

चिकन बात करे में महारत हासिल रहें सुनिता के। राम सुंदर समझा बुझा के लवट गइले। बाकिर सुनिता के खराब लागल।

धीरज से फोन प उल्टा-पुल्टा समझा देली। आ कहली– "उनुका के घरे आवे के मना कर दीं।"

धीरज पूछले– "का हो गइल! का दिकत बा...? हमार साला हवे त अइहें-जइहें ना...?"

"रउवे उनुका से नाता राखीं। हमरा नइखे राखे के। कह दी हमरा घरे मत आवस। ऊ आदमी ठीक नइखन।"

आरे... कुछ बताव... का भइल...? कुछ बोललें हां...?"

"सब फोन पर बता दीं...? जब आइबि तब बताइबि।"

धीरज के मन मे सुनिता के बात घूमे लागल। काहे सुनिता कहली कि ऊ ठीक आदमी नइखन। मन में शक पैदा हो गइल धीरज के।

एक दिन इसकूल बस से उतरते भगिना-भगिनी से भेंट हो गइल राम सुंदर के। मामा के देख के रोवे लगले दूनो भाई बहिन।

राम सुंदर पूछले– "काहे रोअ ताड़ लोग? का दिकत बा? बतवले लोग– "माई खायक ना बनावेली। रोज बासी रोटी खा के इसकूल जाय के परेला। टिफिनो ना देली। खायक बनावे के कहला पर गारी देली। देरी तक सुतल रहे ली। हमनिये

www.bhojpurisahityangan.com

से खायक बनावे के कहेली। कहेली कि अपने से बना के खा स। ना त उपासे जा स। कबो-कबो इसकूल से अइला प खायक ना बनल रहे ला। कबो-कबो उपासे रहे के परेला।"

"सुन के राम सुंदर के आँख डबडबा गइल। एगो होटल में ले जाके खिअइले आ कुछ पइसों देलें। कहले कि तु जा लोग तोहरा बाबूजी से बात करब।"

राम सुंदर धीरज से फोन पर ई सब बात बतावे के शुरु कइलें। तसही धीरज कहले रउवा हमनी के परिवार में दखलदांजी मत करीं। ना हमरा घरे आज से कबो जाइब। ना हमार लइकन से बात करब।

धीरज के बात सुन के राम सुंदर हकबका गइलें। सोचे लगलें का से का हो गइल। ऊ समझ गइले कि सुनिता कुछ उल्टा पुल्टा समझा देलस उनुका के। चिंतित रहे लगलें।

सुनिता बेलगाम, मन बढ़ू होत चल गइली। उनुकर व्यवहार लइकन संगे क्रूर होखे लागल। लइकन के खिलाफ हरमेश शिकाइत करे लगली कि ई निमन से पढ़त नइखन स। टियूसन छोडा देली बाकिर टियूसन के नाम पर जादे ही पइसा मांग लेस। सब पइसा बटोरस।

धीरज के घर के किरायदार संदीप के सुनिता के घरे आइल-गइल बढ़ गइल। लइकन के इसकूल गइला के बाद संदीप कवनो ना कवनो बहाना बना के सुनिता के घर में आके घंटन बतकही करस संदीप। गते गते संदीप के प्रति सुनिता के आकर्षण बढ़ गइल। मिलल जुलल अउरी बढ़ल। ई मिलल जुलल गते गते प्यार में ढ़ले लागल। कुछुये महीना में लगाव अतना बढ़ गइल कि दूनो के एक दोसरा से मिले बिना ना रहल जाय। ना मिलला पर बेचैनी बढ़ जाय। दूनो के घनिष्टता सीमा लांघे के बेचैन। पेट के सुख आ एकान्त, देह के भूख बढ़ावे में कारगर भइल। एक दिन दूनो सीमा लांघ गइलें आ एक दोसरा में समा गइलें। ऐस-मौज के सिलसिला शुरु। ई सिलसिला आगे बढ़त गइल। सुनिता के देह के भूख मेटावे में कवनों कोर कसर ना छोड़स संदीप। गते गते ई बात के भनक कुछ लोग के लागल। मोहल्ला में चर्चा शुरु। दूनो के एक दोसरा से बोले के तरीका मे बदलाव। आखिर एगो जवान लइका बिना मरद-मानुस के घर में रोज का करे जाता आ कवांड़ी बंद क के का करता? मुहांमुही बात सगरे फैल गइल। राम सुंदर तक ई बात पंहुचल।

www.bhojpurisahityangan.com

राम सुंदर धीरज से ई बात फोन से बतवलें धीरज उल्टे राम सुंदर पर गरम, कहलें– "हमार मेहरारु पर लांछन लगावे के हिम्मत कइसे भइल? गाय जइसन सीधवा मेहरारु पर लांछन लगावत शोभा दे ता..? राउर आपन बहिनिया रहित त अइसन लांछन लगइती...? रउवा के कहले रहीं नू कि हमार परिवार से दूर रहीं। आपन परिवार के मामला में कवनो राउर हस्तक्षेप बरदास्त ना करब।"

जबाब सुन के राम सुंदर के बोलती बंद।

सुनिता, संदीप के प्यार के जाल में अतना अझुरा गइली कि निकलल असंभव। सुध-बुध गवां देली। संदीप के हर बात माने के तइयार। संदीप बहुते शातिर। संदीप के सलाह से सुनिता घर के जमीन अपना नावे करावे के फेर में लाग गइली। संदीप अब सुनिता के इस्तेमाल करे लागल। एकर अंगुरी के इसारा पर नाचे के तइयार सुनिता। सुनिता पर धीरज आँख बंद कके विश्वास करस। स्वाभाविक बा कि पति-पत्नी के संबंध विश्वास के नीव पर टिकेला। अब सुनिता के मन छल कपट से भर गइल। सही-गलत के परख करे के विवेक खतम हो गइल सुनिता के। के आपन के पराया फरक करे के क्षमता ना रहल सुनिता के। धीरज अइले त सुनिता जमीन अपना नावे करवा लेली। ई समझा-बुझा के कि जमीन रउआ नामे रही त भाई के हिस्सा देवे के परी। एह में पइसा बाबूजी के लागले बा। हमरा नावें रही त केहू हिस्सा ना बंटाई। धीरज सीधवा, सुनिता के चाल ना भांप पवले। फेर दुबई जाते इनिकर खेल शुरु। राम सुंदर के जानकारी ई बात के भइल त ऊ भांप गइले कि सुनिता कवनो बडहन कांड करी। एहि से मने-मने कहलें कि अब ई घर, बरबादी के कगार प। एक दिन संदीप विआह के प्रस्ताव रखलें सुनिता से। सुनिता तनी अचकचइली आ कहली–अतना हड़बड़ाइल काहे बानी संदीप जी। हम कतही भागल जा तानी? सबसे बड़ अड़चन ई बा कि हमार सवांग जिन्दा बाड़ें। हम कवनों कुंआर नइखीं नू?

संदीप कहलस– "हमरा खातिर तु कुंआरे बाड़ू। प्यार में का कुंआर आ का बिआहल?"

सुनीता पूछली– "सवांग के रहते दोसर बिआह कइसे होई?"

तोहार संवाग के रहला आ ना रहला से का फायदा?

जे साल में जादे से जादे एक महीना खातिर छुट्टी आव ता। तोहरा के अपना संगे काहे नइखन राखत? जवन सुख सवांग से मिले के चाहीं ऊ सुख तोहरा मिल

www.bhojpurisahityangan.com

ता? ई जवानी असहीं बरबाद हो जाई। ई जवानी थोरही दिन के बा। जेकरा से सालभर प भेंट-मुलाकात हो ता। ओह आदमी के संगे रहल आ ना रहल बरोबर। कहाव ह कि मेहरारुन के भात आ भतार से मन ना भरे। तोहरा त भात मिल जाता बाकिर भतार...?

संदीप के प्यार में पागल रही सुनिता। ओकर हर बात उनुका निमन लागे। सोचें विचारे के विवेक शून्य। ऊ बिआह करे पर राजी हो गइली।

सुनिता अब धीरज से छुटकारा पावे के उपाय रचली। कहल जाला कि त्रिया चरितर दइबों ना जाने। धीरज छुट्टी अइले त बेटा-बेटी के खायक बनावत देख के सुनिता से पूछलें "ई लोग खायक काहे बनावऽता? तु का कर ताडू? तोहर मिजाज ठीक बा नू...?

"हम ठीक बानी। हमरा का भइल बा?"

"ई लोग खायक बनाई त पढ़ी लोग कब...?"

"हमरा से खायक ना बनी। हम लौड़ी ना हई कि रोज एह लोग के खायक बनाई। छव महिनवा नइखे लोग कि एह लोग से खायक ना बनी।"

"हम तोहरा से बिआह एहि खातिर नू कइले रहीं...? हमार लइकन के खायक बनइबू आ खिअइबू, खईबू? घर सम्हारे खातिर नू बिआह कइले रहीं? अइसे त सब पढ़ाइये चौपट हो जाई।"

"हम कवनो जिनिगी भर के ठीका लिखइले रहीं...?"

ई का कहत बाडू? कुछ बुझाता तोहरा? अगर तोहार कोखी से जनमल रहित लोग त असहीं करतू...?

"रहित तब नू...? हम का करती आ का ना करती?"

"तोहरा से नइखे होत त हम एगो दाई रख दे तानी। सब काम करी।"

"दाई ना रखाई।"

"दाईयो ना रखबू आ खायको ना बनइबू तब का करबू?"

"हम नइखीं जानत।"

www.bhojpurisahityangan.com

"आखिर का चाहत बाड़ू...? अबकी बेर जहिया से आइल बानी एको दिन निमन से बात ना कइलू। का बात बा? रोज भनर-भनर कइले रह ताड़ू? मुंह फुलवले बाड़ू। कवनो चीज के कमी बा...?"

"ई घर में तोहार लइका रहिहें स त हम ना रहब।"

"अच्छा त कहां भगा दी...?"

"हम नइखी जानत।"

"ठीक बा होस्टल में भेज दे तानी।"

"छुट्टी में घरे नानू अइहें स...?"

"ई कइसे होई...?"

"ना होई त हमही घर छोड़ के जा तानी। ई घर में रहीहें स त हम घर में ना रहब।"

"तोहरा का हो गइल...? हमरा बुझाते नइखे...? अतना मनमानी हमरा भी ना चली।"

"त का करब, मारब का...? हम जाइबि त जाइबि। केहू ना रोकी।"

"धीरज सोचले कि नइहरे जाई, अउरी कहां जाई?"

"सुनिता बैंग उठा के घर से निकल गइली। संदीप राह में खाड़। दूना संगे निकल गइलें।"

धीरज तनाव में। कुछ दिन के बाद संदीप के सहयोग से तलाकनामा बनवा के लवटल सुनिता।

धीरज से कहलस सुनिता– हम तोहरा संगे ना रहब। तु आपन राह, आ हम आपन राह। हम तलाक लेहब। ई तलाकनामा पर साइन करीं। तलाकनामा देख के धीरज भौचक। चेहरा पर पसेना आ गइल। पांव तले जमीन खिसक गइल। कवनो राह ना लउके धीरज के। सुनिता के मनावे के बड़ी प्रयास कइलें। बाकिर सब बेकार। सुनिता के तनिको माया ना। तनिको एहसास ना कि हम का करत बानी। गाँव समाज के लोग का कही...? का समझी...? निमन कही कि जबुन कही...? लोग के नजर से गिरब की बांचब? इज्जत-प्रतिष्ठा सब दाव पर। जिद पर अड़ल। धीरज के लाख समझावल बुझावल सब पानी में। दुसर बिआह क के पछतावे लगलें।

www.bhojpurisahityangan.com

मजबूरन तलाक पेपर पर साईन कइले। धीरज से छुटकारा पा गइल सुनिता। अउरी बेलगाम। अब त बेनाथ-पगहा के। खुला आसमान में आजाद पंछी। केहू रोके वाला ना केहू टोके वाला।

अभी दुइयो दिन ना भइल धीरज से कहलस– "काल्हु से ई घर छोड़ द। आपन लइकन के संगे जहां मन करे चल जा। ई घर हमार नावे बा। धीरज के घर छोड़े परल। लइकन के संगे राम सुंदर के घरे जाके रावे लगलें।"

राम सुंदर कहलें– "अब रोवे से का होई? चिरई चुंग गइल खेत। हम मना करत रही कि दोसर बिआह मत कर।"

सुनिता कुछुए दिन बाद संदीप संगे बिआह क लेली। अभी सालो ना लागल कि संदीप के मोटर साईकिल से धक्का लागल। दवरे पर खतम। सुनिता के आंखि के लोर ना सुखे। सोचे लगली कि का कइनी, आ का पइनीं?

www.bhojpurisahityangan.com

संगोरल सपना

ओह घरी गाँव में खेती-गिरहस्ती के काम हल-बैल से होत रहे। धान-गहुंम। बैल से दंवाये। गिरहत आपन सांवग के हिसाब से हरवाह राखस। जगरनाथ गाँव के एगो बड़ गिरहत के हरवाही करत रहन। हरवाही आ मजदूरी उनुकर जीविका के साधन। बूढ़ मतारी दबा-बीरो के भरोसे। एगो बेटा आ दुगो बेटी के लालन-पालन में बहुत दिकदारी होखे। घर में तंगहाली से हालत पातर। दूनो बेकत के जांगर ठेठावला के बादो देहि पर सुबहित बस्तर मोसकिल। तब जगरनाथ के छोट बेटा आठ बरिस के रहे। ऊहो दिन भर भइस के चरवाही में मसगुल। ऊ रोज गाँव के इसकूल ओरे भइस चरावे। इसकूल के गेट पर खाड़ हो के पढ़त लइकन के छोटू निहारे। बीतत समय के साथे ई ओकर आदत में सुमार हो गइल। घंटन खाड़ होके इसकूली लइकन के निहारे आ सोंचे– "काशु! हमहूं पढ़ति"।

ओकर गाँव के मूलचंद एगो शातिर अपराधी रहे। कतना बार जेल जा चुकल रहे। छोटू के ऊपर ओकर नजर लागि गइल। एक दिन पीछे से कान्हा पर हाथ रख के कहलस– "इहवां तू रोज खाड़ हो के इसकूल में पढ़त लइकन के काहे देखल? तोहरो पढ़े के मन बा का"?

हमरा त पढ़े के बहुते मन करेला चाचा। बाकिर बाबूजी रोज भइस चरावे खातिर भेज देलें। एको दिन इसकूल ना भेजसु। घरहूं में सिलेट-पिनसिन नइखें जे सांझियो के बेरा पढ़ी-लिखीं...।

"अगर पढ़े खातिर गाँव में ना, शहर में तोहार जोगाड़ लगा दीं त कवनो हरज...? शहर में चलब नू...?"

"चाचा, हमरा पढ़े के मन अतना करेला कि तू जहवां कहब तहवां चलबि...!"

"ठीक बा।हम शहर ओरे जा तानी। उहां तोहरा के पढ़े के जोगाड़ कऽ के आइबि त चलहि हमरा साथे। हम उहा तोहरा पढ़े खातिर एगो इसकूल में नाम लिखवा देबि आ उहें रहि के तू पसन से पढ़ाई करीह।"

www.bhojpurisahityangan.com

"ठीक बा चाचा! हम जरूर चलबि।"

एक हप्ता बाद मूलचंद शहर से आइल आ दाव लागते एक दिन छोटू के लेले शहर उड़ि गइल।

मोल-तोल पहिले से कइलें रहे। एगो सेठ के हाथे छोटू के पंद्रह हजार में बेच देलस। चले के बेरा मूलचंद छोटू के समझावत कहलस– "सेठ जी बहुत पइसा वाला आदमी बानी। इहां के कवनो बाल-बच्चा नइखें। तोहरा के इहां के आपन बेटा बना के राखबि आ पढ़ाइबि। काल्हु तोहार नाम सेठ जी इसकूल में लिखवा देबि, ठीक से तू रहिह...।"

किरिन डूबत-डूबत भइस हांकि के छोटू घरे खूंटा पर बान्हि देत रहे। बाकिर आहे दिन गधबेर से अन्हार हो गइल। छोटू भइस लेके घर ना पहुंचल, त जगरनाथ ओकरा के खोजे खातिर बधार में गइलें। भइस त मिलल बाकिर छोटू के अता-पता ना रहे। भइस हांकि के घरे ले अइलें। आ फिर छोटू के खोजे लगलें। सगरे खोजलें। बाकिर छोटू ना मिलल। छोटू के मतारी, बेटा के आसरा में रात भर रोअत रहि गइली। जगरनाथ के आंखि के नींद परा गइल रहे। बिहान हो गइल बाकिर छोटू ना आइल। लोग के सलाह पर गुमसुदगी के रिपोर्ट लिखवावे खातिर थाना गइलें। थानादार डांटि के भगा देलस आ कहलस– "जाके हितई-नतई खोज के तब अइहें रिपोर्ट लिखावे।"

गरीब के मदद करे खातिर थाना-पुलिस ना ह। जगरनाथ हितइयों में खोजले बाकिर छोटू ना मिलल। एके बेटा रहे जगरनाथ के। आँखि के सोझाा अन्हरिया छा गइल। बुढ़ापा के सहारा होइत। बिलख-बिलख के रोवे लगलें।

एने छोटू हँसी-खुशी पढ़े के सपना लेले सेठ के घरे रहि गइल। ओह दिन त सेठ जी छोटू के खूब बढ़िया से खिआ-पिआ के रखलें। बिहान होते छोटू सेठ जी से पूछलस– "चाचा जी! आजु हमार नाम इसकूल में लिखाई नू...।"

सेठानी कहली– "अरे तू इहा पढ़े खातिर आइल बाड़े? भइल बाड़े पढ़निहार...! चल... झाडू उठा के सब घर बहार आ पोछा मार। एकरा बाद सब बरतन जूठे परल बा, मांजि दें।"

"बाकिर चाचा जी त काल्हु कहले रहीं कि इसकूल में तोहार नाम लिखवा देबि...!"

www.bhojpurisahityangan.com

सेठ जी कहलें– "कान खोल के सुन ले। तोरा के पंद्रह हजार में किनले बानी। काम करे खातिर, पढ़े खातिर ना। अब तोरा के जवन काम कहाता, ऊ चुपचाप करु। तु अब एइजा से भाग ना पइबे।"

सेठ जी के बतकही सुनते छोटू रोवे लागल। कहे लागल– "हम इहां ना रहब। हम घरे जाईब। हमरा के छोड़ द, चाचा! मूलचंद चाचा हमरा के इहां पढ़े खातिर लेके आइल रहन। हम काम ना करब। हम घरे जाईब।"

सेठ जी छोटू के गाल पर तीन-चार तबड़ाक मार देले। छोटू जमीन पर औंधे मुंह गिर गइल। गिरला के बाद लात से मारे लगले सेठ जी। बेहोस हो गइल, छोटू। फिर थोरे देरी में होश आइल त फिर सेठ जी मारे लगलें। छोटू डर के मारे कांपे लागल। जतने रोवे, ओतने पिटाय। ओह दिन छोटू के दिन भर आ रात के खायक ना दिआइल। भूख से छोटू के हालत खराब हो गइल। एगों बच्चा के सहे के तागदे कतना? टूट गइल छोटू। आपन नियति मान के सेठ जी के घरे काम करे लागल। बाकिर यातना के सिलसिला ना रुकल। छोट-छोट गलती पर बहुत पिटाई होखे। निरबंशी सेठानी त अउरी निर्दयी रही। कतना बेर ओकरा के रड़ गरम कके दाग देले रही। दरद आ दुख से तड़प के रहि जाय छोटू।

समय पलटा मरलसि। घूरा के दिन पलटेला। एक दिन सेठ जी के घरे चार आदमी अइले। सेठानी छोटू के चाय बनावे के कहली। एक कप बिना चीनी के। गलती से छोटू सब चाह में चीनी डाल देलस। सेठानी सुगर के मरीज रही। एक घोंट चाह पिअते, दांत पिसत ओह आदमिन के सोझे छोटू पर कप के सब चाह उझिल देली, सेठानी। ऊपर से चार-पांच तबड़ाक मारिओ देली। छोटू ऊहें गिर गइल। जोर से चिचिआ के रोवे लागल। जहां-जहां गरम चाय परल रहें फोड़ा हो गइल। छोटू लहर से छटपटाये लागल। बाकिर सेठ-सेठानी के मन तनिको ना पसिजल। सेठ-सेठानी के पासे पइसा त अनघा रहे बाकिर मोह-माया तोरियो बरोबर ना।

सेठानी ओह आदमिन के सोझा छोटू के ऊपर चाय फेंकले रही। ओह में से एक आदमी के इ घटना बड़ा कचोटलसि रात भर ओह आदमी के नींद ना आइल। होत पराते ऊ अदमी "बचपन बचाओं" नाम के एन. जी. ओ. के संचालक के सूचना देलस। छोटू के साथे अत्याचार देख के ओकर मन झकझोरा गइल रहे। ऊ एन. जी. ओ. के संचालक ओह आदमी से समपर्क कके थाना में रिपोर्ट दर्ज करा के छापा मारे के आग्रह कइलें।

www.bhojpurisahityangan.com

ओह संचालक के आग्रह पर सेठ जी के घरे छापा परल। ऊहां से छोटू के छोड़ावल गइल। छोटू के बेआन पर सेठ-सेठानी के साथे मूलचंद पर केस भइल।

संचालक छोटू के अपना साथे ले गइलें। इलाज भइल छोटू ठीक हो गईलें। बाकिर छोटू गुमसुम रहे लगलें।

केहू से बातचीत ना करस। अकेले बइठ के ओह दुख आ अपना बाप-मतारी के इयाद कके रोअत रहत-रहन। संचालक के लाढ़-प्यार से छोटू कुछे दिन बाद संचालक संगे घुलमिल गइलें। सब घटना संचालक से बतवलें कि कइसे-कइसे सेठ जी के घरे पहुंचनी। संचालक छोटू से पूछलें– अब तोहरा मन का कहता? पढ़े के मन बा? ई सुनते छोटू के आंखि से लोर ढ़र-ढ़र गिरे लागल। अबले ओकर सपना मर गइल रहे। बाकिर संचालक के लाढ़-प्यार से ओकर मुअल बचपन फिर से जिन्दा हो गइल।

छोटू के एगो इसकूल में नाम लिखवा दिहल गइल। छोटू बड़ा लगन आ मेहनत से पढ़े लगलें। पढ़े-लिखे में बहुत तेज रहन। गरमी के छुट्टी होते छोटू संचालक कें साथे अपना गाँव गइलें। बाबू-माई से भेंट कके फिर संचालक के साथे वापस आ गइलें। उनुका पढ़े के सपना उदवेगलें रहत रहे। उनुकर पढ़ाई में लगन देख के संचालक खूब खुश रहन। मनगर पढ़े लगले छोटू। इसकूल मे इम्तिहान में टॉप भइलें। फिर कॉलेज में नाम लिखाइल। छोटू फेर पीछे मुड़ के ना देखलें। विश्वविद्यालय में टॉपर भइलन। फेर पी.एच.डी. फाइनल भइल त एगो कॉलेज मे सहायक प्रोफेसर के पद पर बहाली भइल। आ उनुकर संगोरल सपना पूरी गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

जिद

भुनेसर आ भोला दूनों भाई में बहुत मेल-मिलाप रहे। बाकिर शिक्षा के रोशनी से कोसहन फरका। जीविका के साधन खेती-गृहस्थी। सिंचाई के साधन पूरहर होखे से ओह लोग के फसल के उपज बढ़िया हो जात रहे। भोला देह से हट्ठा-कट्ठा रहन। खेती में जांगरतुर मेहनत करे वाला। ताकतो में उनुका के केहू हाथ ना लगा पावे। बाकिर एकदमें सीधवा। केहू कवनो काम अर्हा देवे त ऊ बात ना उठावत रहन। सभका दुख-सुख में हरमेश तत्पर। गाँव भर के चहेता। भुनेसर बड़ भाई रहन। घर के मालिकांव उनुके हाथ में रहे। पूरा परिवार सुख-चैन से भरल पुरल। भोला के बिआह भइल। मेहरारु के अइला अबहीं सालो भर ना लागि पावल कि घर में कलह बढ़े लागल। भोला के मेहरारु मतेसरी ओतने सुनर-सुभेख रहि ओतने चलविधर। उनुका सेनुर, टिकुली, लुगा-साड़ी के जब जरुरत लागे त भोला, भुनेसर से पइसा मांग के कीन-बेसाह देत रहन। मतेसरी के इहे बरदास ना होत रहे। टुभुके, हमार मरद जी-जान देके खटत बाड़े आ दूगो रोपया खातिर हाथ पसारे के परऽता। ई ढ़ेर दिन ना चली। दिन-प-दिन कलह बढ़त गइल। दूनो भाई अलगा हो गइलें। घर बंटा गइल। अंगना के देवाल घेरा गइल। जवन खेत बधार रहे सभ अलग-बिलग। माई-बाबूजी बंटा गइलें। भोला माई के संगे रखले, बाबूजी भुनेसर के हिस्सा मे।

मतेसरी के बिआह भइला तीन साल हो गइल। कवनो बाल-बच्चा ना भइल। भोला के माई बहुते ओझा-गुनी आ डॉक्टर-वैद से देखवली। कतना देवी-दुर्गा के भखौटी भखली बाकिर तबो मतेसरी के गोदी ना भरल। मेहरारुन के बीच में खुसुर-फुसुर होखे लागल, ई बांझे का त रहि जाई? अबले एगो छुछुनरो ना भइल...!

हँसले घर बसेला। मतेसरी के सास के गुजरला अबहि डेढ़ साल भइल रहे कि मतेसरी के बेटी भइल। दूनो बेकत बहुत खुश भइले। मतेसरी के खुशी आसमान पे रहे कि बांझ के दाग मेटल। बाकिर ई खुशी ढेर ना टिकल। सुबहित दुइयो महीना ना

www.bhojpurisahityangan.com

बीतल रहे कि भोला के गाड़ी से धक्का लाग गइल। अस्पताल जात-जात राहे में गुजर गइलें। मतेसरी के दुनिया उजरि गइल। अन्हरिया छा गइल जिनिगी में। आगा-पाछा केहू ना। पहाड़ अस दुख से उबरल आसान ना रहे। करेजा पथल लेखा कके एह दुख से उबरे के उतजोग में लागल।

लइकन के पोसे-पाले के जिम्मेदारी बाप-मतारी के होला। ओह में से केहू एगो ना रहेला त ओकर जिम्मेवारी दोगिना हो जाला। बेटी पाले के ओलार मतेसरी पर टपकल। बेटी खातिर जीए आ ओकरा के पढ़ा लिखा के ऊ अफसर बनावे के ठान लेलस। ओकर सोच बहुत आगे के रहे। ओकरा पढ़े के उमिर होते गाँव के इसकूल में ऊ नाम लिखवा देलस।

जगन बगले के गाँव के रहन। एहू गाँव में आके टियूसन पढ़ावत रहन। पढ़ावे के ममिला में उनुकर बड़ा नाम रहे। मतेसरी जगन से अपना बेटी रीमा के पढ़ावे खातिर निहोरा कइलस। जगन राजी हो गइलें। ओकरा घरे आके ऊ पढ़ावे लगलें।

मतेसरी आजाद बिचार से जीये वाला मेहरारु। ओकर सोच अलग किसिम के रहे। विधवा होखला के बादो सेनुर छोड़ के सब सभाखन करत रहे। चटकार साड़ी बेलाउज पेन्हे। एही खातिर ओकर गोतनी अनसास आ सीखावस, "विधवा के ढेर तड़क-भड़क वाली साड़ी ना पेन्हे के चाही।" सादा जिनिगी जीये के चाहीं। खान-पान साधारण होखे के चाही।"

बाकिर मतेसरी के एह बात से कवनो असर ना। एह कान से सुने, ओह कान से निकाल देवे। कतना बेर ओकर गोतनी डपटली बाकिर ओकर अल्हड़पन ना जात रहे। गोतनी के बेटा के बिआह के बेरा शुभ काम में हाथ बंटावे चहलस, तसहिं ओकर गोतनी डपटलस– "ई का करत बाड़े? तु विधवा बाड़े... कुछुओ एहसास नइखे? तोरा कुछुओ करे नइखे। शुभ काम से फरका रहे के चाहीं त, चलल ओही में शामिल होखे। तु फरका बइठ के सभ देखु।"

मतेसरी कहलस– "काहे दीदी, हमरा छुये से छुआइन का हो जाई?"

"छुआइन होई कि ना, बाकिर तोरा शुभ काम से फरका रहे के बा।"

"हम अशुभ बानी का...? जे अशुभ हो जाई।"

"विधवा के कवनो मांगलिक काम में शामिल ना होखे के चाहीं। पुरखे-पुरनिया के समय से ई परम्परा चलल आवऽता...। सुरेश बो दीदी आपना विधवा

www.bhojpurisahityangan.com

गोतनी के माथ छिलवा देले रही। अपना बेटा के बिआह के बेरा ओकर नजर ना पड़े, एह से भर बिआह ओकरा के घर से बहरी ना निकले देत रही। बाकिर हम त तोरा जोरे ढेर मरउअत करत बानी।"

"एह में हमार दोष का बा? मरनी-जीअनी केहू के हाथ में नइखे। एक दिन सभका एह दुनिया से जाए के बा...! केहू आगा जाई त केहू पाछा।"

"खबरदार ई बात कहले तऽ। तोर चल गइल त हमरो चल जाव, इहे नू तू मनावत बाड़े...?"

"ना दीदी हम काहे अइसन चाहबि? एगो त हम अभागिन रहीं जे हमरा साथे अइसन हो गइल। हम दुनियादारी बात कहऽ तानी। बिरले केहू सदा सोहागिन रहेला...।"

"तु सरापत बाड़े...। ना चुप रहबे! घरे जो, हम खायक भेजबा देवि।

मतेसरी आँखिन में लोर भरले कहलस– "आजु हम ई प्रन करऽ तानी कि ई परम्परा कबो ना मानब। हम आपन बेटी के बिआह करब त सब मांगलिक काम हम अपने करबि आ रउआ सोझा करब...।" ई बात कहि के अपना घरे आ गइल।

ओह दिन जगन रीमा के पढ़ावे अइलें। मतेसरी उनुका के चाय बना के देलस। ओकरा उदास देखि के जगन पूछलें– "कुछ भइल हा का...? तोहार मुंह रोआइन अस लागऽता।"

जबाब में मतेसरी गुंगी साधि लेलस।

गंवे-गंवे जगन के हमदर्दी मतेसरी के साथ बढ़े लागल। रुपगर आ जवान रहले रहे। ई हमदर्दी गते-गते प्यार में बदले लागल। तब ऊ आधा घंटा अधिके रीमा के पढ़ावे लगलें आ मतेसरी से बतकहिओ करे लगलें। ई सिलसिला लगातार चले लागल। जगन के नजर मतेसरी के चेहरा से ना हटे। आँख के सहारे ओकर दिल में उतरे लगलें जगन। मतेसरी भी मने-मने जगन के चाहे लागल। ई चाहत मिलन खातिर बेचैन कर देलस। एक दोसरा में समा जाये खातिर दूनो के मन बेताब होखे लागल। प्यार के परवान अतना चढ़ गइल कि संगे जीये-मरे खातिर सपना पाले लागल लोग। कहाव हऽ– "आग लहरी त धुंआ उठबे करी।" जेकरा ना जाने के उहो जान जाई। दुनो के प्यार के चर्चा गाँव में मुंहा-मुंही होखे लागल।

www.bhojpurisahityangan.com

भुनेसर दूनो बेकत मतेसरी के समझावे लगलें आ तोपले कहलें– "एकरा के पढ़ा के जज-कलक्टर बनइबे का? एकरा पढ़ला बिना का बिगड़ऽता? इहाँ ढ़ेर लोग के बेटा पढ़ते नइखे, ई बेटी पढ़वला बिना बेचैन भइल बाड़ी। कवनो बेटा का ह कि पढ़-लिख के नोकरी करी? गाँव मे केकर बेटी पढ़त बाड़ी सऽ? एगो नया पर बखेड़ा खाड कइले बाड़ी।"

मतेसरी कहलस– "ई हमरा खातिर बेटा से कम नइखे। बेटा-बेटी में भेद काहे करत बानी...? बेटी जज-कलक्टर नइखी सऽ बनत...? अब त बेटी डी. एम., एस. पी., मुख्यमंत्री बनत बाड़ी सऽ।

भुनेसर कहलन– "ढ़ेर जबान मत लड़ाव... तोरा के अभी समझावत बानी। काल्हु से जगना के पढ़ावे खातिर माना कर दे।"

"काहे...?"

भुनेसर बो कहली– "तोरा कुछ पता बा कि गाँव मे तोरा आ जगना के बारे में लोग का कहऽता? समाज में मुड़ी गड़वावे पऽ तें उतारु भइल बाड़े...?"

मतेसरी कहलस– "कहे दीं दीदी... ऊ सब आदमी जरत बा कि कइसे बेटी पढ़ावतऽतिया...?

भुनेसर बो कहली– "ठीक बा पढ़ाव बाकिर कवनो दोसर मास्टर पढ़ाई त तोरा दिकत बा?"

मतेसरी कहलस– "इहां जे-जे टियूसन पढ़ावऽता सबके बारे में पता कके तब जगन से पढ़ावे खातिर कहलीं। उनुका से बढ़िया केहू ना पढ़ावे। जब पइसा देवे के बा, तब बढ़िया मास्टर काहे ना? ई अपना लेखा पढ़ावत बाड़े। एह चलते जब पढ़इहें त उहे पढ़इहें। दोसर केहू ना।"

भुनेसर बो कहली– "तु कुलखानदान के नाम डूबावे पर परल बाड़े...?

मतेसरी कहलस– "अइसे काहे कहत बानी दीदी... बेटी पढ़ावे से कुलखानदान के नाम डूब जाई का...?"

भुनेसर बो कहली– "बात पलटबे...? तुहू जवान, उहो जवान घर में अकेले बोला के पढ़वावे ताड़े त लोग शक करबे नू करी...?"

www.bhojpurisahityangan.com

मतेसरी कहलस– "करे दीं, जेकरा शक करे के बा ऊ करो। एह खातिर हम सभका से सफाई देत चली का...?"

भुनेसर दाँत पिसत कहलन– "काट के फेक देबि तोरा आ जगनो के। आज से चेत जो...।" कहि के भुनेसर दूनो बेकत अपना घरे आ गइलें।"

बाकिर मतेसरी के ऊपर कवनो असर ना भुनेसर के बात के। आपन बिचार पर अड़िग।

तब देह के भूख आ आपन सपना पूरा करे के ख्वाहिस, दूनो के बीच के दूरी खतम क देलसि।

अजीज आके मतेसरी ओह दिन जगन से कहलस– हमनी के बिआह कर के पति-पत्नी हो जाइब जा त ई सब हल्ला-हँगामा से छुटकारा मिल जाई।

जगन के मन के बात मतेसरी कहि देलस। जगन इहे चाहत रहन।

"बिआह करे खातिर ई गाँव छोडे के परी, काहे कि ई समाज रहे ना दी, आ ना ई बिआह होखे दी। जगन कहलें।

जगन आपन बाबूजी के मन टोवे खातिर ओकरा जोरे बिआह करे के प्रस्ताव रखलें।

जगन के बाबूजी खींस में मात गइलें आ कहलें– "पगला का गइल बाड़े रे...? एगो त विधवा, दोसर में परजात, तीसर में एगो लड़की के मतारी। एकदम नरके में गिरे के तें मन बना लेले बाड़े। तोरा खातिर कुंआर लइकी नइखी स का पैदा भइल रे...? तोरा के हम कहिया से कहत रही कि बिआह कर ले। दुआर पर से केतना अगुआ तु लवटा देले बाड़े। तोरा बिआह करे के बा त हम कुंआर लइकी से बिआह करा देतानी। ओकर भसुर तोरा के काट के रातो-रात खपा दिहे स आ लाश के थाह ना चली।"

जगन कहलें– "ई जात-परजात का होला बाबूजी...? अबले जात-पात में अझुराइल बानी...? दुनिया कहां से कहां चल गइल। रउआ ओहिजा के आहिजे रहि गइनी। जहाँ तक बिधवा के बात बा त बिधवा से बिआह कइल पाप ना हऽ...।"

जगन के बाबूजी कहलें– "बिधवा से बिआह कइल अपसकुन होला। विधवा बिआह कबो शुभ ना होखे। विधवा बिआह समाज में मनाही बा। ई परम्परा बाप-

www.bhojpurisahityangan.com

दादा के समय से चलत आवत बा। तोरा कुछुओ बुझाता कि ना...? तोरा के पढ़ावल सभ गुड़-गोबर हो गइल।"

जगन कहलन– "बाबूजी...। ई सड़ल-गलल परम्परा कब तक ढ़ोअत रहल जाई। एकरा के श्मशान में दफनावे के समय आ गइल बा।"

आँखि गुडेरत कहले जगन के बाबूजी– "तोरा कुकुर कटले बा का रे...? कह दे तानी विधवा बिआह कबो ना होई।"

जगन कहलें– "बाबूजी...! एह में ओकर का दोष बा? ओकरा विधवा होखे के सवख का रहे? ई होनी हऽ हो गइल। आज ओकरा पर बा काल्हु केहू अउरी पर हो सकेला। ई आदमी के हाथ में थोरे बा? विधवा होखल कवनो मेहरारु के वश में नइखे, बाकिर बिआह करे के ओकर वश में बा।"

जगन के बाबूजी कहलें– "ई समाज होखे ना दीं। समाज में विधवा बिआह के मान्यता नइखे।"

जगन कहलें– "भले समाज मान्यता ना दी बाकिर कोर्ट मान्यता दी नू...? हमनी के कोर्ट-मैरेज करबि जा।"

जगन के बाबूजी कहलें– "ओकरा से बिआह करबे त ई घर के दरवाजा तोरा खातिर हरमेश खातिर बंद हो जाई।"

जगन हरहाल में बिआह के खातिर मन बना लेले रहन। शहर जाके संघतिया के मदद से डेरा ठीक कर लेले आ कोर्ट में अर्जी लगा देलें।

एक हप्ता के बाद जगन आ मतेसरी फुर्र हो गइलें। कोर्ट में जाके बिआह कर लेलें। जगन शहर में कोचिंग इंस्टीच्यूट खोल देलें। रीमा के बढ़िया इसकूल में नाम लिखवा देलें। रीमा बी. ए. पास भइली। बी. पी. एस. सी. के इम्तिहान देलस। रीमा के डी. एसपी. के पद पर सेलेक्सन भइल। मतेसरी के सपना पूरा भइल। ओकरा खुशी के ठेकाना ना रहे। खुशी से अतीत के इयाद करत ओकरा रोआई आ गइल। जवन ओकरा साथे भइल रहे। बाकिर मतेसरी के ई खुशी ढ़ेर दिन तक ना रहि पावल। गंभीर बेमारी के चपेट में चपेटा गइले जगन। अस्पताल में भर्ती भइलें। बहुत दावा-दारु भइल बाकिर ना बंचलें।

www.bhojpurisahityangan.com

मतेसरी के जिनिगी में फेर से दुख के पहाड़ टूटल। ई सोच के बिआह कइले रहे कि बाकी जिनगी संगे बढ़िया से निबह जाई। बाकिर प्रकृति के मंजूर ना रहे। प्रकृति के शाश्वत नियम ह, जे आइल बा एक दिन देर-सबेर जइबे करी। जीवन साथी के गुजर जाय से मतेसरी अकेला हो गइल। टूट गइल गते-गते चिन्ता से बेमारी घेर लेलस। जिनिगी के का भरोसा...? आज बा काल्हु ना रही। एही चलते बेटी के बिआह ठीक कइलस आ बिआह करे खातिर गाँव में पहुंचल। गाँव में फेर चर्चा शुरु हो गइल। मेहरारुन में फेर खुसुर-फुसुर होखे लागल– "ई भतर खउके का दो ह...? दू-दू गो भतार खा गइल। समय बदल गइल रहे। अब मतेसरी बेटी के चलते समर्थवान हो गइल रहे। कहल जाला– "समरथ के ना कछु दोष गोसाई।" मतेसरी के बेटी पढ़ावे खातिर विरोध करेवाला भुनेसर भी अब एह दुनिया में ना रहि गइल रहन। एह खातिर मतेसरी के मन में अफसोस रहि गइल कि ऊ रहते त देखते कि बेटी के हम का बना देनी।

रीमा के बिआह धूमधाम से भइल। मतेसरी सब मांगलिक काम अपने हाथे कइलस, साथे ओह गोतनी जे अब विधवा हो गइल रही, उनुको से करवलस। ऊहे गोतनी अपना बेटा के बिआह में मतेसरी के मांगलिक काम में ठेके ना देत रही। डांट के भगा देले रही। ऊ गोतनी लाजे-लेहाजे मांगलिक काम से फरका रहे के भरपुर कोशिश कइली। ऊ ना चाहत रही कि ओकर शुभ काम में विधवा होके हाथ, लगाई, बाकिर मतेसरी के जिद के आगे उनुकर कुछ ना चलल। सभ करमठ दूनो विधवा गोतनी मिलजुल के पूरवली।

www.bhojpurisahityangan.com

मलिकार

आजाद देश में सबके आजादी ना। खाली सवर्ण खातिर। शूद्र आ अछूत समाज के लोग के आजादी एकदमें ना। शासक के अदला-बदली भइल। गोरा के जगह भूरा लेलें। दमन तनिको कम ना। जमीनदारी अबो चलन में। वर्णव्यवस्था के सबसे नीचला पायदान के आदमी के कवनो हक-अधिकार ना। ना मानवीय व्यवहार। सब किसिम के बंदिश। दबउअल जादे। बेगारी के चलाना, ना बोले के अधिकार, ना मांगे के हक। जवन मिल जाय तवन ठीक। मुंह खुल गइल त बरिआर सजाय। जमीनदार के दुआर पर खम्भा में बान्ह के पिटाई। लइकन के पढ़ावे के सुगबुगाहट होखे लागल गाँव के दलित समाज में। बाकिर इसकूल मे नाम लिखावल आसान ना। शिक्षक सब सवर्ण। नान्ह जाति के लइका पढे, लोग के बरदास्त ना। कुछ उदार प्रकृति के शिक्षक कबो कबो आवस बदली होके त कुछ लइकन के नाम लिखा जाय। बाकिर क्लास मे फरके बइठावल जाय। ढेर लोग के लइका पढावे के क्षमता ना। गरीबी अतना कि पेट भर जाय त बड़ बात। पेट भरी, तबे दोसर बात सोचाई। जब पेट पहाड़ त दोसर बात दिमाग में कहां से आई...? एहि से शिक्षा सब के पहुँच के बाहर। बिना शिक्षा के बदलाव असंभव।

बाबू भूपेन्द्र सिंह एगो बड़ जमीनदार। आधा दर्जन हरवाह। गरीब आदमी के जीविका हरवाही आ मजदूरी। काम धंधा खातिर जमीनदारे पर निर्भर। ना त निठल्ला। भूखे मुंए के नौबत। रामलगन, बाबू भूपेन्द्र सिंह के हरवाह। सब हरवाहन से जादे वफादार। आ भेदियों। दमन के खिलाफ कबो मीटिंग होखे त, के का कहलस ई सूचना जमीनदार के दे देस राम लगन। दमन के खिलाफ सुगबुगाहट रहे बाकिर खुल के प्रतिरोध संभव ना। ओह जमीनदार के मलिकार कहस राम लगन। मलिकार के आज्ञा के पालन करे मे कवनो कोर-कसर ना। अपना मलिकार के भगवान से कम ना बूझस। कारण की उनुकर ऊहें अन्नदाता। उनुकरे बदौलत इनिकर घर में चुल्हा

www.bhojpurisahityangan.com

जरे। मलिकार के सोझा अपना घरहूं खटिया का, जमीन पर बइठ के बात करे के साहस ना। दूर से देख के खाड़। सबके जेहन मे डर। केहू जुर्रत ना करे, अपना दुआर पर खटिया पर बइठे के। खेंसारी के सतुआ हरवाहन के खायक। मजदूरी मे जौ आ खेसारी छोड़ के कुछुओ ना।

रामलगन के बाबूजी इहे जमीनदार के हरवाही कइले। एक बेर रीन लिहल कबो ना सधे। अपना बाबूजी के रीन लिहल रामलगन सधावस। एहि से रामलगन एगो बंधुआ मजदूर। चाहे गुलाम कहीं। फटेहाली तंगहाली अतना कि देहि पर सुबहित बस्तर ना। एने तोपाय त ओने उधार। रामलगन कमे उमिर से हरवाही करस। पइसा के अभाव मे रामलगन के बिआह देरी से भइल। बिआह भइला अभी हप्तो ना लागल। मलिकार रामलगन के घरे अइलें। ई मलिकार के आदत मे सुमार रहे कि हरवाह-चरवाह के बिआह होखे त कवनो बहाना से ओकर मेहरारु के देखे के फेर में ओकरा घरे पहुँच जास। सुनर-सुभेख होखे तब खैर ना। अपना हबेली मे काम के बहाना बुला के ओहनिन संगे हवस मेटावल आपन हक बुझस।

रामलगन के मेहरारु अंगना मे बरतन मांजत रही। मलिकार बिना खोखले-खंखरले ढूक गइलें। ढूकते उनकर नजर रामलगन के घरनी पर परल। सुनर-सुभेख रहे। ओकरा के देख के मलिकार के नियत खराब। अइसने, ई नेत के रहलो रहन। ई लोग के केहू के मेहरारु के आवरु से खेले में तनिको संकोच ना।

मलिकार कहनी– "रामलगन... तोर मेहरारु बड़ा चुनमुनिया बिया रे। कहां से बिआह कके ले अइले? अच्छा सुन, काल्हु हवेली मे भेज दिहे एकरा के। चाउर झार दीं। झार के खुदी लेले आई। तोहनियो के खाय के हो जाई।"

रामलगन कहलें– "जी मलिकार काल्हु चल जाई।"

बिहान भइला खायक खइला के बाद रामलगन अपना घरनी फूलबदनी के हवेली पहुँचा के हरवाही चल गइले। अनका घर के बायन आ दोसरा के मेहरारु बड़ा नीक लागेली। फूलबदनी के देख मलिकार के हवस उफान पर। अभी थोरहि चाउर झरले रहे, भूसहुला घर में बुलइले ओकरा के। मलिकार के बात उठावल आसान ना। ऊ सोचलस कवनो काम होई। भूसहुला घर मे जाते ओकर छाती पर हाथ ध लेलें। फुलबदनी उनुकर हाथ छोड़ा के कहलस– "ई का कर तानी

www.bhojpurisahityangan.com

मलिकार...? अइसे मत करीं। हमरा के छोड़ दीं। हमरा से ई सब ना होई। जवन रउवा चाह-तानी। ई गलत बा। हमरा के चाउर फटके दीं।

मलिकार डपटले– "चुप... एकदम चुप... छटर-पटर कइले त इहें काट देब।"

तनी डेराइल फुलबदनी। तबो हिम्मत जुटा के कहलस– "राउर मेहरारु आ बेटी बहिन नइखे का...? हमनी के नान्ह जाति के हई जा त इज्जत नइखे...? अपवित्र हो जाई ला जा रउवा सभे तनी सा हमनी से छुअइला से। धरम नसा जाला। अब अपवित्र नइखीं होत...? काहे हमार इज्जत आ आपन धरम नासत बानी...? राउर मेंहरारु नइखे...? ओकर से मन नइखे भरत...?"

मलिकार कस के डपटलें– "चुप... मुंह लड़इबे तू..? तोर औकाद कइसे हो गइल बोले के...? तोर मरद के बोले के औकाद नइखे। ओकरा के ध के जमीन पर पटक देलें। ऊपर चढ़ गइलें। ओकर डांड में चोट लाग गइल। थोरे देर खातिर अचेत भइल। फेर ओकरा संगे आपन हवस मेटइलें। खुदी आ थोरे चाउर देके घरे भेज देलें। आ कहले– "काल्हु आके फेर झार-फटक दिहें।"

रामलगन के औकाद जानते रहन मलिकार। सांझ के हरवाही से अइले रामलगन। सब घटना उनुका से बतवलस फूलबदनी। सोच में पड़ गइलन रामलगन। अब का करीं? चुंगलइ के आदत से अलग-थलग कइल गइल रहे, मोहल्ला समाज से। मलिकार से पूछे के सावंग ना। ममोस के रहे के सिवाय कवनो उपाये ना। ऊ पूछले फूलबदनी से केहू दोसरा से ई बात नानू कहलू...? फूलबदनी ना मे जबाब देलस।

रामलगन कहले– ठीक बा अब जवन भइल तवन भइल। केहू दोसरा से कबो मत कहिह...। मलिकार लोग अइसन करेला। ई कवनो नया बात नइखे। मलिकार हवें कुछ करिय देले त का भइल बा? हम त उनुका के कुछुओ बिगाड़ ना पाईबि। ऊ हमनी के ढेर बिगाड़ दिहें। "हाथी से हथरस...?" ई बड़ लोग ह, जवन चाही करीं। ओह लोग से लड़ाई के मतलब जान गंवावे के परी। ओह लोग के कुछुओ ना बिगडी। उल्टे दोषी ठहरावल जाई हमनिये के। घर में घूस के मारी लोग।

फूलबदनी कहलस– "कहे ला लोग कि हमनी से छुआय से अशुद्ध हो जाला लोग। धरमो नासा जाला। तब हमरा साथे अइसन गलती काहे कइनी मलिकार...?"

www.bhojpurisahityangan.com

रामलगन कहले– "आरे... छोड़ ओह लोग के बात। कथनी करनी में ढ़ेर अंतर होला। कहाव कि "समरथ के कछु दोष ना गोसाई।" ऊ जानस, हमनी के का? गरीब आ कमजोर आदमी के आवरु से हरमेश खेलल गइल। ई कवनो नया बात नइखे।

काल्हो बुलवले बानी मलिकार। अब हम ओइजा ना जाइबि"

"ना जइबू त ढ़ेर लफड़ा बढ़ जाई। घरे आके मार पिट करे लगिहें मलिकार। मजूरियों ना दिहें। चुल्हा जरल मोसकिल हो जाई। बिना गइले कवनो गुजारा नइखे।" राम लगन कहलें बिहान भइला फेर फूलबदनी गइल हवेली। थोरहि चाउर झारला आ फटकला के बाद भूसहुला घर में ले गइलें। फूलबदनी आपन नियति समझ के समर्पण कर देलस। उनुका हवस मेटावे मे सहयोग करे लागलीं। ई सिलसिला बन गइल।

गेहूंम के कटनी भइल। दंवरी शुरु रहे। गेहूंम के ढेरी अगोरे खातिर रात मे राम लगन के खरिहान भेज देस मलिकार। अपने रामलगन के घरे आके रात भर फूलबदनी संगे रंगेरेलिया मनावस। अब रामलगन के कुछुओ ना बतावे फूलबदनी। ऊ जानते रही कि बतावे से कुछुओ फायदा नइखे। जब सवांगे के कवनो आपति नइखे तब मेहरारु का करी? फूलबदनी अब खुशी-खुशी मलिकार संगे ऐस-मौज करे।

ओह दिन खूब पछेया हवा झोरले रहे। लुक आ दवंक अतना कि देहि झोकर जाय। रातो में ओतने गरमी। रोज लेखा मलिकार रात मे अइलें। रात मे रंगेरेलिया मनल। बेरी बेरी हवस मेटावे से पिआस लागल मलिकार के। गरमी रहले रहे। फूलबदनी से पानी मंगलें। निअरे लोटा में पानी। लोटा के पानी देलस मलिकार के। हाथ में लोटा लेलें। मुंह में लोटा सटावहीं वाला रहन कि का मन मे आइल। लोटा जमीन पर रख देलें। कहलें– "तोर लोटा से पानी ना पीअब। हम बड़ जाति। तोर लोटा से कइसे पानी पीं। जाति नसा जाई। अतना नीचे ना गिरब। तोर लोटा से पानी पिए के मतलब नीचतइ के हद हो जाई सब कुछ खतम हो जाई। हमार जाति-धरम सब नसा जाई। ई सब बांची, त सब बांची। इहे कारण तोर लोटा से पानी नइखी पीअत। तोर लोटा भा बरतन में खा पी लेब त का बांची..?" जातीय हमनी के शान बा। तोर लोटा के पानी पी लेब त तोरा हमरा में का अंतर रह जाई। पिआस तेज भइल जाए। पानी देख के अउरी पिआस तेज हो गइल। पिआस अतना बढ़ गइल

www.bhojpurisahityangan.com

कि बिना पीअलें मोसकिल। मुंह चटपटाय लागल। बरदास्त से बाहर। एगो तरकीब निकलले मलिकार। फूलबदनी से कहले "तु लोटा के पानी एक-एक कुल्ला अपना मुंह मे लेके फेर हमरा मुंह मे डाल दे। एह से हमार पिआसो मेट जाई। धरमो बांच जाई।" फूलबदनी ओसही कइलस। एक कुल्ला पानी अपना मुंह मे लेके फेर मलिकार के मुंह से आपन मुंह सटा के उनुका मुंह में पुच से डाल देवे। एहि तरि आधा लोटा पानी पी गइले। आपन पिआस मेटवले, आ अपना के नीचे गिरे से बंचा लेलें। धरमो बांचल। जाति के शानो बांचल। अपवित्र होखे के बाते ना।

फूलबदनी के पेट मे मलिकार के बच्चा पले लागल। अब ऊ फूलबदनी से गते-गते दूरी बनावे लगलें। फेर आइल-गइल छोड़ देलें। समय पर फूलबदनी के लइका भइल। मलिकार के रंग रुप पर गइल। मलिकार के लइका रणजय दूई बरिस के उमिर निअरइले। राम लगन आपन लइका के बनवारी नाम रखले। बनवारी सेआन भइल त बाबूजी के सहारा। काम मे हाथ बंटावे। खेत मे जाके थोरे देरी हर जोते बनवारी। जबतक राम लगन आराम करस। पढ़ाई लिखाई से कवनो मतलब ना। शिक्षा कवन चिरई के नाम ह रामलगन कुछुओ ना जनलें। लइका के हरवाह बना के खुश। देह थाकल त ओहि मलिकार के हरवाही बनवारी के धरा दिहले रामलगन। रणजय सेआन भइले त ऊहो आपन विरासत सम्हरलें। ई बहुते बिगडैल प्रकृति के। केहू से मार-पिट करे के उतारु। एकदमे लरछूत। जमीनदार के लइका होखे के ठसक। चाल-चरित्र हू-ब-हू बापे वाला। ओहू से थोरा अधिका। अपना हरवाह चरवाह के बेटी पतोह पर हाथ डाले में तनिको संकोच ना। जइसे ऊ गुलाम होखे। बहुते सोखाह। बिना खोखले-खखंरले केहू के घर आंगन मे ढूके मे हिचक ना। एक दिन बनवारी घरे धड़धड़इले आंगन मे चल गइले रणजय। बनवारी के घरनी आंगन मे खटिया पर बइठ के माथा झार के इंगुर टिकुली साटत रहे। माथ पर आंचर ना। रणजय पूछलें– "कहां बा रामलगना गे?"

बोली सुनके हड़बडाईल खटिया से उतर के खाड हो गइल। कहलस– "बाबूजी, माई घरे नइखी। आई लोग त बता देब।"

रणजय के कबो कबो आवे से ऊ चिन्हत रहे। रणजय ओकरा भीरी जाके हाथ धरे के कोशिश कइलें। बाकिर साड़ी धरा गइल। ऊ घर के भीतर भागल। साडी खुल के रणजय के हाथ में। घर में दोसर केहू ना। रणजय घर में घूंस गइलें। ऊ हल्ला करे

www.bhojpurisahityangan.com

के कोशिश कइलस। बाकिर हल्ला सुनी के। घर एकदमे एकान्त में। रणजय ओकर मुंह चाप के पटक देले। रणजय आपन हवस मेटवलें। आराम से चल गइलें।

सांझ के हरवाहीं से अइलें बनवारी। सुसुक-सुसुक के रोवे लगली ओकर घरनी।

बनवारी पूछले– "का भइल... कवनो दिकत...?"

ऊ कहलस– "मलिकार..."

आरे का मलिकार...? "घरे आइल रहन? का कहलें?"

ऊ बतवलस– "मलिकार हमरा साथे गलत काम बरियारी कइलें? "हमार इज्जत लूट लेलें। कह के रावे लगली। बनवारी के माथा गरम। ऊ लाठी लेके मारे जाय लागल, त रामलगन समझवलें। कहलें– "काल्हु हम बडका मलिकार से कहब। हल्ला गुल्ला करे से अउरी बदनामी होई।" बिहान भइला राम लगन बड़का मलिकार से सब घटना बतवले। त मलिकार कहनीं– "जवान लइका आ ऊहो जवाने। कुछ करिय देलस त का कइल जा सकऽ ता? अब हम ओकरा के मना कर देब। तु घरे जो। अब ऊ अइसन गलती ना करी।"

रामलगन घरे अइले त पूछलें बनवारी– "का कहनी बड़का मलिकार...?"

रामलगन बतवले– "ऊहां के कहनी कि हम चेता देब अब अइसन गलती ना करी।"

बनवारी कहले– "बस... खाली चेता दिहें। अतने...? हम छोड़ब ना उनुका के।" ई घटना के बारे में कुछ लोग जान गइलें। एक आदमी बनवारी से केस करे के सलाह देलें, कि ई बलात्कार के केस बरियार होला। ऊ तुरन्ते बन्हा जइहें।

बिहान भइला बनवारी दूनो बेकत थाना पहुँचलें। थानादार से सब घटना बतवलें।

थानादार कहलें– "तु काल्हे काहे ना अइलें। ई घटना सांच रहीत तु ओहि दिन नु अइतें। तु नान्ह जात, ऊ जमीनदार? तोर मेहरारु से ऊ छूअइहें...? ऊ बड़ जाति के। उनुकर जाति आ धरम नासाई कि ना...? ऊ बलात्कार कइसे करीहें...? आईल बाड़े तु उनुका के फंसावे...?"

www.bhojpurisahityangan.com

सवर्ण थानादार। ऊ एगो जमीनदार के खिलाफ केस लिखो। डांट के दूनो बेकत के भगा देलें।

बनवारी के दिमाग मे प्रतिशोध के आग धधके लागल। अब रणजय के मार के खपावे के फिराक में लाग गइल। अपना साला के गाँव पर बुला लेलें। रहे लागल रणजय के टोह में। कब कहां जालें आ आवें लें। अभी रणजय के हरवाही ना छोडले रहे बनवारी। एहि बहाना हवेली तक आवे जाय के मिले। रणजय एक दिन हितई गइलें। ई जानकारी बनवारी के भइल। इहो जानकारी भइल कि कहां गइल बाड़ें...? बनवारी ओही राह मे घात लगा के सार बहनोई लुका गइलें। तनी अन्हार हो गइल। रणजय अकेले। अन्हार हो जाय से डेगरगर चलत रहन। पीछे से जाके उनका गरदन में गमछा फंसा के पटक देलें। दूनो जन चढ़ गइले रणजय के छाती पर। गला दबा के रणजय के मुआ देलें। लाश खींच के एगो इनार में फेंक देलें।

बिहान बनवारी के सार अपना गाँव चल गइलें। बनवारी अपना काम में। तीन दिन तक रणजय ना लवटले त बडका मलिकार आदमी भेज के पता करवलें। पता चलल कि ऊ तीन दिन पहिलेही लवट गइलें। खोजाहट शुरु भइल। गाँव के चरवाह इनार के चबुतरा पर बइठते भक से महकल। झांक के देखलस त ओह में आदमी के लाश। जोर से चिल्ला के भागल। सगरे हल्ला भइल। गाँव के ढ़ेर लोग जुट गइल। लाश निकलल त रणजय के। थाना के सूचना दिआइल। लाश के लेके पोस्टमॉर्टम खातिर भजलें। ममिला समझत देरी ना लागल थानादार के। शक के सुई बनवारी पर गइल। बनवारी धरा गइले। पिटाई भइल त सब बतवलें कि कइसे-कइसे मडर भइल। बनवारी के संगे उनुकर सारो के सजाय भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

लकीर

शिवेश अपना जातरा खातिर ट्रेन में चढ़लें। बैग आ ब्रीफकेश अपना सीट के नीचे रखलें। अपना बाबूजी के गोड़ छूअत, उनुका के घरे लवटे के कहलें। सीट पर बइठलें। बगल के सीट पर एगो अधेड़ उमिर के आदमी आ उनुका संगे एगो लइकी।

ऊ आदमी पूछलें– "कहां घर ह! बबुआ, कहां जइब...?"

"घर रसुलपुर ह... चाचा जी, बंगलोर जाइब" शिवेश कहले।

"ऊहां नोकरी करे ल का बबुआ...?"

"ना चाचा जी कॉलेज मे जा तानी नाम लिखवावे।"

"राउर, घर कहां ह...? चाचा जी। कहां जा तानी...?"

"सहमतपुर बबुआ, हमनियो के बंगलोर जा तानी।"

"तब त चाचा जी हमनी के जवारिये बानी जा। बंगलोर का करे जा तानी...?"

"ई हमार बेटी शालिनी हई। इनिके नाम लिखवावे।"

आई. आई. टी. बंगलोर इंस्टीचूयट के नाम बतवली शालिनी।

शिवेश कहले– "हमरो त ओहि इंस्टीच्यूट में मेकानिकल इंजीनियरिंग खातिर चयन भइल बा।"

शालिनी कहली– "ई त अजबे संयोग बा। दूनो आदमी के एके इंस्टीच्यूट आ एके विषय के छात्र बानी जा। साथे जवारियों। ई बढ़िया भइल। बाहर में गाँव-जवार के आदमी होखे से एक दोसरा के सहयोग आ बल मिले ला। कवनों किसिम के दिकत भइला प अकेलापन ना महसूस होखे।"

दूनो लोग विषय वस्तु पर बतकही करत आ आपन आपन अनुभव शेअर करत सफर तय कइलें। स्टेशन से उतर के एके टेम्पू से इंस्टीच्यूट के नियरा एगो

www.bhojpurisahityangan.com

होटल में रुकलें। फ्रेश हो के जलपान कइलें। शालिनी अपना बाबूजी के होटले में अराम करे खातिर छोड के शिवेश के जवरे इंस्टीच्यूट पहुँचली। दूनो लोग नाम लिखावे खातिर प्रक्रिया पूरा कइलें। फीस जमा भइला के बाद नाम लिखाईल। संग ही होस्टल के आवंटन भइल। फेर दूनो लोग होटल लवटलें। शालिनी अपना बाबूजी के घरे लवटे खातिर स्टेशन गइली आ गाड़ी पर चढ़ा के दूनो लोग संगही लवटलें। आपन-आपन बैग, ब्रीफकेश लेके आपन-आपन होस्टल में पहुँचलें। पढ़ाई में रम गइल लोग। दूनो लोग के क्लास संगही होखे। क्लास के बाद लाइब्रेरी में संगही पढ़े लोग। दूनो लोग एगो बढ़िया दोस्त बन गइलें। रोज मिले-जूलें से एक दोसरा के प्रति लगाव बढ़त गइल। पढ़ाई खतम होत-होत ई दोस्ती प्यार में बदल गइल। दूनो लोग एक दोसरा के चाहे लगलें। पढ़ाई खतम होते संयोग से दूनो लोग के एके कम्पनी में सलेक्सन हो गइल।

शालिनी कहली– "इहो एगो अजबे संयोग बा। ट्रेन मे अगले-बगल सीट मिलल, आ एके कॉलेज आ एके कम्पनी में नोकरी। ई हमनी के प्यार के अउरी मजबूत बनावे में सुखद संयोग साबित होई।"

रोज संगही लंच करे आ मिले-जुले से प्यार अउरी गहिड़ होत गइल। शालिनी मन में आसरा पलले रही कि शिवेश एक दिन बिआह के प्रस्ताव रखिहें। नोकरी करत दूई साल बितल, तबो बिआह के बारे में मुंह ना खोललें। आखिर शालिनी से रहल ना गइल। एक दिन पार्क में टहलत शिवेश से पूछली– "बिआह के बारे में का सोचलें बानी?"

शिवेश महटिया गइलें ओह दिन। रात में सोचे लगलें कि शालिनी जवारी त जरुर हई, बाकिर कवन बिरादरी के हई? ई बात उनुका मन में चले लागल। शिवेश, गाँव के लोग के सोच से अवगत रहन। शहर के बात कुछ जरुर अउरी बा। बिआह के बात जब शुरु होई त पहिले जाति पुछाई। तब बात आगे बढ़ी।

शालिनी कुछ दिन बाद दोबारा पूछलीं– "ओह दिन के जबाब ना मिलल।"

शिवेश कहलें– "अच्छा! एह विषय पर सोच विचार के फैसला लिआई।"

कुछ दिन बाद शालिनी फेर पूछली– "का विचार भइल, सोचनी कुछुओ...?"

शिवेश पूछलें– "बुरा ना मनबू त एगो बात पूछी...?"

"बुरा काहे मानब पूछीं...?"

www.bhojpurisahityangan.com

"तु कवन बिरादरी से बाडू...?"

"ई काहे पूछत बानी शिवेश जी?"

"पहिले बताव ना...?"

"हम सवर्ण हईं।"

"तब बिआह ना होई शालिनी जी।"

काहे...?

"हम अनुसूचित जाति आ रउआ सवर्ण, त कइसे मेल बइठी...?"

"रउआ जाति-पाति मानिले का शिवेश जी...? हम त ई सब ना मानीं। अतना पढ़ला-लिखला के मतलब का...? अनपढ़ लेखा जब जाति-पाति में अझुराइल रही आदमी तब सब पढ़ल बेकार। पहिले के लोग शिक्षा के अभाव में ई सब मानत रहें। जइसे-जइसे लोग शिक्षित भइल जाता, ई सब खतम होत जाता। अब पुरनका पीढ़ी के, जे बांचल बा ऊहे ई मुर्दा आजुओं ढोअऽता। अब नयका लोग कहां केहू मानत बा?"

शिवेश कहलें– "हमनी के पढ़-लिख के अपना के समय के अनुसार बदल लेनी जा। बाकिर समाज मे अभी बदलाव बाकी बा। आजुओ समाज में जाति-पाति के जड़ बहुते गहिड़ बा। एकर असर अब शहर के संस्थानो में देखल जाऽता। जाति के आधार पर इंटरभीव में नम्बर दिहल जाता। रोज कतही ना कतही जाति के आधार पर उत्पीड़न, अत्याचार, बलात्कार आ इहां तक कि मड़र हो जाऽता। अंतरजातीय बिआह कइला पर प्रेमी-प्रेमिका के पंचायत बइठा के सजाय दियाऽता।"

शालिनी कहलीं– "ई त ठीक बा। अब बहुते कम हो गइल। अबो समाज में अंतरजातीय बिआह होऽता। भले कुछदिन खातिर माई-बाबू रूसे-फूले। आखिर मे मान जाऽता लोग।"

"एहि खातिर सामाजिक बहिष्कारों झेले के परऽता। आ लइका-लइकी के जानो मार दिआऽता। ना त गाँव छोड़े के मजबूर क दिहल जाता। एहि से एह तरह के बिआह करे खातिर सौ बार सोचे के परऽता।" शिवेश कहलें।

शालिनी आ शिवेश के बीच में जाति के मजबूत देवाल खाड़। एहि से शिवेश शालिनी से बिआह के प्रस्ताव अपना ओर से कबो ना रखलें। कारण कि ट्रेन में

www.bhojpurisahityangan.com

शालिनी से बतकही के बेरा शिवेश के अभास हो गइल रहे कि ई सवर्ण हईं। एहि से बिआह खातिर तइयार नइखन। रुढ़ीवादी व्यवस्था से अवगत रहन शिवेश। बाकिर शालिनी के सोच जातीय देवाल ढ़ाह देवे के। जाति से उनुका कवनो फरक ना। ऊ एकदम खुला विचार के। ऊँच-नीच, जाति-पाति, भेद-भाव उनुका एकदमें पसन ना। उनुकर सोच कि इंसान इंसान के बीच भेदभाव काहें? सब आदमी बरोबर। ना केहू बड़ जाति के ना केहू छोट जाति के। एहि सोच के कारण शिवेश के जाति जानलो प उनुका के खूब पसन। प्यार में तनिको कमी ना। अब ऊ हरहाल में उनुका से बिआह करे के मन बना लेली। खतरा से खेले के अड़िया गइली।

शालिनी, शिवेश से पूछलीं– "राउर मन में का चलऽता? राउर कवनो आपति भा मन में दुबिधा नइखे नू...?"

"हमरा आपति ना होखे से सब चीज ठीक हो जाई...? ई संभव नइखे हम जान तानी। राउर परिवार आ समाज के घोर आपति होई।" शिवेश कहलें–

"छोड़ी ई सब बात। हमनी के बीच मे समाज आ परिवार के बाधा भा डर नइखे लावें के। मियां बीबी राजी त का करिहे काजी।" शालिनी बड़ा मजबूती से ई बात कहली।

शिवेश कहलें– "हमनी के ऑफिस में कुछ लइका बाड़े। ऊ तोहर जाति के आ धनाढ़्य भी आ स्मार्ट भी। ओह में एगो लइका तोहरा के पसनो करेला। तु उनुका से बिआह करे के राजी होख, त हम उनुका से बात करब।"

"भले केहू हमरा पसन करे। रउवा छोड के केहू हमरा पसन नइखे। रउरा का चाहत बानी...? बिआह करब कि ना...? अगर रउआ ना करब त हमरा भी दुई गो राह लउकत बा। एगो कि हम जिनिगी भर कुंआरे रह जाइब ना त सुसाइड नोट में राउर नाम लिख के फांसी लगा लेब।"

शिवेश कहलें– "अतना पढ़ लिख के ई सब करे के सोचल उचित बा...?"

नइखे उचित त बिआह करे के राजी होखीं। हम अपना बाबूजी आ माई के हर हाल में मना लेब।"

शिवेश परले पेंच मे ना घोंटते बने ना उगुलते।

www.bhojpurisahityangan.com

एने शालिनी के बाबूजी बिआह खातिर लइका देखा-देखी के काम नधले रहन। एगो लइका पसन कइले। सोचलें कि अबकी छुट्टी आई त बिआह करा के माथा के बोझा उतार देब।

शालिन छुट्टी अइली त घर में बिआह के बतकही सुन के माई से कहली– "बिआह खातिर अतना जल्दी अकुताईं मत। बिआह होई नू...।"

माई कहली– "अकुताय के बात ना बेटी। उमिर प बिआह हो जाला त निमन लागे ला। बेटी अपना घरे-दुआरे रच बस जाली त बाप-मतारी के बड़ी सकून होला। तु आपन छुट्टी बढ़ा ल। तोहार बिआह क के हमनी के गंगा नेहा लेब।"

शालिनी कहली– "अभी छुट्टी ना बढ़ पाई। अभी बिआह के बात मत चलाईं जा।"

माई कहली– "काहे...? कवनो लइका पसन कइले बाड़ू का...?"

लजाते-लजाते कहली– "एगो लइका पसन बाड़े। ऊ हमरा संगे काम करे लें।"

माई, ई बात उनुकर बाबूजी से बतवली।

बाबूजी पूछले– "उनुकर कुल-खानदान के बारे में जाने लू...? के ह कहां के हवें आ कवन बिरादर? ई पता कइला के बादे नू बात आगे बढ़ी?"

शालिनी कहली– "बाबूजी! जाति बिरादरी का पता करे के बा...? ऊ हमरा संगही नोकरी करिले। ऊ हमरो खूब पसन आ ऊहो हमरा के पसन करें लें।"

समझावत कहनी बाबूजी– "नाही बेटी! बिआह-शादी करे के पहिले सब कुछ पता करे से आदमी ठगाय ना। ओहू में जवन लइका बाहर बा, त कइसे पता चली? ऊ कवन जाति के, कहां घर, दुआर, आ उनुकर बाबूजी के नाम-गाँव पता करे के परी नू। मान ल कि कवनो दोसर जाति के होइहें त कइसे बिआह होई...? हमनी के जाति के एगों अलगें प्रतिष्ठा बा।

हमनी के बड़ जाति मे गिनती होला। एहि से सब सोच-समझ के कवनों काम करे के चाहीं। बिआह भइला के बाद पता चली कि नीच जाति के। तब सब ममिला बिगड़ जाई। हमनी के प्रतिष्ठा पर धक्का पहुँची, अउरी इज्जत पर दाग लाग जाई। समाज में मुडी गड़ा जाई। सब लोग थू-थू करी।

www.bhojpurisahityangan.com

अपना बाबूजी के सोच के थाह लाग गइल शालिनी के। ऊ सोचली– "अगर हम बता देब कि शिवेश छोट जाति के हवे, त बाबूजी बिआह ना होखे देब उनुका से।"

शालिनी सोच मे डूबकी लगवली– "आखिर ई जाति, के बनवलस...? काहे के बनवलस? जवना से समाज में विघटन पैदा हो गइल। केहू के बड़ त, केहू के छोट बना के समाज के खंड-खंड कर दिहल गइल। एहू से बड़ बात ई बा कि ई आजुओ ढोआऽता। विदेश के लोग कतना आगे बढ़ गइल। बाकिर इहां के लोग जाति-पाति में अझुराइल। वैज्ञानिक सोच तनिको विकसित ना भइल। ना जाने इहां से भेदभाव कइसे खतम होई? आ कब होई? अतना शिक्षित भइला के बादो लोग जाति व्यवस्था से उबरत नइखे। शिक्षा के मतलब कि आदमी के जीवन में सम्पूर्ण बदलाव होखे। अच्छा इंसान बने। खार्ली इंसान। पढ़ला-लिखला के बादो ऊँच-नीच के सोच खतम ना होई त ना समाज के भला होई ना देश के। दकियानुसी विचार खतम होखे के चाही। लकीर के फकीर बने से ई समाज आ देश आगे ना बढ़ी। ई लकीर के मेटावल जरुरी बा। बाबूजी अतना काहे के पढ़वनी हमरा के! एह से बढ़िया अनपढ़े राखि देतीं। कवनो आपन जाति के दुआर पर बरिआर खूंटा में बान्ह देतीं। बाकिर हम ई बाजा ना बाजे देब। अंतरजातीय बिआह कवनो पाप ना। ढ़ेरे लोग अइसन बिआह कइलें। होखहूं के चाहीं। तबे ई जाति-पाति खतम होई।

छुट्टी खतम होते बाबूजी के संगे स्टेशन पर गाड़ी धरे के बेरा ऊ बतवली– "हम जवन लइका के पसन करी ला। ऊ लइका नाम लिखावे के बेरा साथे गाड़ी में गइल रहन। रउआ उनुके से नाम-गाँव पूछनी।"

शालिनी के गइला के कुछुये दिन बाद उनुकर बाबूजी रसुलपुर जाके ओह लइका के बारे में जानकारी लेनीं। जब मालूम भइल कि ऊ छोट जाति के। त मने-मने खूब खिसिअइलें।

ऊहां पहुंच के शालिनी आपन बाबूजी के विचार छिपावत शिवेश से कहली– "हमार माई-बाबूजी राजी बानी। उहां के कहनी कि जवन तोहरा पसन। तवन हमनियो के पसन।"

शिवेश पूछले– "सांचहूँ...? ऊहां सभे राजी बानी...? हमार बिरादरी बतवलू...?

www.bhojpurisahityangan.com

"हं जी सब कुछ साफ-साफ बता देनी। कुछुओ छिपवनी ना।"

"हमरा त विश्वासे नइखे होत।" शिवेश कहलें।

शालिनी के बात के विश्वास करे के सिवाय कवनो कारण ना लउके शिवेश के। शालिनी से बेहद प्यार रहे उनुका।

शिवेश कहलें– "तोहार बाबूजी के विचार बहुते ऊँच बा। तब तु अपना माई-बाबूजी के इहें बोला ल, हमहूं अपना माई-बाबूजी के बोला ले तानी। ना होखे त गाँवे पर चल के बिआह होखे। इहां बिआह करे के फायदा बा कि ढेर ताम-झाम ना करे के परी।"

"हमार माई बेमार बाड़ी। उनुकर आइल संभव नइखे। बाबूजी उनुका के छोड के आइबि ना। अभी त हम छुट्टी काट के आवते बानी। अतना जल्दी छुट्टी मिली ना। हमनी के कोर्ट में बिआह कके बता दिआई। छुट्टी में चलके जवरे माई-बाबूजी से आशिष ले लिआई।"

शिवेश कहलें– "इहो सुझाव तोहार ठीके बा। बिआह में अनावश्यक खर्च आ समय के बरबादी होई।"

कोर्ट में जाके दूनो जना बिआह कइलें

एने शालिनी के बाबूजी ओह लइका के बारे में पता कके शालिनी से फोन से कहलें– "बेटी! हम रसूलपुर जाके ओह लइका के बारे में पता कइनी। ऊ छोट जाति के बा। ओकरा से बिआह कबो ना होई। ओकरा के तु अब भुला जा। बड़ जाति के लइकी छोट जाति के लइका से बिआह होई...? हम एगों बढ़िया लइका से बिआह करा देब। तु ऊहां खुश रहबू।"

शालिनी कहली– "बाबूजी! हमनी के कोर्ट में जाके बिआह कर लेनीं।"

ई सुनके खींस मे तमतमाइल उनुकर बाबूजी कहनीं– "ई का कहत बाड़े...? होश में बाड़े नू...? अइसे कइसे अपना मने बिआह कर लेले। हम मान जाइबि...? तोर जान मार देब। तु हमार नाक कटवा देले। समाज में मुंह देखावे लायक ना छोडलें। कवन मुंह लेके समाज मे उठब-बइठब...? हमार खानदान मे दाग लगा देले। तोरा के पढ़ावल सब गुड़-गोबर भइल। तोरा के पढ़ा के हम गलती कइनी। फोने पर खूब

www.bhojpurisahityangan.com

गाली-गलौज कइलें। आ कहले कि हमार घर में तोर लात ना परे के चाहीं। हमरा खातिर तु मर-ओरा गइले। फोन कटलें।"

खीसी ओह दिन खायक ना खइले। अहथिर भइले त बेटी-दमाद के निबटावे खातिर उपाय सोचे लगलें। कवनो बहाना से बोला के जान मार के खपा दिआई। जातीय शान, अहँकार में खून खउले लागल। कुछुये महीना बाद शालिनी से फोन पर कहलें– "हम खीस-पीत में तोहरा के ढ़ेर बोल देनी। ऊ सब बात भुला जा। हम बहुते सोचनी त बुझाइल कि बेटा-बेटी के बिआह ओकरा पसन आ इच्छा से करे के चाहीं। जब तोहरा पसन त हमनियो के पसन। हमार आशिष बा कि तु लोग के जिनिगी सुखमय होखे।"

शालिनी पूछली– "हमरा के माफ कर देनी बाबूजी...? हम जानत रही कि रउआ माफ कर देब। फोन पर खुशी से रोवे लगली शालिनी।"

बाबूजी चुप करावत कहनीं– "हम माफ कर देनी। हम खुश बानी। तोहार मतारी अझुरा गइली बरियार बेमारी में। बचिहें कि ना, कहल मोसकिल। आके एक दिन भेंट कर ल। ऊहो दमाद जी के देख लिहें त सबुर-संतोष होई।"

शालिनी, शिवेश से कहलीं– "माई के बांचे के ठीक नइखे। गाँव चल के उनुका से आशिष ले लिआई ऊहो देख लिहें रउरो के।"

शिवेश कहलें– "ठीक बा। चल के भेंट कर लिआई। बाकिर पहिले हमार गाँव चल के माई-बाबूजी से आशिष लिआई। फेर तोहार गाँव चलल जाई।"

तत्काल ट्रेन मे रिजर्वेशन करा के दूनो आदमी गाँव अइलें। शालिनी अपना ससुराल में अइला के सूचना अपना बाबूजी के देली। आ कहलीं– "बिहान हमनी के दस बजे तक ऊहां पहुंच जाइबि।"

ई सूचना मिलते शालिनी के बाबूजी आपन प्लान के मूर्त रूप देवे खातिर बडका बेटा जवन लफुआ रहे ओकरा से कहलें– "ओह सार! चमार के गोड हमार घर में ना परे के चाहीं। ना त घर नपाक हो जाई। ओकरा के राहे में मार देवे के।"

बडका बेटा कुछ गुंडन के साथे घात लगा के राह में खाड़। आ उनुकर बाबूजी छोटका बेटा के लेके चौराहा पर खाड़। जहां से घरे जाय के रोड मुड़ऽता।

www.bhojpurisahityangan.com

शिवेश जसही शालिनी के संगे चौराहा पर बाईक मोड़लें बाबूजी के इसारा होते तड़-तड़ फायरिंग भइल, शिवेश के सीना में गोली लागते ऊहें गिर गइलें। शालिनी अलगा फेंका गइली। भगदर मच गइल। शिवेश के अउरी दू गोली मार के लाश घसेंट के बाबूजी के भीरि पटकलस। तसहीं मोबाइल पुलिस के सायरन सुन के सब फरार। पुलिस लाश के लेके शालिनी संगे अस्पताल ले गइल। अपना सवांग के लाश देख के गाडी में बेहोश हो गइली शालिनी। अस्पताल मे मृत घोषित कर दिआइल। फिर पोस्टमॉर्टम भइल। शालिनी के चेकअप भइल। इनिका चोट कमे रहे। बाकिर उनुका पेट में शिवेश के बच्चा पलत रहे। शालिनी बेआन देली आ बतवली– "हमरा आँख के सोझा हमार भाई आ बाबूजी हमार सोहाग उजार देलें।" रोअस आ कहस– "हम केहू के छोडब ना। सजाय दिलवा के रहब।" पुलिस के दबाव मे तुरंते सब लोग सरेन्डर कइलें। कोर्ट में सबसे बढ़िया, नामी वकील क के केस लड़े लगलीं शालिनी। बड़ भाई आ ओह गुडंन के फांसी आ बाबूजी आ छोटका भाई के आजीवन करावास भइल। शालिनी अपना सवांग के न्याय दिला के सकून के सांस लेलीं। अपना सास-ससुर के संगे जिनिगी गुजारे लगलीं। समय पर लइका के आसरे जिनिगी गुजारे लगली।

www.bhojpurisahityangan.com

कारवां

हाहाकार मचल रहे गोरइया टोला। डेढ़ दर्जन से जादे घर में रोहां-रोहंट परल रहे। बाबूजी हो...! बाबूजी...! भईया हो... भईया...! बबुआ हो बबुआ...! रजऊ हो... रजऊ! कहां गइल हो रजऊ...? छाती पिटत मेहरारून के रोआई से दिल दहल जाय। लोग स्तब्ध। ई का हो गइल, कइसे हो गइल? सबके मन में सवाल। केहू कहल– "जहरीला दारु पी के सोलह आदमी अधेड़ से जवान ले गुजर गइलें। सात आदमी अस्पताल में भर्ती, संघर्ष करत मउअत से।"

दारु के भट्ठी वाला बंद कके फुर्र। चिखना, छोला चाट आ मीट, मछली के ठेला वाला सब फरार।

डी. एम., एस. पी. लेले प्रशासन के सब अमला जुट गइलें। जनता के दबाव पर बहुत देरी बाद ओह क्षेत्र के विधायक से मंत्री बनला के बाद पहिला बेर आगमन भइल। घटना के समझे के प्रयास करत। आ जिला प्रशासन से बात समझला के बाद घड़ियाली लोर बहावत खांची भर आश्वासन देलें। कहलें– "जांच में जे दोषी पावल जाई ओकरा पर कठोर कारवाई होई। दोषी केहू होई बकसल ना जाई। ओकर कतनो ऊपर ले पहुँच होई, ऊ ना बांची। न्याय जरुर मिली। इहो घोषणा कइले कि मृतक के परिवार के उचित मुआबजा दिआई। अस्पताल में भर्ती बा ओकर इलाज के खर्च सरकार उठाई।"

दाह संस्कार खातिर मृतक के परिवार के कुछ रोपया दिआइल। पोस्टमॉर्टम करावे खातिर लाश के अस्पताल भेज दिआईल। स्थानीय पत्रकार मंत्री जी से मुआबजा के रकम घोषित करे के कहलें। मंत्री जी कहनी– "एक आदमी के मुआबजा नइखे नू देवे के। इहां सोलह मृतक के परिवार के देवे के बात बा। मुख्यमंत्री जी से राय-मशविरा कके उचित मुआबजा दिआई।" ममिला के शांत क के मंत्री जी राजधानी खातिर रवाना हो गइनी। डी. एम., एस. पी. लवट के आपन काम में व्यस्त।

www.bhojpurisahityangan.com

अभी महिनों ना लागल। फेर से ऊहां भट्ठी खुलल, सज गइल ऊहां लाइन से चिखना, चाट आ फराई मछली, अंडा आ सुरुआदार मीट के ठेला पर दोकान। पहिले लेखा पिअकड़ी शुरु। जइसे ऊहां कुछ-भइले नइखे। ई कहल जा सकेला– "बैतालवा फेर ओहि डाढ़ी बइठल।" वैध के साथ अवैध दारू-दोकान प्रशासन के इशारा पर फले-फूले। बदला में एगो तय राशि पुलिस प्रशासन के मिले चढ़ावा के तौर पर। छोट-मोट भट्ठी अक्सरहां दलित टोला के निअरे मिले। दलिते से बेचवावल जाला। ई अन्यास ना एगो सोचल समझल एजेंडा के तहत होला। कारण कि ई समाज के लोग के आसानी से दारु मिल सके। पीअकड़ी में लइकन अझुरा जाय। ओहनिनके नशा के लत लाग जाय।

मृतक के परिवार दाह-संस्कार आ क्रिया कइलें। अब मंत्री जी के कहल मुआबजा पावे खातिर मृतक के परिवार डी. एम. ऑफिस के चक्कर लगावे लगलें। ऑफिस से इहे आश्वासन देके लवटा दिआय कि अभी मुआबजा के राशि पास नइखे भइल। कबो-एह महीना त कबो ओह महीना मिले के आश्वासन से लोग के उमेद कायम रहे। साल बित गइल। एको परिवार के कुछुओ ना मिलल। डी. एम. ऑफिस दउरत दउरत लोग के गोड़ के तरवा खींआ गइल।

शुकिया के बाबूजी पी के गुजरल रहन। दारु पिअला से ओकर एकलौता भाई के दूनो आँख के रोशनी चल गइल। कुछुओ ना लउके। घर में मतारी बेटी। दूनो के रोअत-रोअत हाल बेहाल। आगे-पीछे केहू ना। शुकिया के बिआह के उमिर हो गइल रहे। धप धप गोर। बहुते सुनर। करिया साड़ी पेन्हे त ओकर सुनरई में अउरी जादुई आकर्षण बढ़ जाय। बाबूजी के गुजर जाय से बिआह पर ग्रहण लाग गइल। शुकिया गते गते समझे लागल कि ममिला शांत करे खातिर मुआबजा घोषित कइल गइल। बाबूजी के गुजरे आ भाई के आन्हर होखे से बहुते चिन्ता में। ई घटना के भूला ना पावे। पइसा के अभाव में भाई के इलाज ना होखे।

डेढ़ साल बित गइल। दारु माफिअन पर ना करवाई ना जांच के अता-पता। मंत्री जी के कठोर कारवाई करे के आश्वासन शुकिया के आँखि के सोझा नाचत रहे। एतना बड़ घटना के बादो ना दोषी के दंड ना पीडित के मुआबजा। इंसानियत के झकझोर देलस। ओकर आँख खुल गइल। ढेर लोग के आँख ना खुलल ना सबक सीखलें। फेर से ओसहीं पिअकड़ी शूरु हो गइल। शुकिया बहुत चिन्तित। ई विकट

www.bhojpurisahityangan.com

समस्या से निजात कइसे मिली? एहि सोच में डूबल शुकिया। ढ़ेर पढ़ल-लिखल ना। गरीबी के कारण पढ़ाई पूरा ना भइल। बाकिर दिमागी तौर पर बहुत परिपक्व, समझदार आ संवेदनशील। ओहि गाँव में एगो रिटायर शिक्षक। ऊ गुरु रहन शुकियो के। ई ममिला पर उनुका से राय लेवें खातिर शुकिया गुरु जी के घरे गइल।

ऊ सलाह देले– "दारु माफिअन से लड़ाई में पार पावल संभव नइखे। ओहनिन पर प्रशासन के बरदहस्त बा।"

शुकिया पूछलस– "तब कइसे ई समस्या के हल होई...?"

गुरुजी कहनीं– "एके उपाय बा। लोग के पिअकड़ी छोडावल जाय। बाकिर ई अतना आसान नइखे। एकरा खातिर लोहा लेवे के परी। लड़ाई-झगड़ा मारपीट तक हो सकेला। एकर सिवाय दोसर राह नइखे। राह कठिन जरुर बा। कामयाबी जरुर मिली। ई काम अकेले संभव नइखे। पीड़ित मेहरारु के समझा बुझा के एगो संगठन बनावे के परी। संगे कुछ नशा विरोधी विचारवाला आदमी के सहयोग भी चाहीं।"

शुकिया कहलस– "एकरा खातिर हम जान के बाजी लगा देब।"

ई समस्या एके आदमी के नइखे। ढ़ेर लोग परेशान बा। इज्जत बचावल मोसकिल। शुकिया संकल्प लेलस ई समस्या के अंत करे खातिर। पहिले ऊ ओह मेहरारुन से बात करे के शुरु कइलस शुकिया। जेकर ई घटना में सवांग, भाई, आ लइका गुजरल। घरे घरे जाके रोज समझावे। केहू-केहू से अइसन जबाब मिले कि हौसला टूट जाई। लागे अइसन कि ई काम में कामयावी ना मिली। हिम्मत ना हारल शुकिया। निरन्तर प्रयास जारी रहे।

दुखन बो कहली– "अब हम ई सब केकरा खातिर करी? जब हमार सुहागे उजर गइल।"

दुखन बो तरख मिजाज के मेहरारु।

शुकिया कहलस– "बताव चाची..! हमरा घर में के बा? बाबूजी गुजरिये गइलें, भाई आन्हरे। तोहरा त कम से कम एगो लइको बा नू! इहो सेआन होई आ पिअकड़ निकल जाई त का करबू? शुकिया दुखती रग पर हाथ रख देली दुखन बो के।

www.bhojpurisahityangan.com

दुखन बो कहली– "ई काम खतरा से खाली नइखे। खाली तोहरा-हमरा से ई काम होई? एकरा खातिर अउरी आदमी के जरुरत पड़ी।"

शुकिया कहलस– "कवनो काम साहस से होला। ढ़ेर भीड़ से काम बिगड़ जाला। कवनो काम खातिर ठोस आ समर्पित आदमी चाहीं। काम एक दुई आदमी शुरु करेला। कारवां बनत चल जाला। हम बड़ी उमेद लेके आइल बानी तोहरा लगे। तोहरे जइसन कड़क मिजाज के जरुरत बा। तु हमरा साथ द। ढ़ेर लोग साथ दी। ई दुख खाली हमरे आ तोहरे नइखे। सभे केहू एके दुख में गोताइल बा। जेकर केहू ना केहू गुजरल रहे, ओह सब लोग के समझावे में कामयाब शुकिया। अब ओह लोंग के समझावे के जुगत मे लाग गइल शुकिया जेकरा घर मे केहू के सवांग भा लइका बरबाद होत रहन पिअकड़ी से। कुछ अउरी लोग से बात कईल सहयोग खातिर जेकरा दारु-शराब से मतलब ना। बाकिर पिअकड़न से परेसान। कुछ लोग साथ देवे के वादा कइलें, कुछ लोग ना। गते-गते प्रतिरोध के महौल बनाइये देलस शुकिया। मरदाना लोग से कहलस कि फ्रंट पर हमनी के काम करब, जब कमजोर पड़ब जा ऊहां रउआ लोग के मदद आ साथ के जरुरत पड़ी। हमरा अंदाज बा कि रउवा सभे के जरुरत कमें पड़ी। कारण कि पिअकड़ के तागदे कतना...?"

मीटिंग कके "नशा मुक्ति मोर्चा" के नाम से शुकिया के नेतृत्व मे संगठन बनल। रणनीति तइयार भइल। सबसे पहिले टोला में जेकरा घरे दारु चुआवल जात रहे पहिले ओह लोग से निबटे के काम शुरु भइल। इहो तय भइल कि जरुरत पड़ी त थाना से सहयोग लिआई।

सबसे पहिले जे जे दारु चुआवत रहे ओह लोग के चेतावत कहलस शुकिया ई काम आज से बंद हो जाय के चाहीं। ना त ढ़ेर परेसानी में अझुरा जाय के परी। फेर ई मत कहिह लोग कि पहिले से बतावल ना गइल।

डर सबके होला, गला सबके सूखे ला। ई चेतावनी के बाद कुछ लोग छोड़ देलें दारु चुआवल। बाकिर अभी कुछ लोग ना मानल

कुछ लोग कहे लागल– "दारु ना चुआ के बेचब त का खाइबि? केहू दीहि का?"

www.bhojpurisahityangan.com

शुकिया कहलस– "गैर कानूनी काम ह। पुलिस जान जाई तब पकड़ के सीधे जेल भेजी। अफदरा मे फंस जइब लोग। पहिले जब दारु ना चुआवत रह, तब कइसे खात रह लोग...? ई बाजा ना बाजी। ई काम हर हाल में बंद करे के परी।"

दोसर आदमी कहले– "ई पेट पर लाते नू मारल भइल। भट्ठी में दारु खुलेआम बेचा ता। उहो बंद कराव तब नू जानी? के कतना पानी मे बा?"

शुकिया कहलस– "ढ़ेर पानी मत चढ़ाव। तोहरा जवन कहाइल ऊ कर। दोसर के का करऽता ओह से मतलब मत राख। सब गते-गते बंद होई।"

जे ना मानल ओकरा के मीटिंग में बोला के समझावल गइल। इहो कहाइल कि हमनी के नइखी चाहत कि ममिला थाना में जाय। थाना आई त धर के बंद कर दी। फेर कोर्ट कचहरी में दउरे के परी। समझइलो पर जे ना मानल ओकरा के सामाजिक बहिष्कार क के कवनो जरुरत के समान पर रोक लगा दिआइल। नून, तेल, मसाला, आ राशन के अलावा अउरी सब समान मिलल बंद। बंद होते टूट गइले लोग। दारु चुआवल बंद।

अब पिअकड़न से निबटे के रणनीति बनल। ई तय भइल कि जे भट्ठी से दारु कीन के पीअऽता, एकक गो से निबटे के परी। पी के जे लवटे, राह में घेर के ओकरे मेहरारु से पिटवावल जाई। जब ऊ मेहरारु सकान ना ली तब सब मेहरारु झाड़ू, डंडा लेके टूट पड़ी। पिटाई आतने ओछवाहें होई कि नशेडी में डर पैदा हो जाय। ई रणनीति जसही अमल भइल नशेड़ियन के झाड़ू डंडा बाजते नशा फाट जाय। ई सिलसिला लगातार चलल। परिणाम भइल कि ढ़ेर लोग पिअल छोड़ देलें। जे नशा के आदि रहे, उनुका के अस्पताल के नशामुक्ति केन्द्र में इलाज करा के नशा का लत छोडावल गइल। जवन घर के आदमी पिअल छोड़ देले ओहे घर में सुख-शांति बहाल हो गइल।

एकर असर भइल कि दारु के बिक्री एकदमें कम। भट्ठी बंदी के कगार पर। चिखना, चाट, छोला, अंडा, मीट-मछली के ठेला पर के दोकान बंद कके दोसर रोजगार में लाग गइलें। दारु के बिक्री कम होते दारु भट्ठी वाला बौखला गइलें। ऊ शुकिया के नजरी पर चढ़ा लेलें। ई काम छोडे, आ "नशा मुक्ति मोर्चा" से अलग होखे खातिर शुकिया के लोभ, लालच, मोटा रकम देवे के असफल प्रयास भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर शुकिया पर कवनो असर ना। ऊ आपन मकसद पूरा करे खातिर चट्टान लेखा अड़ल। ऊ अपना अभियान से तनिको ना भइली टस से मस।

शुकिया के सबक सीखवें खातिर बलात्कार के योजना बनवले दारु माफिया। ई सोच के कि बलात्कार के बाद समाज मे मुंह देखावे लायक ना रही शुकिया। फांसी लगा के आत्महत्या कर लीं आ हमनी के राह साफ हो जाई।

इहे योजना के मूर्तरुप देवे खातिर एक रात शुकिया के घर में कुछ गुंडा धावा बोल देलें। घर में आन्हर भाई आ बुढ़ी मतारी के छोड़ के केहू ना। घर में बंधक बना लेले माई आ भाई के। घर मे शुकिया ना मिलल त घर मे आग लगा दिआइल। जब आग धधके लागल। केहू देखल त हल्ला भइल। ढ़ेर लोग जुट गइले आ आग बुतइलें। बाकिर शुकिया के माई आ भाई ओहि में जर गइलें। संयोग से ओह रात शुकिया अपना सखी के घरे जन्मदिन के अवसर पर गइल रहीं। देरी हो गइल त ऊ ऊहें सखी संगे सुत गइल। पूरा गाँव में खबर फैल गइल। भाई आ माई के देख के शुकिया बेहोश होके गिर गइल। कोहराम मच गइल। शुकिया के रोआई सुन के सभे रोवे लागल। कुछ लोग से कहत सुनल गइल कि ई कुर्बानी शुकिया के इतिहास में दर्ज जरुर होई।

पुलिस प्रशासन के खबर मिलते थाना पहुँचल। केस दर्ज भइल। लाश के पोस्टमॉर्टम खातिर भेज दिआइल। रोपया के बल पर केस दबावे के भरपूर कोशिश भइल। बाकिर ई संगठन के जुझारुपन से थानादार से लेकर एस. पी. तक अवगत। केस में ढ़िलाई संभव ना। पुलिस के दविश के बाद सब अपराधी सरेन्डर कइले। केस चलल आ सजायो भइल। बाकिर गोरइया टोला नशामुक्त हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

टुअर

देवेश के बाबूजी एगो छोट बाकिर प्रगतिशील किसान। खेती करस वैज्ञानिक विधि से। खेत मे जैविक खाद छोड़ के कुछुओ ना। उपज पुरहर। एक दिन बाइक से गिर गइलें। गोड़ टूट गइल। प्लास्टर भइल। एने खेती के ताव बिगडे लागल। ई काम देवेश सम्हरले। बड़ लइका रहन। बाकिर पढ़ाई छूट गइल। देवेशो अपना बाबूजी के राह पर। इहो खेत में कबो ना डलले रासायनिक खाद। जैविक खाद के उपयोग से उपजो पुरहर। खेत के उर्वरा शक्ति के नोकसानो ना तनिको। खायक भर अनाज रख के भाव देख के बेचाय।

देवेश के छोट भाई दीपेश एहि साल इंटर पास कइलें। पढ़े में होशियार। डॉक्टर बने के मन रहे इनिका।

बाबूजी से दीपेश कहले– "बाबूजी! हम डॉक्टरी के पढ़ाई कइल चाह तानी। एकर तइयारी कोचिंग के माध्यम से होई। हम चाह तानी दिल्ली जाके तइयारी करीं। काम बन जाई।"

बाबूजी कहनीं– "एह पढ़ाई में खरच ढ़ेर होई। कहां से आई अतना रोपया? छोट किसान के साधने शक्ति कतना? खाद, बीया, बिजली आ डीजल के कमरतोड मंहगी। अनाज बेच के सब होखे के। साल भर खातिर खोराकी एहि में। तनी देवेश से राय-सलाह ले ल, बड़ भाई हवें। उनुकर का सोच बा, का चाह ताडें?

दीपेश अपना भइया से ई बात बतवलें।

देवेश कहलें– "छोट भाई पढ़-लिख के डॉक्टर बन जाई त अति उतम। तोहार जिनिगी बन जाई। हमनियों के निमन लागी। बाकिर मालिक त बाबूजी, ऊहां के जवन कहब तवने होई।"

www.bhojpurisahityangan.com

"दूनो भाई बाबूजी के लगे दलान में गइलें। बाबूजी कहनी, का कइल जाई बबुआ? तोहर विचार का बा...?

देवेश कहले– बाबूजी! घर के मालिक रउवा, जवन कहब तवन होई। अइसे हम कहब कि पढ़ लिख के डॉक्टर बन जइहें त बढ़िया होई। छोट भाई हवें। खूब पढ़स, खुशी होई।

बाबूजी सहमती जतवनी। दीपेश रोपया लेके दिल्ली गइले। एगो बढ़िया कोचिंग सेन्टर में नाम लिखवा लेलें। पढ़े के ललक। एक बरिस जम के तइयारी कइलें। नीट के इंतिहान खातिर फारम भरलें। समय पर इंतिहान भइल। कुछुये महीना में रिजल्ट निकलल। सलेक्सन हो गइल। प्राइवेट कॉलेज मिलल। सलेक्सन भइला के खबर बाबूजी के संगही भइयो के बतवलें दीपेश। इहो बतइलें कि अब कॉलेज में नाम लिखावे खातिर जरूरत पड़ी रोपया के।

बाबूजी पूछनीं– "कतना रोपया लागी बबुआ...?

दीपेश बतवलें– "बाबूजी! ई प्राइवेट कॉलेज होखे से थोड़ा जादे रोपया लागी। कॉलेज के फीस आ होस्टल के खर्च जोड़ के बतवलें।

बाबूजी कहनीं– "अतना रोपया त नइखे। टोपरा बेचे के परी।

देवेशो कहलन– "जी बाबूजी! बिना बेचले ना होई।"

सिवान पर वाला टोपर बेच के दीपेश के रोपया दिआइल। दीपेश कॉलेज में जाके नाम लिखवलें। पढ़ाई में जीव-जान से लाग गइलें। छोट गिरहत खातिर लइका के डॉक्टरी पढ़ावल मंहगी के जमाना में आसान नइखे। पढ़ाई खतम होत-होत अउरी टोपरा बिक गइल। थोरहि रह गइल। दीपेश हरेक सिमेस्टर मे बढ़िया नम्बर लावस। क्लास में मेधावी छात्र के रुप में पहचान बनल। एम. बी. बी. एस. के इंतिहान में कॉलेज में टॉप भइले। गोल्ड मेडल, सम्मान मे मिलल। फेर एम. डी. कइले। जब डॉक्टर के डिग्री मिलल सभे खुश भइल। शहर मे प्रैक्टीस शुरु कइलें। गते-गते प्रैक्टीस बढ़िया चले लागल। जल्दीय एगो सहपाठिन संगे कोर्ट मे जाके बिआह कइले। घर मे केहू के जानकारी ना देले। एने अगुआ के आवा-जाही लागल रहे दुआर पर। बिआह खातिर सभे आग्रह करे। देवश एक दिन दीपेश लगे गइलें आ

www.bhojpurisahityangan.com

डेरा मे एगो मेहरारु देख के चिहइलें। देवेश मजरा समझ गइले। दीपेश से पूछले– "ई के ह...?"

दीपेश बतवलें– "भइया! हम इनिके से कोर्ट मे जाके बिआह कर लेनी। ई संगही पढ़त रही।"

देवेश शहर से लवट के बाबूजी से ई सब बात बतवलें। सुन के बाबूजी बड़ी अनराज। कहनीं– "पढ़े खातिर टोपरा बेच के रोपया हम देनी। बिआह अपने मने? ई ठीक ना कइलें। अब भरोसा लायक ना रहलें।"

अभी कुछुय साल बितल। दीपेश के घरनी सुगंधा के मन मे एगो महत्वकांक्षा जागल। दीपेश से कहली– "हमनी के दूनो बेकत डॉक्टर बानी जा, तब काहे ना एगो अस्पताल खोलाय?"

दीपेश कहलें– "अस्पताल खोलल अतना आसान बा...? रोपया कहां से आई...?"

सुगंधा कहली– "गाँव मे खेत रह के का होई...? ओकरे बेच के जमीन लिआइ आ अस्पताल बनी। थोर-ढ़ेर बैंक से लोन लिआई।

दीपेश कहले– "हमरा पढ़ाई मे ढेर टोपरा बिका गइल। ओह मे भइया के हिस्सा बा। हमार हिस्सा त कमे बाचल। हम अपने हिस्सा नू बेचब..?"

"ठीक बा बाकिर मालिक त बाबूजी बानी। सब जमीन बाबूजी के नामे। ऊहां के जवन चाहब तवने होई। कह के देखे में कवन हरज...?" सुगंधा कहली

"अपने मने बिआह कइला खातिर बाबूजी अनराज बानी अब कवनो मदद के उमेद नइखे।" दीपेश कहले

"बाप-मतारी ढेर दिन तक लइका-लइकी से थोरे अनराज रहेलें। गोड़ पर गिर के माफी मांग लिआई बाबूजी से।"

दीपेश दूनो बेकत गाँव गइले। गोड़ पर गिर के दीपेश कहलें– 'गलती हो गइल बाबूजी! पेंचे बिआह करे के परल। हमनी के माफ कर दीं बाबूजी।"

बाबूजी के दिल पिघलल आ माफ कइनी आ आशिषो देनी। बिहान भइला दीपेश कहलें– " बाबूजी! हमनी के शहर मे आपन अस्पताल खोलल चाह तानी।"

www.bhojpurisahityangan.com

बाबूजी कहनी– "खोल ओह मे हमरा का करे बा?"

दीपेश सकुचइले कहले– "बाबूजी! कुछ रोपया घटत बा। हमार विचार कि खेत बेच के शहर में जमीन कीन के अस्पताल बने। फेर आमदनी से गाँव मे खेत किना जाई। हमार पढ़ाई में जतना टोपरा बिकाइल बा ओह से अधिके किना जाई।"

बाबूजी कहनीं– "तोहरा पढ़ाई में ढेर टोपरा बिका गइल। तोहरा कमे हिस्सा बांचल। अब हम दूनो भाई के हिस्सा बांट दे तानी। तु आपन हिस्सा के जवन मन करे तवन कर।"

दीपेश कहलें– "अतना मे कइसे होई बाबूजी..?"

बाबूजी कहनीं– "का चाह ताड़ सब बेच के तोहरे के दे दीं। देवेश कहां जइहें...?"

अभी बतकही होते रहे। तब तक दलान मे देवेश आ गइले। ऊहो सब जनलें-सुनलें।

देवेश सीधवा कहलें– "ठीक बा बाबूजी! इनिकर इहे मन बा त हमरो हिस्सा के टोपरा बेच के दे दीं।"

बाबूजी कहनीं– "सब इनिके दे देब तब तोहार घर कइसे चली? अस्पताल बना लिहें आमदनी होखे लागी आ बात से मुकर जइहें तब...? तब तु का करब...?"

"बाबूजी! दीपेश कवनो पराया थोरे हवें। ई सहोदर भाई, ई हमरा साथे अइसन काहे करिहें? हमरा दुख होई त इनिका निमन लागी।?" देवेश कहले।

बाबूजी कहनीं– "तोहार सोच बहुते उतम। तु एकदम सीधवा आ तोहर मन साफ। बाकिर हमरा इनिका पर भरोसा नइखे। काल्हु का होई के जान ता? काम भइल दुख विसरल। फेर ई गाँव मे कबो तोहरा के देखे अइहें...? तोहरा कुछुओ हो जाई त ई झांकी मरिहें...? एह घरी भाई के दुश्मन भाई। अगर इनिका पर तोहरा भरोसा बा त ठीक। हमरा के दोष मत दिह। आजे तोहरा के चेता दे तानी।"

देवेश कहलें– "भाई पर भरोसा ना कइल जाई, तब केकरा पर कइल जाई...?"

दीपेश कहलें– "भईया के कबो ना छोड़ब। हरमेश खाड़ रहब दुख-सुख में।"

www.bhojpurisahityangan.com

देवेश के हिस्सा टोपरा बिकाइल। दीपेश रोपया लेके शहर में अपना मेहरारु के नावे जमीन लिखइलें। साल लागत-लागत अस्पताल बन गइल। अस्पताल चले लागल। अस्पताल जम गइल बहुत जल्दिये। दूर-दूर के मरीज आवे लगलें। अस्पताल से आमदनी होखे लागल। चार साल बित गइल। देवेश शहर जाके दीपेश के कइल वादा इयाद दिअवलें। आ कहले– "चार साल से अधिके समय बित गइल। गाँव पर एको कट्ठा जमीन ना कीनऽल...? ना झांकी मारे अइल आज तक गाँव में। तु एकदम बदल गइल।"

दीपेश सफाई देत कहलें– "पइसा कहां बांच ता भईया? स्टाफ, डॉक्टर, नर्स के तनखाहे मे सब पइसा खप जाता।" दीपेश के बात सुन के देवेश के समझत देरी ना लागल। सोचे लगलें बाबूजी जवन बात कहले रहीं आज सोझा आ गइल। निराश मन से देवेश लवटलें खाली हाथ।

देवेश के घरनी पूछली– "का भइल-रोपया मिलल जमीन कीने के? हम कहले रहीं कि आपन हिस्सा मत बेचे दीं। बाकिर मेहरारु के भैल्यू कहां...? एगो लइका बा ओकर पढ़ाई लिखाई खातिर कहां से रोपया आई? खेत रहे त बेच के भाई के डॉक्टर बना देनी। अब आपन लइका खातिर कहां से खेत आई? खैर! अब जवन भइल तवन भइल। अब ओकरा खातिर चिन्ता नइखे करे के। आगे जवन होई तवन देखल जाई। जे जइसन करी ओइसन पाई।"

बेटा के शोक सहा जाला, धन के शोक ना सहाय। देवेश के आँख से लोर ढरक गइल। भाई के बयमानी से तनाव में। देवेश के भीतरे-भीतरे चिन्ता से देह खोंखड़ हाखे लागल। साल लागत देवेश के देह आधा हो गइल। एक दिन छाती में दर्द आ बेचैनी भइल। गाँव पर डॉक्टर से देखावल गइल कुछुओ फायदा ना। देवेश के घरनी सुचित्रा शहर ले गइली। दीपेश के अस्पताल मे भर्ती करवली। ई सोच के कि इहां के आपन भाई बानी, बढ़िया से इलाज होई। इलाज में ढेर रोपयो ना लागी। अब एह दुख में साथ ना दिहे तब कब दिहें...? स्टाफ से बतवली कि मरीज दीपेश जी के बड़ भाई हई। एगो स्टाफ ई सूचना दीपेश के देलस। दीपेश कहलें– हमार केहू नइखे। गाँव के सभे केहू ना केहू चाचा, भाई, भतीजा लगवे करी। तब का सबके फ्री में इलाज होई? ऊ लोग मिलल चाही हमरा से तब बतावे के होई कि शहर से बाहर बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

देवेश के भर्ती कइला के बाद थोरहि देरी मे कैस काउन्टर से पचास हजार रोपया तत्काल जमा करे खातिर पर्ची मिलल। पर्ची देख के सुचित्रा के पैर तले जमीन घसक गइल। माथा चकरा गइल। ऊ दीपेश से मिले के कहली। स्टाफ बतवलें– "ऊहां के शहर से बाहर बानी अभी भेंट ना होई। पइसा जल्दी जमा करी तबे इलाज शुरु होई।" पाले जवन रोपया रहे तवन जमा कइलीं। इलाज शुरु कइल जाव। बाकी रोपया जल्दी हो जाई इंतजाम। अपना भाई से फोन कके पइसा मंगली सुचित्रा। उनुकर भाई ओहि शहर के नोकरी में। फोन सुनते तुरंते उनकर भाई रुपया लेके अइले आ जमा भइल।

देवेश के तबीयत जल्दी सुधार होखे लागल। बिहान होत-होत ठीक हो गइलें। अस्पताल से छुट्टी मिलल। दीपेश अपना भाई के देखहू ना अइलें। देवेश घरे आ गइले। आ सोचे लगले कि ओह भाई खातिर आपन हिस्सा के जमीन बेच के अस्पताल बनावे में सहयोग कइनी। आज ऊहे भाई दुख मे मुंह मोड़ लेलें। पइसा नाहिये छोड़तें। कम से कम भेंट करे अइतें। बाबूजी के बात ना मानला के मलाल रह गइल देवेश के। भाई के व्यवहार से अउरी चिन्ता में। आँख के नींद परा गइल। रात पहाड़ अस लागे। मोसकिल से सालो भर ना टिक पवले देवेश। एक रात हार्ट अटैक भइल। गुजर गइलें। सुचित्रा के जिनिगी अन्हार। केहू ना आगे-पीछे। रोअले लोर ना सुखे। चिन्ता से उनुको देह गल गइल। बेमारी चपेट लेलस। एगो बेमारी ठीक होखे त दोसर हो जाय। देवेश के गुजरला सुबहित दुइयो साल ना बितल। आठ साल के लइका दुर्गेश के टुअर बना के हरमेश खातिर ई दुनिया छोड़ के चल गइली। दुर्गेश के देखभाल करेवाला केहू ना। दुर्गेश के मामा आपन बहिन के सब क्रिया करम कइलें। दीपेश अइलों के बादो एगो ना रोपया लगवलें। दुर्गेश के उनुकर मामा लेके अपना साथ ले जाय लगलें। दीपेश रोअत कहलें– "हमरा आठ साल बिआह कइला भइल बाकिर एको बाल बच्चा ना भइल। हमनी के बांझ बांझिन के ठप्पा लाग गइल। हमार इच्छा कि हम इनिका के आपन लइका मान के पोसब-पालब। जतना पढ़िहें ओतना पढ़ाइब।"

मामा कहनीं– "राउर भाई-भउजाई गुजर गइनी तनी झांकी मारे ना अइनीं। जवन भाई आपन हिस्सा के टोपरा बेच के राउर अस्पताल बनावे मे सहयोग कइनी। ओहि अस्पताल में राउर भाई भर्ती, बाकिर तनी देखहू खातिर ना अइनीं। अस्पताले

www.bhojpurisahityangan.com

में रहके स्टाफ से कहवा देनी कि शहर से बाहर बानी। एहि बयमानी आ व्यवहार से राउर भाई टेंशन मे। इहे टेंशन के कारण ऊहां के जान गइल। अब ऊहें के लइका अपना संगे ले जाइब, तब कवन ठीक ओकरा संगे का करब?"

दीपेश ढर ढर रावे लगले आ कहले– "अइसन मत कहीं।"

गाँव घर के लोग आ हित-नाता सभे दीपेश के समर्थन में। साथे इहो कहलें– "इनिका के अपना जमला लेखा मान-जान करिह। टुअर लइका बाड़ें। माई-बाबू के प्यार दिह। अतना प्यार दिह कि इनिका माई-बाबूजी के गुजरला के आह मत आवें। दुलार कइले प लइका सटे लन स।"

दीपेश कहलें– "हम वादा कर तानी। इनिका के कुछुओ दुख-तकलीफ ना होई। आज से ई हमार लइका।"

दुर्गेश के साथे ले गइले दीपेश त उनुकर घरनी सुगंधा देख के नाक भंव चढ़ा लेलीं।

दीपेश कहलन– "अब इनिका के आपन लइका बना के राखल जाई।"

सुगंधा कहली– "हमरा से राय सलाह लेनी..? सब अपने मने। ई ठीक ना कइनीं।"

सुगंधा निष्ठूर स्वभाव के मेहरारु। कंजूस ओसहीं। कवनो नोकर दुइयो महीना ना टिके। पइसा देवे के बेरी हेल हूजत कर देस। दुर्गेश के आवे से अउरी जादे खरच के घर समझस। दुर्गेस के एगो प्राइवेट इसकूल में नाम लिखावे के चहलें दीपेश। सुगंधा मना कर देली। सुगंधा दीपेश पर भारी। दीपेश के अस्पताल गइला के बाद सुगंधा अपने जाके सरकारी इसकूल मे दुर्गेश के नाम लिखवा देलीं। सुगंधा अब घरे रहे लगली। पढाई कम घर के काम जादे करावस दुर्गेश से। थोरे अउरी टांठ भइले त सब काम उनके से करावे लगली। दीपेश मना करस। बाकिर उनुका पर कवनो असर ना। सुगंधा के आगे दीपेश के कुछुओ ना बसाय। मनमना करे लगली। दुर्गेश के घरेलू नोकर बना देली। एहि खातिर दूनो बेकत में अक्सरहां झगड़ा होखे। नोकर लेखा व्यवहार करस दुर्गेश से। खायको टाइम प ना। जादे बासी-तेबासी, टटका कबो कबो। सब काम खतम कइला के बादे खायक मिले। भूखे छटपटा जाय दुर्गेश। काम से चैन ना। घर के सब काम दुर्गेश के जिम्मे। बडहन मकान। घर के झाडू-पोछा, बरतन आ

www.bhojpurisahityangan.com

कपड़ा गांज भर फीचे। बिजली के मीटर उठे के चलते वाशिंग मशीन तोप के रख देली। पानी-पानी करत दुर्गेश के हाथ-गोड के अंगूरी में पानी लाग गइल। पाक गइल सब अंगूरी। दरद से कहंरस। निरवंशी के का मालूम लइका के दुख दरद। निर्दयी व्यवहार करस उनुका से। अंगूरी पाकला से काम ना होखे। काम करे खातिर सुगंधा झाडू के मुठा से मारस। रो-कलप के काम करस दुर्गेश! हाथ-गोड़ के अंगूरी देखावस सुगंधा से। तबो उनुका दिल में ममता ना जागे। हाथ के अंगूरी पाकला से बढ़िया से कपड़ा साफ ना होत रहे। तबो ओह खातिर पिटाई होखे। सरफ-साबुन से अंगूरी अउरी खरछा जाय। अइसे लागे की अब अंगूरी से खून फेंक दी। पुतर के दुख निपुतर का जानी...? खायको भर पेट ना। फजिरे खायक मिलला के बाद एके बेरा रात मे मिले। खइला बिना अउरी ओकर देह सूखा गइल। पानी लागें से हाथ-गोड़ के अंगूरी पाक के बजबजात रहे। दरद से ओकर हालत खराब। रात के नींद दरद से मोसकिल। रोअत-रोअत आँख सूज जाय। हाथ से कपड़ा एकदमें ना फींचाए। तबो मजबूरी में डरे फींचे के परे। अंगूरी पाके से कपड़ा बढ़िया से साफ ना होखे। खींसी सुगंधा एक दिन ओकर हाथ गोड़ पर खौलत पानी उझिल देली। दुर्गेश बाप-बाप चिलाय लागल। आ बेहोश होके गिर गइलें। होश आइल त फेर झाडू के मुठा से मारे लगलीं। मारत-मारत हाथ दुखा जाय तबो छोडस ना ओकरा के। पिटाई से दुर्गेश बेमार। बेमारियो में खायक कमे देस सुगंधा। कहस काम करे के चलते कछलें बा। थोरहि दिन में खटिया ध लेलें दुर्गेश। दीपेश रहस त खायक देस ना त दिन भर भूखे दुर्गेश। दीपेश दवाई देलें। ऊहो दवाई छीन के फेंक देली सुगंधा। कमजोरी जादे होखे से उठल बइठल मोसकिल। परले पेसाब-पैखाना होखे। ओहू खातिर मारस सुगंधा। एक दिन आपन अस्पताल के स्टाफ के बोला के। दुर्गेश के सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा देली।

दीपेश आपन अस्पताल से घरे अइले आ दुर्गेश ना लउकल त पूछलें सुगंधा से– "दुर्गेश कहां बा?"

सुगंधा कहली– "ऊ भाग गइल।"

ऊ भाग कइसे जाई...? ओकरा के भागे लायक छोडले रहू। बिछावन से उठल-बइठल जात रहे, जे भाग जाई?

www.bhojpurisahityangan.com

एहि खातिर दूनो बेकत मे खूब झगड़ा भइल। झगड़ा से दीपेश के बी. पी. ढेर बढ गइल। बी. पी. बढे से ब्रेन हैम्रेज हो गइल। ऊ दवरे पर गिर गइलें। अस्पताल से एम्बुलेंन्स बोला के आई. सी. यू. में भर्ती करवली सुगंधा। इलाज भइल। कवनो फायदा ना। कौमा मे चल गइले।

एने दुर्गेश के अस्पताल मे हालत नाजुक। तबियत मे तनिको सुधार ना। दवाई चले बाकिर फायदा तनिको ना। सांस लेवे में तकलिफ होखे लागल। फेफड़ा एकदम झांझर हो गइल टी. बी. से। खोखत-खोखत मुंह से खून गिरे लागल। अस्पताल के तरफ से इलाज भइल। बाकिर मुंह से खून गिरल ना रुकल। दुर्गेश मउअत से हार गइले। हरमेश खातिर सुगंधा से छुटकारा पा गइलें। उनुकर लाश उठावे वाला केहू ना। लाश के गीजंन होखे के नौबत। फेर लावारिस सेवा केन्द्र के सहयोग से उनुकर दाह संस्कार भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

भूख

लखन लइकाइये से होनहार। गरीबी जा जाति उनुकर राह के रोड़ा। माई-बाबूजी मजदूर। ट्रैक्टर आ मशीन के कारण गाँव मे रोजगार के कमी। अपना-अपना सांवग के हिसाब से ढेर लोग शहर ध ले लें। गाँव में जे रह गइल, कबो काम मिले, त कबो निठल्ला। काम मिले ते चुल्हा जरे ना त उपास। ऊपर से मंहगी कमरतुर। मनरेगा के हाल अजबे। काम कइला के बाद कब मजदूरी मिली, कवनो ठेकान ना। अधिका काम त कागजे पर।

लखन के एगो बड़ बहिन। ओकरो उमिर बिआह के। बाबूजी एतवारु के दोहरा चिन्ता। पेट के सवाल अलगे शाले, त बेटी के बिआह अलगे। एहि से एतवारु चिन्ता आ तनाव में। जगजाहिर बा चिन्ता आदमी के भीतरे-भीतरे खोखड़ कर देला। बेटी के बिआह खातिर ढेर वर देखलें। बेटी शामली सुनर सुभेख रहला के बादो तिलक के मांग से बिआह में अड़चन। सुनर आ हूनर रहलो पर तिलक में किफायत ना। दर्जन भर लइका देखले एतवारु। तिलक के चलते सेट ना होखे बिआह। शामली के उमिर ढलान प। चिन्ता माई-बाबूजी के बढ़ गइल। एतवारु कहस कि भगवान गरीब घर में बेटी काहे के देलन? गरीब आदमी के रीनो मिलल मोसकिल। कवनो दामी समान बिना बन्हकी रखले रीन एकदमे ना मिले। अपना बाबूजी के पेरसानी देखल ना जात रहे शामली से। गते-गते ऊ डिप्रेसन के शिकार हो गइली। दिन पर दिन उनुकर हालत नाजुक। अब घर-परिवार आ समाज खातिर अपना के ऊ बोझ समझे लगली। आ मन बना लेली आपन इहलीला खतम करे के। घर में अकेले। एक दिन फांसी लगा के अपना के खतम क लेली शामली। ई खबर गाँव मे फयलल। जतने आदमी आतने बात। केहू तरस खाय त केहू तिलक-दहेज के बुरा भला बतावे, केहू-केहू अकलंको लगावे से ना चुँके। कहाव ह कि... दुबरा पर केहू एक चभाका मार लेला।

www.bhojpurisahityangan.com

लखन, एतवारु के एगो उमेद के किरण। ऊ चाहस कि लखन पढ़-लिख के नोकरी ध ली, त बुढापा के सहारा होई।

लखन के प्रतिभा आ लगन के ढेर लोग कायल। लोग कहे कि ई पढ-लिख के आपन बाप-मतारी के संगे गाँव के नाम रोशन करी। बाकिर इसकूल के हेडमास्टर नागेसर राय के लखन के प्रतिभा पर जलन। नागेसर राय सवर्ण जाति के। ई जगजाहिर बा कि सवर्ण समाज में छोटे उमिर मे लइकन के जाति-पाति के बात सीखावल जाला। के बड़ जाति के, के छोट जाति के...? केकरा से कइसे बोले आ व्यवहार करे के। जाति-पाति, भेद-भाव, आ ईर्ष्या-द्वेष लइकाइये मे लइकन के दिमाग मे डाला जाला। एही सब दिमाग में भर के लइका सेआन होलें। एहि सोच के उपज नागेसर राय जइसन शिक्षक। दलित जाति के प्रति क्रूर व्यवहार इनिकर। दलित जाति के लइकन के पढ़त देख के ऊ दुःखी। इनिकर सोच कि एहनिन के जातिगत पेशा छोड के कुछ ना करे दोसर काम। दलित जाति के अनपढ गंवार, लाचार वेवश उनुका खूब पसन। बाकिर पढ़ल-लिखल एकदमे ना। एहि से एह विरादरी के लइकन पढत देख के उनुका बरदास्त ना। लखन जइसन होनहार प्रतिभाशाली लइकन से नफरत, जलन के बस इहे कारण। इनिकर भेद भाव के आलम ई कि तनी-तनी, गलती पर दलित बिरादरी के लइकन के बेरहमी से पिटस। इनिकर पिटाई के डर से ढेर लइकन के इसकूल गइल बंद। दलित बिरादरी के लइकन पिटाई के डर से इसकूल छोड देलें तब ऊ आपन कामयाबी समझस। जइसे कवनो जंग जीत लेलें। सवर्ण लइका के बदमासी पर उनुकर हाथ ना उठे। इसकूल मे गैर सवर्ण शिक्षकों से भदे-भाव। जे प्रगतिशील विचारधारा के शिक्षक रहे उनुका ई सब भेद-भाव खराब लागे।

एगो शिक्षक मानस कुमार बदली होके अइले एह इसकूल में। इनिका योगदान कइला महीना बित गइल। जब उनुकर जाति के गंध ना लागल त एक दिन उनुकर जाति पूछिय देलें नागेसर राय। मानस कुमार तनि चिहइलें। ऊ खुला विचार के आ अम्बेडकरी प्रभाव से ओत प्रोत। निः संकोच बतवले– "हम अनुसूचित जाति से हई। आगे कहब त उपजाति भी बता देब।" ना सोचले रहन नागेसर राय कि अइसन बेधडक जबाब मिली। कहलें– "ना ना असही तनी बैंक-ग्रांउड जानल चाहत रही। रउवा बुरा मत मानब।"

मानस कुमार लखन के प्रतिभा आ ओकर गरीबी से अवगत भइलें त बहुत प्रभावित भइलें। ऊ लखन पर विशेष ध्यान आ साथे आर्थिक सहयोग करस। ई बात नागेसर राय के भनक लागल। अब ऊ खुल के मानस कुमार से भेदभाव शुरु कइलें।

www.bhojpurisahityangan.com

उनुका समकक्ष एगो अनुसूचित जाति के शिक्षक कुर्सी पर बइठे सहन ना होखे। मानस कुमार तेज-तर्रार आ अंग्रेजी के विद्वान शिक्षक। नागेसर राय के जबाब देवे मे तनिकों हिचक ना। ऊ माकूल जवाब सुन के चुप। तबो ऊ आपन स्वभाव आ आदत से बाज ना आवस। उनुकर दिमाग में जातिवाद कुट-कुट के भरल। ऊ अपना के कतनो संयम बरतस तबो मानसिकता छलक जाए।

एक दिन मीड डे मील खाय के बेरा एगो सवर्ण लइका के थाली से गलती से लखन से छुआ गइल। ऊ लइका आपन खायक के थाली सहित ओहिजे फेंक के लखन के गारी देत कहलस– "नीच जाति होके हमार थाली छुए के हिम्मत कइसे हो गइल?"

लखन कहलें– "जान-बूझ के ना, गलती से छुआ गइल।"

गारी-गलौज कइला के बाद हेडमास्टर नागेसर राय से शिकायत कइलस। ई सुनते हेडमास्टर साहेब के पारा चढ गइल। आँख लाल-लाल कके खाते खानी लखन के बेरहमी से पिटले। चेतावनी देत कहले– "नीच जाति के लवंडा होके ब्राह्मण के थाली छू देले...? मारत-मारत चमड़ी उधेड़ लेब।" एगो हेडमास्टर के मुंह से जातिगत टिप्पणी सुनके मानस कुमार से ना रहल गइल। प्रतिरोध कइलें। "अइसन व्यवहार से छोट लइकन के मन मस्तिष्क पर का प्रभाव परी, कुछ पता बा रउआ...? अइसने व्यवहार से आगे चलके लइका विद्रोही बन जालें। शिक्षक के काम लइकन के सभ्य नागरिक गढ़े के ह, ना कि विद्रोही बना दीं।"

नागेसर राय कहलें– "उपदेश देवे के जरुरत नइखे। आपन काम करीं...।"

लखन बेमार। इसकूल आके एतवारु हेडमास्टर से पूछलें– "कवन गलती पर लइका के पिटाई क देनी...? लइकन के लइका लेखा मारब कि जाने मार देब...? लइका बेमार हो गइल। कुछ हो जाई तब?"

नागेसर राय के ब्राह्मणत्व जाग गइल कि एगो नीच जाति के आदमी हमरा से सवाल करी...? उनुकर स्वाभिमान पर ठेस पहुंचल।

कहलें– "अरे तु नीच होके चलल बाड़े हमरा से मुंह लड़ावे? ऊ ब्रह्मण के लइका के थाली छुई...? का सीखवले बाड़े ओकरा के...? ऊँच-नीच, बड़-छोट के ज्ञान आ संस्कार देले बाड़े कि ना? ओकरा के सब सीखा के भेजल कर।"

एतवारु कहलें– "इसकूल के हेड़मास्टर होके रावा मुंह से ई सब कहल शोभा दे... ता..? कवनो अनपढ़ आदमी ई बात कही त चल जाई। जब लइकन के जाति-

www.bhojpurisahityangan.com

पाति आ भेद भाव सीखावल जाई, त आगे चल के कइसन समाज बनी? हमार लइका के जाति-पाति का होला मालूमे नइखे। के कवन के जाति के बा ओकरा का मालूम? ई सब रउआ सभे के संस्कार मे बा, हमनी के ना।"

बोल के चल गइले एतवारु। एह से जादा का कर सकेला गरीब आदमी?

कुछ दिन बाद लखन ठीक भइल त इसकूल आइल। नागेसर राय के प्रति ओकर मन मे घोर नफरत। मानस कुमार लखन के समझइले आ पढ़ाई पर ध्यान देवे के कहलें। लखन के प्रति मानस कुमार के अउरी सहानुभूति बढ़ गइल। नागेसर राय के अउरी जलन बढ़ गइल। नागेसर राय इहे गाँव के निवासी जहां इसकूल रहे। इनिकर पहुँच ढ़ेर ऊपर तक। केहू से डर ना। पैरबी आ पइसा के बल पर आपन बदली रोकवा लेस। आ मनमानी करस। जेकर ऊपर बड़े-बड़े अफसर के बरदहस्त बा, ओकर केहू का बिगाड़ी। एहि से ढ़ेर अहंकार बढ़ गइल नागेसर राय के। इसकूल में उनुकर ओदश रहे कि वर्णव्यस्था के अनुसार ही क्लास में लइकन के बइठावल जाई। सबसे आगे ब्राह्मण, क्षत्रिय ओकर बाद वैश्य, आ सबसे पीछे शूद्र आ दलित। एह आदेश के कड़ाई से पालन करावस। मीड डे मील मे एहि तरी करावस। सबसे पीछे शूद्र आ दलित छात्र के बांचल खायक मिले। कबो-कबो आधा पेट, कबो-कबो नून रोटी।

मानस कुमार जानत रहन कि जवन लइका गरीबी आ अभाव झेले ला। ओकर तनिको सहारा मिल जाला त ऊ कुछ ना कुछ कर के देखा देला। सोना आग मे तप के निखरे ला। ओसहीं लखन के मानस कुमार के तनिया सा सहारा मिलल ऊ मैट्रिक के इंतिहान में अव्वल भइल। लखन के अव्वल भइला से नागेसर राय अउरी जलभून गइलें। इनिका खुशी सवर्ण समाज के लइका पास भइला से ना। दुख इनिका लखन के पास भइला से। ई इनिका बरियार मलाल कि नीच जाति के होके कइसे पास भइल। उनुका से बरदास्त ना भइल, मानस कुमार के सोझा कहले– "ई कइसे फर्स्ट हो गइल, राड़-रेआन होके?"

मानस कुमार कहले– "मेरिट केहू के बपौति ना ह सर। बस..., समान अवसर साथे आर्थिक मजबूती चाहीं। पैरवी आ पइसा के बल पर पद पावें वाला ही मेरिट मेरिट चिल्ला ला। आज देश के हालत देखते बानी। आजादी मिलल सात दसक से अधिके, आ लगातार प्रधानमंत्री सवर्ण। तबो देश विकासशील देश के श्रेणी में खाड़। एकर जिम्मेवार के...?

नागेसर राय कहले– "बस करीं...। रउवा त भाषणे देवे लगनीं।"

लखन के आगे के पढ़ाई खातिर मानस कुमार खर्चा उठावे के राजी। कॉलेज में नाम लिखावे खातिर अप्लाई करा देलें। एने नागेसर राय मानस कुमार के इहां से

www.bhojpurisahityangan.com

बदली करावे के जोगाड़ में। इनिका डर रहे कि लखन के पढ़ा के हमनी के समकक्ष बना दिहें। नागेसर राय के पैरवी रहले रहे। कुछुये महीने मे बदली करा देलें।

लखन से मानस कुमार कहलें– "हम जहां रहब तोहार सहयोग करब। घबराय के बात नइखे।"

कॉलेज में नाम लिखा गइल लखन के। दुइये महीना बितल कि मानस कुमार के एगो एक्सीडेन्ट में बरियार चोट लागल। बहुत दिन तक इलाज चलल। बाकिर मानस कुमार के मेमोरी खतम हो गइल।

एतवारु बेमार रहे लगलें। गरीबी के कारण अधेडे उमिर में बुढ़ा लागे लगलें। लखन के माई भी कमजोर। अब भारी काम ना होखे उनुका से। घर में राशन के किल्लत। बनिया उधार देवे ना। एक सांझ खायक बने त एक सांझ उपासे। डीलर राशन देवे में मनमानी। कबो कुछ बहाना त कबो कुछ अउरी। कोटा में राशन आवें त खुशी होखे। कोटा मे राशन बंटाय लागल। राशन उठावे खातिर गइले लखन। एगो त अभाव ओहू में राशन मिलल कम।

लखन पूछलें– "काहे कम देनी चाचा...?"

डीलर कहलें– "ऊपरहीं से अनाज कम आवऽता। जवन आईल बा एहि मे नू सबके बँटाई।"

लखन कहलें– "आनाज कम आवत। कि ओनिये बेच देनी...?"

ई बात सुन के तिलमिला गइलें डीलर। सवर्ण मानसिकता एगो नीच जाति के होके चोर बना देलस। उनुकर प्रतिष्ठा पर चोट पहुँचल।

डीलर कहले– "हमरा के चोर कहे के औकाद कइसे हो गइल तोर...? तनी पढ़ गइले त का तीसमार खां हो गइले? कतनो पढ़बे त नीच के, नीच रहबे।"

लखन कहलें– "हम का रहब, आ ना रहब। तु अइसे काहे कहब...? जतना हमार हक बा ओतना दे द, बात खतम।"

डीलर कहलें– "जतना आइल बा ओहि मे नू सबके देब। तोरा के अलगे से कीन के का दीं...?"

लखन कहलें– "ई हम नइखी जानत। यूनिट के हिसाब से जोड़ के दे द।"

डीलर के आदत रहे गरीब गुरबा के हिस्सा मे कटौती के। केहू पूछे वाला ना। कारण कि बड़ जाति आ दबंग प्रवृति। हिसाब के बात सुनते उनुकर दिमाग के तार झनझना गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

कहलें– "राड़ रेआन होके तनी पढ़ गइले त हिसाब समझइबे...? जवन मिलल ऊ लेके जो। तोरा जवन बुझाई ऊ कर लिहें।"

लखन कहलें– "कवनो घरे से नइख देत, सरकार ओर से मिलऽता।"

डीलर दबंग किसिम के आदमी। लखन से भीड़ गइलें। लखन के गरदन दबावत बहरी कके धक्का जोर से देलस। लखन गिर गइलें चोट आइल।

लखन सोचले ना रहन कि हमरा साथे अइसनो होई। बहुते खराब लागल लखन के। अपमानित महसूस कइले। ई राशन कुछुय दिन चलल। फेर भूखमरी। घर मे कमाय लायक केहू ना, बाबूजी बेमार, माई असही दुबर, कमजारे। घर मे एगो डगरावल दाना ना। एतवारु के तबीयत रोज बिगड़ल जाय। लखन कबो मजदूरी ना कइले रहन। अब मजदूरी करे के अलचारे मन बनवलन। काम मिललो मोसकिल।

कुछ लोग लखन के एह चलतें काम ना देवे कि ई कबो काम कइले नइखे। एकरा से काम उजिआई ना। मजदूरियों दांड जाई। एतवारु के पेट सट गइल पीठ में। केहू अइचा-पइचों कतना दिन दीं। कहाव कि "जेकर गेंहूम डालल बा सूखे के ओकरे पईचां मे आंटा मिलेला।" केहू भी रही, तबे नु दीं केहू? सबके दशा त एके लेखा। भूख बरदास्त से बाहर हो गइल एतवारु के। ऊपर से बेमारी। भात-भात कह के अचेत हो गइलें। ना टिकलें ढ़ेर देरी। कुछुय देरी के बाद दम तुर देलें

लखन के रोअले लोर ना सुखे। भविष्य अंधकारमय। एगो फाटल धोती के कफन दिआइल एतवारु के।

लखन के मन में नफरत आ खींस उफान पर। जाति-पाति, भेद-भाव आ उत्पीडन के ज्वाला उनुका मन मे धधके। विद्रोही हो गइले। लखन के माई भी कुछुये महीना बाद चल बसली। लखन असहाय। केहू आग-पाछा ना। लखन रहे लगलें हरमेश चिंतित। ई सोचले कि ई व्यवस्था से आर-पार के लडाई लडे के परी। ई व्यवस्था के मुख्य वाहक के पहचान कइले। आ लड़े खातिर अपना के मजबूत आ रणनीति बनवले। जीये खातिर कामो जरुरी। कबो काम मिले कबो ना। कबो-कबो भूखे सूते के पड़े। ई विषमता उनुका बहुते सतावे कि केहू खइला बिना मुअत बा त केहू खात-खात। भूख आ नफरत उनुका के झकझोर देलस। संयोग से ऊ नक्सली ग्रुप के समपर्क मे अइलें। बेझिझक शामिल भइले। विद्रोह आ प्रतिशोध के आग उनुका दिल दिमाग पर धधके। नक्सली ग्रुप मे शामिल होके कठोर प्रशिक्षण लेलें। लडाकू दास्ता के कमाण्डर बनलें।

www.bhojpurisahityangan.com

लखन के दिमाग मे डीलर के व्यवहार हरमेश उदबेगे। अपना बाबूजी के मउअत के तत्कालिक कारण डीलर के मानस। उनुकर सोच कि पूरा राशन मिलत रहीत त आज बाबूजी जिन्दा रहतीं।

लखन के नक्सली बनला के जानकारी केहू के ना। घर में खोज खबर लेवे वाला केहू ना। लखन प्रतिशोध के आग में डीलर के टोह में। कब कहां जात-आव ताडे। एक दिन डीलर मुंहलुकान के बेरा मैदान फिरे खातिर निकललें। लखन के साथे दुई आदमी अउरी। डीलर के ध के मुंह आ हाथ बांध के सोन नदी मे ले जाके घटिहां देलें। डीलर से अतना नफरत रहे कि कई टुकड़ा काट देलें। लाश के थाह ना चलल। पांच छव महीना बाद ई ममिला शांत भइल। लखन अब नागेसर राय के निबटावे के फेर मे। नागेसर राय रिटायर होके गाँव मे रहन। रात अन्हरिया। अभी खाय के बेरा ना भइल रहे। नागेसर राय दुआर पर ओसरा में बइठ के बतकही में लीन। लखन पहुँचलें। दुआर पर लालटेन जरत रहे। गाँव में बिजली ना। चेहरा साफ ना लउके।

नागेसर राय पूछलें– के ह...? केकरा से काम बा?

लखन कहलें– "लखना हई हम।"

नागेसर राय पूछले– "कवन लखन?"

"ऊहे लखन जेकरा के एगो लइका के थरिया छुआय गइल रहे गलती से तबो अतना पीटल हमरा के कि हम बेमार हो गइनी।" लखन कहलें।

नागेसर राय कहलें– "अरे तोर बेंवत कइसे हो गइल हमार दुआर पर आवे के?"

लखन कहलें– "बुढ़ारियो मे तोहार अइठन ना गइल? आजो तोहार जहरीला मानसिकता ओतने...? कमी ना भइल तनिको...?"

जातीय अहंकार मे डूबल नागेसर राय लखन के बात सुन के उखड़ गइलें। गारी देत लखन पर टेबुल पर रखल कप चला देलें। लखन फूरती से बगल भइलें। लखन के खीस अउरी बढ़ल। तड़ तड़ दुई गोली नागेसर राय के मार के निकल गइलें। नागेसर राय ऊहें गिर के दम तुर देलें।

www.bhojpurisahityangan.com

शनिचरी

निरंजनपुर जिला मुख्यालय से आठ कोस दूरी पर बसल गाँव। ओइजा के विकास ओइसने भइल बा, जइसन अउरी गाँव में। गाँव से मुख्य सड़क तक जोडेवाली सड़क, जवना के समपर्क सड़क कहल जाला, एक बेरा जवन बन गइल त दोबारा कबो एह सड़क के मरम्मत के काम ना भइल। सड़क आपन बदहाली पर रोअऽता। बिजली के हाल जगजाहिर बा। खंभा बा, बाकिर बिजली के दरसनो कबो-कबो। स्वास्थ्य से जुड़ल कवनो सुविधा आजु ले ना भइल। सरकार के वादा-इरादा हरमेश खोखले साबित भइल।

मतदाता के हिसाब से बात करीं त, इहां आठ हजार से ऊपर बाड़े। राजपूत आ जादव बहुल बाकिर सरब बेरादर के गाँव हऽ। जइसे सब गाँव में दलित बेरादर गाँव के दखिन बसेला, ओसहीं एहु गाँव के दलित दखिने बसल बाड़ें। चमरटोली, दुसटोली आ मुसहर टोली एके में सटल बा। तनिको फरक ना। बोलचाल, रहन-सहन आ घर के पैमाना पऽ मुसहर टोली के लोग के पहचान सहजें में हो जाला।

पढ़ाई-लिखाई के ममिला मे एह गाँव के राजपूत बेरादर सबसे आगे बा। एही चलते नोकरी-चाकरियों में ऊहे आगे। अइसे थोर-ढ़ेर सरब बेरादर नोकरी में बा। ई सुविधा विहिन गाँव में शिक्षा कम बा। चमरटोली मे लोग गरीबी आ अभाव के बादो शिक्षा आ नोकरी में अउरी दलित बेरादरी से आगे बा...।

ओही टोला में ददन आ बबन दू भाई रहन। आपुसी मेल-मिलाप में दूनों भाई के जोड़ देवे वाला सउसे गाँव मे केहू ना रहे। ददन के बाबूजी प्राइवेट नोकरी में रहन। बीतत समय के साथे उनुका लकवा मार देलस। अपंग हो गइलें। घर-गिरहस्थिी में दिकदारी होखे लागल। कुछ बरिस चाचा के बल पर घर-गिरहस्थी खिंचाइल। कहाला, बनले के सब केहू हऽ बिगड़ला पर केहू ना। चाचा फरका हो गइलें। आठवां तक पढ़ला के बाद ददन के पढ़ाई छोड़े के परल। घर के बोझ मतारी-बेटा के कपारे परल। कमे उमिर में ददन गाँव में मजदूरी करिके घर चलावे लगलें। बाकिर अपना

www.bhojpurisahityangan.com

छोट भाई बबन के पढ़ाई ना छोड़वलें। बबन के पढ़ावे खातिर ददन सब दुख-दरद सहे के मन बना लेलन। गाँव में मजदूरी के किल्लत बुझाते ददन कलकता चल गइलें। एगो टायर कम्पनी मे काम मिलल। जवन बांचे तवन घरे भेज देसु, ओहि से घर के खरचा आ बबन के पढ़ाई होत रहे। बबन मैट्रिक में रहन। अबले दुनियादारी के समझ उनुका हो गइल रहे। दुख-तकलीफ आदमी के समय से पहिलहिं पोखता बना देला।

घर के दुख-तकलीफ आ गरीबी बबन के बड़ा कचोटे। टोला-पड़ोस के लोगन के गरीबी भी उनका के झकझोर देत रहे। उनुकर सोच सामाजिक प्रवृति के रहे।

अब बबन बी. एस. सी. में पहुंचि गइल रहन। फाइनल परीक्षा चलत रहे। अबहिं एक पेपर भइल रहे। ओहि दिन कलकता से तार आइल कि ददन अस्पताल में भर्ती बाड़े। बबन कलकता जाए खातिर गाड़ी धऽ लेलें। अस्पताल में पहुँचलें। ददन के पानी चढ़त रहें। भाई के हालत देखि बबन फफकि गइलें। कसहूं, सम्हरले अपना के। भाई के तत्पर से इलाज करावे लगलें। ददन के रहि-रहि के पेट में जोर से दरद उठे। ढ़ेर जाँच-पड़ताल भइल बाकिर बेमारी के थाह ना चलल। बबन भईया के सेवा में दिन-रात एक कइले रहन। भईया के दुख देखि के बबन के लोर ना सूखात रहे। पाँच दिन बाद ददन के सहे के शक्ति जवाब दे देलस। बहुते सुई-दवाई भइला के बादो ददन मउअत से हार गइलन। ना बांचि पवलें। होनी के टारी...? बबन के आँखि के सोझा अन्हरिया छा गइल। बेहोश होके गिर गइलें। बबन टूट गइलें। केहू आगा-पाछा लउकत ना रहे। गाँव पर क्रिया-करम भइल। गते-गते समय के साथ भाई के इयाद कम भइल। पेट के सवाल सोझा रहे। बबन गाँव में लइकन के टियूसन पढ़ावे लगलें। लइकन के संख्या बढ़े लागल। आपने भराव पर मड़ई छवा के ओहि में ऊ पढ़ावत रहन।

कॉलेज मे पढ़ाई के बेरा से ही ऊ प्रगतिशील विचार के छात्र रहन। विज्ञान के छात्र होखला के बावजूदों, ऊ बढ़िया-बढ़िया किताब बढ़त रहन। डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारधारा से प्रभावित रहन। इहे प्रभाव बबन के दिल आ दिमाग पर गहिरा असर डलले रहे। दलित समाज के दुर्दशा बबन के व्याकुल करि देत रहे। बबन चाहत रहन कि समाज में अइसन काम कइल जाव-जवना से समाज में बड़ा बदलाव हो सके। बाबा साहब के नारा– "शिक्षित करो, संगठित करो, संघर्ष करो" के ऊ आत्मसात कइले रहन। ऊ जानत रहन कि बिना शिक्षा के समाज आगे ना बढ़ी। समाज में अंधविश्वास, कुरीति, नशाखोरी अगंद लेखा गोड़ जमवले बा। ई तबे

www.bhojpurisahityangan.com

उखड़ी जब समाज शिक्षित हो जाई। लइका आ लइकी में बिना भेदभाव के शिक्षा के प्रसार होई, तबे समाज पूरा शिक्षित होई। दलित समाज के पिछड़े में एगो सबसे बड़ कारण त शिक्षा बा, बाकिर गरीबी ओह से बड़ कारक बा। दलित समाज में गरीबी के कारण जवन लइका पढ़ ना पावत रहन, ऊ ओह लइकन के बिना फीस के पढ़ावत रहन। ऊ तजबिजलें दलित के सरब बेरादरी के थोर-ढ़ेर लइका-लइकी पढ़त बाड़ें सऽ, बाकिर मुसहर समाज में शिक्षा के नामो-निशान नइखे। पढ़ाई का होला...? एह से का फायदा बा...? एह समाज के कुछुओ जानकारी नइखे। बबन जानत रहन-एह समाज के शिक्षित कइल आन्ही में दीया बरला अस बा। तबो ऊ एह समाज के शिक्षित करे के बीड़ा उठवलें। चुनौती जतने जादा कठिन होला, सफलता, ओतने बढ़िया होला। "ऊ मुसटोली में रोज जा-जा के समझावें लगले", तोहरा लोग के लइका दिन भर मुस मारे के पाछा बधारे-बधारे बिल-दादर कोड़त चल तारें सऽ। कबो हाथ लागल कबो खाली हाथ लवटे के परऽ ता। कबो-कबो सांप काट लेता। तोहनि लोग के आँखि के सोझा सोमारु के लइका के बिल में मुस धरे खातिर हाथ घुंसवलस तऽ सॉप काटि लेलस। लाख झाड़-फूंक कइलों के बादो ना बांचल...।

घुरहू कहलन, "बतिया ठीके कह हव हो बबन भाई, बाकिर कहाँ केवन मुसहर के लइका पढ़त हंवे...? एकदम पीरिये परल हव ने...?

बबन कहलें– "अगर तोहरा लोग के लइका पढ़-लिख जाई आ कवनो नोकरी-चाकरी लाग जाई त निमन होई कि जबुन होई, ई बतावऽ...? बाप-मतारी के काम हऽ कि दुख-तकलीफ सहि के बाल-बच्चा के खूब पढ़ा लिखा दीं, जवना से ओकर जिनिगी बढ़िया से जीये लायक बनि जाओ।"

धुरहू के जवाब ना जुरल। तब मंगरु कहलन, "नीके समुझावऽ हवऽ हो बबन भाई...?

झींगुर हाँ में हाँ मिलवलें।

एतवारु कहलन– "खाए के ठीके ने, नहाए के तड़के।तब ई कांपी-किताब कहां से आवत...?"

तब बबन कहलें– "खाली तोहरा लोग के आपन लइका भेजे के जिमा बा। बाकी हमरा पऽ छोड़ दऽ लोग।"

www.bhojpurisahityangan.com

सब लोग राजी भइल। बबन के प्रयास रंग ले आइल मजबूत इच्छाशक्ति से मेहनत कइल कबो बेकार ना जाला। ठीके कहल गइल बा, "करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान, रसरी आवत, जात ते शील पर परत निशान।" मुसटोली से गवें-गवें कुछ लइका आवे लगलें सऽ। बबन के प्रयास सतत जारी रहे...।

सोमारु के एके लइका रहे। ऊ सॉप काटे से गुजरि गइल रहे। बेटी रहे शनिचरी। बबन जहां पढ़ावत रहन, शनिचरी लइकन के देखा-देखी आके बहरी खाड़ होके ताके-झांके। एक दिन बबन के नजर शनिचरी पर परल। बबन पूछलें– 'तू हू पढ़बे का...?

शनिचरी मुड़ी हिला के हाँ में जबाब देलस।

"ठीक बा काल्हु से तू अइहें...।" बबन कहले।

बबन जानत रहन-जवन समाज में लइका नइखन पढ़त तऽ लइकी का पढ़िहन सऽ...? बिहान भइला पढ़े खातिर शनिचरी साचहूँ आ गइल। बबन सिलेट-पिनसीन देलें। बड़ा मनगर पढ़े लागल। सभन के बबन सरकारी इसकूल में नाव लिखवा देलें। सब पढ़े लगलें सऽ। हरफ के ज्ञान होखे लागल। शनिचरी के पढ़े खातिर बबन सोमारु से बात कइलें। बहुत समुझवलें-बुझवलें। सोमारु राजी हो गइले। शनिचरी के मतारी खिलाफ रहे। शनिचरी मन लगा के पढ़त रहे। कवनो बात बतावल जाय, त ऊ दिमाग में बइठा लेत रहे। ऊ दिमाग से बड़ा तेज रहे। कुछे महीना में ऊ मुसटोली के सभ लइकन से पढ़े में आगे निकल गइल। मुसटोली के कुछुए घर छोड़ सबकर लइका पढ़त रहन सऽ। इसकूलो जाए सऽ। दुपहर के खाना इसकूल में मिल जात रहे। शनिचरी जिद्दी आ अड़ियल स्वभाव के रहे। ओकर जिद के आगे बाबू-माई के कुछुओ ना चलत रहे। शनिचरी के पढ़े के चस्का लाग गइल। मतारी के लाख मना कइलो पर ना मानत रहे। पढ़े रोज जात रहे।

दलित समाज के लइका-लइकी आ ओहू में मुसहर समाज के लइका-लइकी पढ़त देख। उहाँ पैर जमवले क्रांति पार्टी के लोग में बेचैनी समाए लागल। ई पार्टी कबो ना चाहे कि दलित समाज के लइका-लइकी पढ़े। मुसहर समाज के तऽ एकदमे ना। एह पार्टी के सोच हऽ कि दलित समाज शिक्षित हो जाई तऽ झंडा के ढ़ोई...? जिन्दाबाद-मुरदाबाद के नारा के लगाई...? एह पार्टी के राजनीति दलिते समाज से चमकत रहे। एहि चलते अउरी बिरादरी के त ना बाकिर मुसहर समाज के बहकावे में कामयाब हो गइलें। रात में बबन के मड़ई में आग लगवा देल गइल। हांलाकि

www.bhojpurisahityangan.com

बबन जानत रहन कि ई कबो-ना-कबो जरुर होई। दू-चार गो लइका पढ़े आइल छोड़ देलें सऽ। निमन काम में बाधा आवेला एह से बबन विचलित ना भइलें। मुसटोली के लोग के समुझावे के काम हरमेस करत रहन। फेरु मड़ई छवाईल। पढ़ाई के काम शुरु भइल। एह काम के बबन मिशन लेखा करत रहन। कबो-कबो दारु-ताड़ी पीआ के मुसहर-मुसहरिन से क्रांति पार्टी के लोग बबन के फजीहत करा देसु। शनिचरी के मतारी अक्सरहां बबन के गरिआवे– "नतिया बबनवा, डाकछुअवना रे... तोरा अवघट माटी लागत रे... मुतपीअना। एकरा डाक बाबा मउअतिओ ने देहस। तोरा हड्डी में पीलुआ परत रे... नतिया। हमार छौड़ी के बिगाड़ के रखले हवे। बुझा हवे कि नतिया मति-गति मार लेले हवे। मुसहर के बेटी पढ़ के का करत रे... मुअना? कवन मुसहर पढ़ल हवे जे एकरा से बिआह करत रे... डाकछुअवना? बेटी जात पढ़ के का करत रे... नतिया? बेटी जात पढ़ियों के भाते-रोटी नू बनाई रे... नरकखउका। तोरा देहि में घून लागों। का जाने नतिया का कर देले हवे छौड़ी के? छौड़ीयों हमार नू ने माने हवे। भाग-भाग के चल जा हवे। मरदो हमार ओइसने हवे...?

एह गारी से बबन के कुछुओ फरक ना परत रहे। ऊ अपना मिशन में मस्त रहन। आवाज सुन के सोमारु अइलें, का हल्ला करे हवे गे...? ने घरे चलबे...? जब देख तब पकर-पकर करत रह... हवे। ने मनबे गे...? धंगवलस खोज हवे...?

शनिचरी के मतारी तमतमाईल घरे गइल। सांझ के मुसटोली के सब मरद्-मेहरारु बाले-बच्चे हाथ में कटोरा लेले करकटहि खाए जाय लगलें। शनिचरी के मतारी शनिचरी से कहलस– "चल ने छोड़ी करकटहि खाय। न चलबे गे...? बाले-बच्चे जा हस, ई घर अगोरत हवे। का खेबे गे रतिया में? का हवे घर में जे बनत? ने चलबे...?"

शनिचरी महटिअइले रहे। कुछ ना बोलल। ऊ किताब में मगन रहे। शनिचरी जिदी त रहले रहे, पीतमरुओ रहे। केहू के दुआर पर कटोरा लेके गइल, ऊहो बिना बोलावल ओकर स्वभाव के खिलाफ रहे। बे बोलावल केहू के दुआर पर गइला पर आपन सांगव के हिसाब से खिआवे। केहू भर पेट तऽ, केहू टुकी-खांड़ देके भगा देला। ओह दिन सभन के टूकी खांड देके भगा दिहल गइल। शनिचरी के मतारी के जवन मिलल घरे लेके आइल। मतारी के माया शनिचरी के खाए के देलस, बाकिर शनिचरी ना खइलस।

बबन आपन मिशन के आगे बढ़ावे खातिर खूब मेहनत करत रहन। बबन चूंकि प्रगतिशील विचार के रहन, आ प्रगतिशीलता के मतलब ह कि आपन

www.bhojpurisahityangan.com

पिछड़ल समाज के आगे बढ़ावे में मदद करीं। जागरुकता फैलाई, शिक्षित करीं। ढकोसला आ अंधविश्वास से बाहर निकालीं।

बबन अक्सरहां बाबा साहेब के जीवन में घटल घटना दुख-तकलीफ आ उनुकर संघर्ष, कइसे-कइसे बिकट परिस्थिति में पढ़-लिख के शिखर पर पहुंचले। ई लइकन के बतावसु-सुनावसु। लइका बड़ा ध्यान से सुन सऽ। शनिचरी अउरी उत्सुकता से बाबा साहेब के बारे में जानल चाहे। बबन शनिचरी के सवाल के जवाब देके संतुष्ट करे के पूरा प्रयास करस। बाबा साहेब के जीवन संघर्ष के वृतांत शनिचरी के दिल-दिमाग पर गहिरा असर डललस। बड़ी मेहनत आ लगन से पढ़ाई करे लागल। बबन शनिचरी के प्रतिभा के कायल रहन। मिशन के आगे बढ़ावे वाला भविष्य शनिचरी में उनुका लउके लागल। बबन के सोच रहे कि एगो दीया से बहुते दीया बारल जा सकत बा। दुइयो-चार गो लइका आ लइकी पढ़ के प्रगतिशील सोच के हो जइहें तऽ समाज के शिक्षित होखे में देर ना लागी। शनिचरी के पढ़ावे खातिर। बबन पूरा जोर देलें। इसकूल में अनुसूचित जाति के छात्रन के छात्रवृति मिले से ढेर मदद हो जाता रहे। समय के साथ शनिचरी प्राथमिक से मीडिल इसकूल आ फेर हाइयों इसकूल में पहुँचल। मैट्रिक के इम्तिहान में शनिचरी प्रथम श्रेणी से पास भइल। ओकरा सरकार के ओर से दस हजार रोपया छात्रवृति मिलल। शनिचरी के हौसला कुलांच मारे लागल, उड़ान भरे खातिर। बबन के सहयोग आ मार्ग दरसन से शनिचरी के सितारा बुलंद होखे लागल। कॉलेज में ओकर नाव लिखाइल।

प्रतिकूल हालातों में कठोर परिश्रम से जीवन के लक्ष्य हासिल कइल जा सकेला। फर्श से अर्श तक पहुँचल जा सकेला। शनिचरी के ई बात दिमाग में बइठ गइल रहे। शनिचरी जवन साल बी. ए. पास भइल, ओहि साल शिक्षक बहाली खातिर विज्ञापन निकलल। शनिचरी के सोच रहे कि आपन समाज के आगे बढ़ावे खातिर ज्ञान के लव जरावल बहुत जरुरी बा। ई काम एगो शिक्षके कर सकेला दोसर केहू ना कर सकी। एहि चलते शनिचरी शिक्षक बने के ठान लेलस। शिक्षक के आवेदन भर देलस। कुछ महीना बाद इम्तिहान भइल। शनिचरी के सेलेक्सन हो गइल कॉन्सीलिंग भइल। संयोग से दलित आ महिला होखे के चलते अपने गाँव के इसकूल में योगदान करे के चिट्ठी मिलल। गाँव में चरचा होखे लागल– कइसे-कइसे बबनवा एगो मुसहरिन के माहटरिन बना देलस। जातिवादी मानसिकता के लोग बतकही करे लागल– "अब त पाठक जी हेडमास्टर के सोझा कुर्सी पर एगो मुसहरिन बइठी नू...? इहे घोर कलयुग कहाला।"

www.bhojpurisahityangan.com

बबन बेमार चलत रहन, बाकिर शनिचरी के समाचार उनुका के उदवेगलसि। ओकरा के योगदान करावे खातिर ओकरा साथे गते-गते इसकूल पऽ गइले। बबन के खुशी के ठेकाना ना रहे। पाठक जी हेडमास्टर ओहि गाँव के निवासी रहन। पाठक जी कहलन, "बबन...। तू तऽ कोइला के हीरा बना देलऽ।"

बबन कहलें– "सब एकर मेहनत आ लगन के फल हऽ मास्टर साहेब...।"

पाठक जी कहलें– "बड़ा खुशी भइल, जतना हमरा से हो सकी हम इनकर सहयोग करबि।"

शनिचरी के योगदान करवलन। शनिचरी इसकूल में पढ़ावे लागल। चले के बेरा बबन शनिचरी से कहलें– "समाज के लोग के जागरुक बनावत रहिह। शिक्षा के दीया जरवले रहिह, जवना से समाज के अज्ञान रुपी अन्हरिया भागी। इहे हमार गुरुदक्षिणा बा।

थोरहि दिन में बबन एह दुनिया से चल गइलें। शनिचरी उनुकर नक्शेकदम पर चले के संकल्प लेले रहे। जहाँ बबन छोड़ के गइल रहन, ऊ विरासत शनिचरी सम्हार लेलस। लाग गइल आपन समाज के लइका-लइकीन के पढ़ावे आ पढ़े खातिर ललक जगावे में। आ शनिचरी दलित समाज में एगो मिशाल बन गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

हिंजड़ा

रंगनाथ सुख-सुविधा से भरल-पूरल आ घोर परम्परावादी बाकिर सरल इंसान। भगवान के प्रति आस्थावान। करम कांड में विश्वासी। सालो घंटन पूजा-पाठ करस। बिना पूजा कइलें चाय तक ना। परम्परा से हट के कवनो काम कइल उनुका शान के खिलाफ। उनुकर घरनी मीना इनिका से ठीक उल्टा आ उदार प्रकृति के मेहरारु। इनिका पूजा-पाठ में तनिको भरोसा ना। ऊ अक्सरहां कहिहें– "जवन लउकत बा उहे सांच ह। कामे पूजा ह। बड़-बुजुर्ग के सेवा ही धरम ह।"

रंगनाथ राजस्व विभाग में बड़ा बाबू रहन। रोपेया-पइसा के कवनो कमी ना। कमी रहे त बस एके कि मीना के गोद सुना रहे। सबकुछ अनघा रहते एगो बाल-बच्चा बिना सब बेअर्थ। बच्चा के ललक में बहुते ओझा-गुनी से देखवलें। ढ़ेर तिरथ-धाम प गइले आ देवी-दुर्गा के भखवटी भखलें। बाकिर ढ़ाक के तीन पात। बांझ रह जाय के चिन्ता सतावे लागल। तनाव में रहे लगलें रंगनाथ। एकरा खातिर हरदम मीना के दोषी ठहरावस। हरमेश खोबसस– "तुही बांझ बाड़ू, एही से बाल-बच्चा नइखे होत। एही से हम कहिलें कि पूजा-पाठ तुहू कर। पूजा-पाठ करे से सब ग्रह-दोष खतम होला आ भगवान के कृपा बरसे ला।"

नहला प दहला फेंकली मीना– "अइसन कवनो बात नइखे कि पूजा-पाठ करे से बाल-बच्चा होई?" हमार बड़का भइया आ भउजी त बहुते पुजारी ह लोग, उनुकर कहां एको नान्ह-बार भइल। छोटका भइया आ भउजी दूनों बेकत पूजा-पाठ के हाले ना जानस। देखते बानी कि बेटा बेटी से घर भरल बा। पूजा-पाठ करे से बाल-बच्चा ना होखे। बाल-बच्चा भइला आ पूजा-पाठ से कवनो सम्बंध नइखे। ई आस्था के चीज ह। जेकरा बा ऊ करेला आ जेकर आस्था नइखे ऊ ना करेला। बाल-बच्चा नइखे होत त मेहरारुये दोषी कइसे? मरद काहे ना?"

ललन रंगनाथ के संघतिया। हरमेश उनुकर सुख-दुख में साथे खाड़ रहत रहन। रंगनाथ के तनाव में देख के डॉक्टर से देखावे के सलाह देलें, आ कहलें– "एह रोग

www.bhojpurisahityangan.com

के एगो नामी- गिरामी आ हमार परिचित डॉक्टर बानी, चल के देखा लिहल जाय।" मीना- हाँ में हाँ मिलवली।" बिहान भइला दूनो बेकत ललन के साथे जाके डॉक्टर से देखावल लोग। दूना बेकत के जाँच भइल। दोष रंगनाथ में पावल गइल। शुक्राणु के घोर अभाव रहे, एही से बाल-बच्चा ना होत रहे। अपना में दोष जान रंगनाथ मीना से बहुते लजइलें।

डॉक्टर साहेब कहनीं– "ई लाइलाज बेमारी अब नइखे, कुछ बेसी समय जरुर लागी बाकिर ठीक हो जाई।"

डॉक्टर के बात सुन रंगनाथ के अन्हार जिनिगी में उमेद के एगो किरिन फूटल। इलाज शुरु भइल। साल बितत रंगनाथ के बेमारी ठीक हो गइल। समय के साथे मीना के बड़ा ऑपरेशन कके बेटी भइल। रंगनाथ के खुशी से आँख डबडबा गइल। बाकिर ई खुशी ढ़ेर देरी तक ना टिकल। डॉक्टर जब बच्ची के चेकअप कइले त कहलें– "ई लइकी ना ह, आगे चल के ई हिजड़ा होई।"

रंगनाथ कपार ध के ओहिजे थंउसि गइले। कहाउत ह– "बारह बरिस तप कइनी त बउराह भतार मिलल।" मीना ई माने के तइयार ना रही कि ई हिजड़ा होई बाकिर रंगनाथ के मन में किसिम-किसिम के बात आवे लागल। हिजड़ा के बाप कहाये से बांझे निम्मन। रंगनाथ एह लइकी से छुटकारा पावे के उपाय सोचलें– एकरा के रात के अन्हरिया मे केनहू रोड किनारा छोड़ दिआई त हमनी के छुटकारा मिल जाई आ केहू के मिल जाई त ऊ पोसी-पाली। ई बात मीना से कहलें त ऊ साफ इनकार कर देली आ कहलीं– "नव महीना कोख में रखनी, आ अब ई दुनिया में आइल त कइसे फेंक दीं? ई हमनी के खून ह। एकरा पैदा होखे से हमनी के बांझ के कलंक से बांची गइनी जा। एकर सृजना त एकदमे बेटी के बा। आगे का होई ना होई के जानऽता? पोसी-पाली जा जवन होइ देखल जाई। एह बात के केहू से भनक नइखे लागे देवे के। दोसर के चिन्ही, लइकी ह कि हिंजड़ा ह?"

मीना के ममता के आगे रंगनाथ लाचार हो गइलें। ना चाह के भी मीना के बात मान लेलें। मने-मने मीना से नाराज रहे लगलें। तनी-तनी बात पर गरम हो जास। हरमेश खोबसे लगलें।– "तु हिजड़ा पैदा कइले बाड़ू।" बार-बार ई बात सुन के मीना के कान पाक गइल त मीना कहली– "बाल-बच्चा ना होत रहे त हमीं दोषी.. अब हो गइल तबो दोषी...? मरद आपन दोष कब मानी? खेत मे जवन चीज के बिया डालाई तवने नू पैदा होई? खेत कइसे दोषी? रउरे बताईं...? आज काल्ह ई परम्परा हो गइल बा– "बाल-बच्चा नइखे होत त मेहरारु दोषी। बेटा के आसरा में बेटी हो

www.bhojpurisahityangan.com

गइल त मेहरारुये दोषी, हिजड़ा हो गइल त मेहरारुये दोषी। मरद अपना ऊपर कब दोष लिहें?"

रंगनाथ के जबाब ना जुरल...।

मीना के ममता ई माने के तइयार ना रहे कि ई हिजड़ा ह। काल्हु जवन होई तवन देखल जाई...। लाड़-प्यार से लालन-पालन करे लगलीं। आ अनिता कह के बुलावे लगली।

पढ़े कि उमिर होते इसकूल मे नाम लिखवा देली। अनिता मनगर पढे लगली। उमिर के साथे ओकर हिंजड़ा के लक्षण हल्का-फुल्का बुझाय लागल। मैट्रिक के इम्तिहान होत-होत कमर मटका के चले लगली अनिता। पूरा मोहल्ला जान गइल कि ई लइकी ना हिजड़ा ह। राह में अनिता के लइका तंग करे लगलें। ओह मोहल्ला के लोग के सोचे आ देखे के नजरिया बदल गइल। अनिता आ ओकर बाबू-माई के साथे लोग के व्यवहार बदल गइल। जइसे ऊ लोग जान-बूझ के हिंजड़ा पैदा कइले होखे। जइसे सब कुछ आदमी के वश में बा। जब चाहे तब बेटा पैदा कर दें आ जब चाहे तब बेटी पैदा कर दें। ई सबकुछ जानला के बादो कि आदमी के हाथ मे कुछ नइखे तबो ई भेद-भाव काहे? हिजड़ा भी मतारी के कोख से पैदा होलें। जइसे बेटा-बेटी होलें। एकरा के समाज स्वीकार करे त समाज के कवन नोकसान हो जाई? अगर बेटा-बेटी लेखा हिंजड़ा के सब सुविधा मिले त ऊहो देश आ समाज के एगो अच्छा नागरिक बन सकेला। कमर मटका के चलल कवनो अपराध त ना ह। एहि समाज में बलात्कार जइसन अपराध क के छूटा आ सीना तान के घूमत लोग के समाज बहिष्कार नइखे करत, अउरी ओकर साथे रहल आपन शान समझत बाड़ें। हिंजड़ों के, समाज मान-सम्मान देवे लागी त ई काहे रेल मे दस रोपेया तसीलत चलिहें। एह लोग के काम दिआई त काम करिहें। अवसर मिली त इहो डॉक्टर, इंजीनियर, नेता, मंत्री, बन सकेलें। केहू केहू के मुंहे ई सुन के मिले, ई हिंजड़ा के बाप हवन, रंगनाथ डिप्रेशन में रहे लगलें। बाकिर मीना समाज के सामने मजबूती से खाड़ रही कि ई हिंजड़ा होखे चाहे कुछुओ होखे एह से लोग के का...? केहू के घरे खायक का मांगे जात बिया? एक दिन लोग देखी एकरो के। एकरा के एगो सफल इंसान बना के रहब। लोग के अपमान अनिता के दिल दिमाग में बइठ गइल आ कुछ कर के देखावे के जिद ठान लेली। खूब मेहनत से पढ़ाई करे लगली। मैट्रिक के इम्तिहान में अव्वल भइली अनिता त रंगनाथ दूनो बेकत के खुशी भइल आ कुछ हिम्मत बढ़ल। बाकिर समाज मे लोग के सोच आ व्यवहार में कवनो बदलाव ना आइल।

www.bhojpurisahityangan.com

अनिता के कॉलेज में नाम लिखाइल। अनिता फेर पढ़ाई में रम गइल। बाकिर अनिता के साथे चाहे उनुका माई-बाबू के साथ लोग के अपमान, व्यवहार, अनिता के अब खटके। अनिता समझे बूझे लगली कि माई-बाबू के अपमान हमारे चलते होऽता। मोहल्ला के लइका अनिता के उब-चाभ बोलस त अक्सरहां झगड़ा होखे। कवनो मेहरारु मीना के उपहास उड़ावत कह द स– "देख ना बरहा बरिस पर बिअइबो कइले त हिंजड़ा।"

सब झंझट के जड़ अपना के माने लगली अनिता। अब माई-बाबू के अपमान बरदास्त से बाहर। एने इंटर का बाद बी.ए. में भी अनिता अव्वल भइली। मीना आगे नाम लिखवावे के कहली अनिता से बाकिर अनिता के मन में कुछ अउरी चले लागल। अब ऊ तंग आके रेल से कटा के जान देवे के सोच लेली। ना रही बांस ना बाजी बांसुरी।

अनिता नाम लिखवावे के बहाना से निकलली आ रेल से कटाय खातिर स्टेशन के सबसे किनारे पहुँचली। अभी गाड़ी आवे में देरी रहे। माई के ममता अनिता के जान देवे से रोके। द्वन्द में रोवे लगली। संयोग से हिजड़ा ग्रुप के नजर परल त भिरि जाके पूछलें– "काहे बहिन काहे रोअत बाड़ू?" अनिता सब बात बतवली। ऊ ग्रुप समझवलस आ कहलस– "जान देल कवनो समस्या के हल ना ह ओह से संघर्ष कके एगो मुकाम हासिल कके देखा द। जा घरे लवट जा।"

अनिता कहली– "अब घरे ना लवटब।

ऊ ग्रुप कहलस– "बाकिर जान, मत गंवाव। भलही हमनी के साथी बन जा मिलजुल के रहल जाई।

अनिता के दोसर राह ना लउकत रहे ओह ग्रुप के साथे चल गइली।

सांझ ले अनिता ना लवटली त मीना के मन घबराये लागल। रंगनाथ सगरे खोजले बाकिर अनिता के पता ना चलल। मीना रोवे लगली। रंगनाथ थाना में गुमसुदगी के रिपोर्ट लिखवइलें। थानादार के पता चलल कि ऊ हिंजड़ा रहे त रिपोर्ट ठंढ़ा बास्ता में डाल देलें।

ऊ ग्रुप ले जाके अपना गुरु अम्मा से मिलवलें आ सब बात अनिता के बारे में बतवलें। ओह गुरु अम्मा के नेह भरल व्यवहार से अनिता खूब रोअली। गुरु अम्मा अनिता के लोर पोछत कहलीं– "जिनगी के सफर तय करे खातिर अपना के मजबूत बनावहीं के परी। ई दुनिया बड़ा बेदर्दी ह एकरा से संघर्ष कर के आगे बढ़े के

www.bhojpurisahityangan.com

परी। तोहरा बारे में जवन जानकारी मिलल ओह से बुझात बा कि तोहरा में टैलेंट बा। तु लीक से हट के अइसन काम कर कि तोहार सपना पूरा हो जाय आ एगो अलग पहचान बन जाय। दुनिया के देखा द हिंजड़ो ओह बुलंदी पर पहुंच सकेला। एकरा खातिर हमनी से जवन मदद होई करब जा।"

ई सुन के अनिता के हौसला बढ़ गइल। अनिता सोचे कि एगो ऊ समाज रहे जवन इहां आवे के मजबूर कर देलस। मने-मने अनिता जिद ठान लेली, एगो सफल नागरिक बने के। ई नियति ना मनली।

अब अनिता हिजड़ा ग्रुप के साथे रेल में रोपया तसिले के काम करे लगली। ग्रुप लीडर बबीता आगे, अनिता पीछे।

बबीता ताली बजा के– "ए हीरो... ए चिकना... ए राजा... दस रोपया दे ना। ए चल निकाल ना... दे जल्दी कर...? बाबा... कर ना...।"

यात्री– "हाथ मत लगाव... चल आगे बढ़ पइसा नइखे।"

बबीता- हाय! अतना जेन्टीलमैन लउकत बाड़... टाई-सूट मरले बाड़ आ पॉकिट खाली...? चल जल्दी दे... ना।

ऊ यात्री पइसा न देलस त बबीता आगे बढ़ गइली।

फेरु ऊ यात्री बोलल– "साला भिखारी... हिंजड़ा काम करे त भीख मांगऽता।"

बबीता– "ए हीरो का बोलत बाड़े रे...? भिखारी बोलत बाड़े...? फेरु बोल ना...। हम काम करे खातिर तइयार बानी। बोल कवन काम करे के बा? काम बताव ना...। बोल कहां जाय के बा... कहां आवे के बा? हम आइबि काम देबे नू...? हम तोरा घरे दाई के काम करब। झाड़ू-पोछा सब करब। बरतन कपड़ा सब धोअब। बोल... काम देबे नू...? रोज-रोज ताली बजा के पइसा मांगल बढ़िया ना लागे, बाकिर पेट के चलते सब करे के परऽता। चल हमरा के काम दें... बोल कहां आवे के बा...?"

एगो दोसर जवान यात्री– "बिस्तर में आवे के बा...।"

बबीता– "आईब तोर बिस्तर में साला, काम देबे नू...?"

एगो अउरी यात्री– "रात मे आवे के बा बिस्तर में।"

बबीता गुस्सा हो के बोलल– "अरे साला आपन बहिन के बिस्तर में लें। हम काम मांगत बानी काम दे ना साला...। भगवान हमनी के ना एने के छोडलें ना ओने

www.bhojpurisahityangan.com

के। हमनी के बीच के बना के छोड़ देलें। बाकिर समाज हमनी के अपना बीच में नइखे रहे देत। समाज के बीच मे रहल मोसकिल। हाथ बा, पैर बा, ताकत बा, दिमाग बा तबो समाज हमनी के नइखे अपनावत। हिंजड़ा हमनी के ना... तु लोग हिंजड़ा... हमनी के खुल के ताली बजाई ला तु लोग ना।"

अनिता के पहिला दिन के अनुभव बड़ा तीखा लागल, बाकिर एकरा सिवाय दोसर कवनो उपाय ना। अनिता कतना लोग से काम खातिर अनुनय-विनय कइली। बाकिर हिंजड़ा होखे के चलते केहू काम ना देवे। हार ना मानल अनिता। कबो रेल में, कबो बिआह-शादी आ लइका भइला के अवसर पर जा जा के नाचे गावे। कुछ पइसा बटोराइल त फेर से एम. बी. ए. खातिर कॉलेज में नाम लिखा के पढ़ाई शुरु कइली। आपन साथिन के सहयोग से पाँच सितारा होटल में कैबरे डान्सर के काम शुरु कइली। पइसा ठीक-ठाक मिले लागल। समय पर एम. बी. ए. के डिग्री मिलल। अनिता कुछ दिन से बेमार चले लगली। जाँच भइल त एच. आई. भी. पॉजिटीभ पावल गइली। परेसान रहे लगली अनिता। ऊ डिप्रेसन मे चल गइली। बाकिर आपन गुरु अम्मा के प्रभाव से डिप्रेसन से बाहर निकलली। आ जीए खातिर आत्मबल मजबूत कइली। एह बेमारी पर रिसर्च कइली। एगो सरकारी अस्पताल में एच. आई. भी. विभाग में कॉन्सिलर नियुक्त भइली। कुछ साल बाद अनुभव बढ़ल त अपना मेघा के बल पर राजस्तरीय एच. आई. भी. पॉजिटीभ विभाग मे नोडल ऑफिसर के पद पर बहाल भइली। फेर अनिता पीछे मुड़ के ना देखली। आ पहिला तनखाह मिलल त अनिता आपन माई-बाबू के साथे ओह हिंजड़ा ग्रुप के साथिन के साथे गुरु अम्मा के कपड़ा खरीद के देली। फिर आपन गाँव जाके आपना कमाई से माई-बाबू के कपड़ा खरीद के देली। रंगनाथ बेमार चलत रहन। अनिता अपना साथे माई-बाबू के लेले चल अइली। आ माई-बाबू के सेवा आ सुख सुविधा के ध्यान रखे लगली।

www.bhojpurisahityangan.com

भनक

रूपेश शहरी परिवेश में पलल-बढ़ल, आ खुला विचार के। एगो शिक्षक के लइका। कद काठी छरहरा, बदन गोरा चिट्ठा, सुनर-सुभेख। छोटे उमिर में माई के ममता से मरहूम। अभी डेगा-डेगी चलते रहन कि एगो बेमारी के कारण माई गुजर गइली। एह से माईओ के जिम्मेवारी बाबूजी रामरूप के निभावे के परल। रामरूप हाई स्कूल के हेडमास्टर। शहर में घर बना के गाँव से शहर आ गइलें।

रूपेश तनी सेआन भइलें त घर में टांगल फोटो के ओरे अंगुरी कके पूछलें– "ई के ह बाबूजी?"

"ई तोहार माई के फोटो ह बबुआ।"।

"कहाँ बाडी माई, कब अइहें?"

रामरूप के आँख डबडबा गइल कहलें– "तोहार माई बड़ी दूर चल गइली। अब कबो ना अइहें।"

"काहे ना अइहें?" बेचारे रामरूप निरूतर...!

ई सवाल लेले रूपेश सेआन भइलें। केहू के माई के देखस त सोचस, काश! हमरो माई रहतीं।

ई चाहत कवनो अधेड़, बूढ़-पुरनिया भा असहाय महिला के दुख परेशानी में देख के मदद करे खातिर हरमेश तत्पर रहस।

एम.सी.ए. कइला के बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर एगो बढ़िया कम्पनी में बहाल भइले। एगो बड़ शहर में योगदान कइलें। ऑफिस से आधा कोस से कमे दूर पर डेरा मिलल। एगो परिचित आदमी चेतवलें कि हई गली से आवा-जाही मत करिह। मेन रोड से जइह-अइह। रूपेश पूछलें– "काहे-?"

ऊ आदमी बतवलें, "ई एरिया ठीक ना ह।"

www.bhojpurisahityangan.com

कुछे दिन बाद ऊ कौतुहलवश ओह गली में गइलें। गली में दूनो तरफ जवान से लेले अधेड़ मेहरारू सज संवर के गाहक पटावे के इंतजार में खाड़। समझ गइलें कि ई रेड लाइट एरिया ह। एह गली से ऑफिस तनी अउरी नजदीक पडत रहे। ऑफिस जाय में कुछ कम टाईम लागे। कबो लेट होखे त एही गली से ऑफिस निकल जास। एक दिन ओह गली में सीढ़ीं के सटले खाड़, एगो बहुते सुनर रूपगर, धप धप गोर, कमर तक झुलत बाल कमसीन लइकी पर नजर परल रूपेश के। देख के ठिठक गइलें। ठिठकल देख ऊ लड़की उनुका ओरे बढ़ल, बाकिर ऊहाँ से ऊ ऑफिस तेजी से निकल गइलें। ओह लड़की के सुरत रूपेश के नजरी पर नाचे लागल। साँझ के डेरा लवटलें त ओकर सुरत उनुका के बेचैन कर देलस। ऊ सोचे लगले कि आखिर ई अतना कमे उमिर में कइसे पहुँचल ? इहे सोचत ऊ रातभर करवट बदलत रह गइलें। एक बेर छुट्टी के दिन ओह गली में ओहि लइकी के पास खाड़ भइले। ऊ लइकी उनुकर हाथ धके पातर सीढ़ी से कोठा पर ले गइल। एगो छोट कोठरी। ओह में मधीम बल्ब जरत कमे रोशनी में साफ लउकत रहे। देवाल पर शीलन। कतना जगह से पलस्तर झरल। एगो चौकी पर पुरान गद्दा ओह पर पुरान चादर बिछावल। ओहू पर कतही-कतही दाग। ऊ लइकी आपन बेलाउज के ऊपर के दूइ गो बटाम खोल साया जाँघ तक उठा के कहलस "जल्दी जल्दी निबट लीं साहेब, अभी धंधा के टेम बा।"

रूपेश कहलन, "एक गिलास पानी मिली...?"

लइकी कहलस, "आरे साहेब इहां त सब केहू पिआसे बुझावे खातिर नूं आवेला।"

पानी देके बेड पर चल गइलस। बेलाउज के सब बटाम खोल के कहलस, "आई साहेब पिआस बुझा लीं।"

रूपेश दुआरी पर खाड़, हिललें ना। ऊ लइकी उनुकर हाथ ध के अपना ओरे खींचे के नकाम कोशिस कइलस। कहलस "रउवा कइसन नादान गाहक बानी साहेब? दोसर गाहक आवते जल्दी कपड़ा खोले के कहेला। अइसे होख, त ओइसे होख तिरछा त नहूर के, सब गाहक के मन राखे परेला। बिछौना लेखा बिछ जाय के परेला।"

"बिछ जाय के मतलब?"

"मरद के नीचे बिछ जाय के परेला...!"

www.bhojpurisahityangan.com

रूपेश कहलन, "हम तोहरा से कुछ बात कइल चाहऽ तानी।"

"खाली बाते साहेब...?"

"पहिले बेलाउज के बटाम लगा के आपन बदन तोपऽ।"

"कोठा बदन तोपे खातिर ना, खोले खातिर ह साहेब"

"तोहार नाम का ह?"

"नाम से का काम साहेब? आईल बानी त आपन काम करी। खाली काम से मतलब राखीं।"

"बतावऽ।हम कुछ करे खातिर नइखी आइल। पहिले नाम...!"

"लोग राम्भा के नाम से जाने ला। अब त नाम जान गइनी। आई अब निबट लीं।" ऊ लइकी कहलस

"ना... राम्भा, हम तोहरा संगे निबटे खातिर नइखीं आइल। हम तोहरा बारे में जानल चाहऽ तानी कि तु इहां कइसे आ कवन मजबूरी में पहुंचलू?"

राम्भा ई बात सुनके उदास हो गइल। कहलस, "ई जानल कवन जरूरी बा साहेब?"

बहुत प्रयास कइले रूपेश ओकरा से पूछे के। बाकिर आपन अतीत ना बतवलस।

राम्भा के पाँच सौ रूपया देके जात खानी कहलन, "हम फेर आईब आ जब तक अपना बारे में ना बतइबू, तब तक हम आवत रहब।"

राम्भा रोपया लवटावल चहली, बाकिर रूपेश ना लेले।

फेर कुछ दिन बाद रूपेश ओकरा भी गइले आ पूछलें, "कहाँ से आइल बाडू?"

"घरे से।" राम्भा कटीली मुस्कान आ कनखी मारत कहलस।

"कहाँ घर बा?"

"जहाँ होखे के चाहीं।"

"ई जबाब त ना ह।"

"आखिर काहे जखम कुरेदत बानी साहेब।"

www.bhojpurisahityangan.com

कह के उदास आ शांत होके बइठ गइल ऊ। रूपेश फेर पाँच सौ रोपया देत कहलन, "ठीक बा अभी हम जा तानी बाकिर फेर आइब।"

फेर एक दिन रूपेश अइले आ पूछलें, "एह दलदल में कइसे फँसलू...?"

"का पता?, हमरा नइखे मालूम।"

"ई सब छोड़ काहे नइखू देत...?"

"का छोड़ दी?"

"इहे सब।"

"इहे सब के मतलब...?"

"देह बेचल।"

"इहाँ कवन नइखे अपना आप के बेचत? हम त खाली देह बेचत बानी। बाकी लोग त इमान, धरम आ का का नइखे बेचत? इहां सब लोग बिक्रेता बा। मजदूर श्रम बेचता। ऑफसर बुद्धि ज्ञान बेचता। आ कुछ लोग तऽ देशो बेच रहल बा।"

ई झटकदार जबाब सुन के रूपेश चुप। फेर चल गइले। एक दिन ठान के अइलें कि आज जब तक बतइहें ना हम उहाँ से आइब ना। चाहे रात भर रहे के ना पर जाय।

कोठा पर चढले त कोठरी के दूनो पाला सटल। राम्भा अभी सजत संवरत रही। थोरहि देरी में पाला खुलल। रूपेश कोठरी में राम्भा के बगल में बइठ गइलें। पूछलें, "तोहार माई बाबूजी कहां बाडे?"

"हम अपना बाबूजी के नइखीं देखले।" राम्भा कहली।

"तब माई...?"

"माई हमार बगल वाला कोठा प।"

"अलग-अलग काहे...?"

"का साहेब...? हमनी के रंडी हईं जा त का? लाजो लेहाज नइखे...? माई के सोझा हम धंधा कइसे करब?"

"माई के, का नाम ह?"

"चम्पा बाई। आखिर राम्भा गते गते रूपेश के जिद के आगे टूटे लागल आ कहलस, "हमार जन्म एहि गली में भइल। हम एहिजे पोसइनी, सेआन भइनी आ

www.bhojpurisahityangan.com

एहि माहौल में जीअ तानी। कहाँ जाईं? केकरा भी जाईं? के अपनाई हमरा के ? बाकिर माई अपना बारे में सब कुछ बतवले बाडी हमरा के।"

"ठीक बा, जवन जानत बाड़ू बतावऽ।"

राम्भा कहली– "माई हमार एगो बड़ घराना के बेटी। सब परिवार गाँवे में। माई के विआह कमे उमिर में हो गइल। ओह समय गाँव देहात में अक्सरहाँ कमे उमिर में बिआह होखे। माई अभी अठारहो के ना रही। बाबूजी के साथ पट्टीदारी ममिला में झगड़ा भइल। दूनों ओर से बंदूक निकलल। बाबूजी के गोली लाग गइल दवरे पर खतम। फेर जानते बानी विधवा बिआह कहाँ होत रहे? माई असहीं रह गइली। अभी अबे त उमिर भइल रहे दामपत्य सुख भोगे के। घर के एगो नोकर से मेल-मोहब्बत हो गइल। ऊ मोहब्बत त नहिये कहाई। बाकिर देह के भूख माई के पांव खाल में डाले के मजबूर क देलस। जबे गंव लागे ओह नोकर से भूख मेटावस। इ सिलसिला चले लागल। एकरा खातिर माई के गलती हम तनिको ना मानीं। दोषी ऊ समाज बा। अगर विधवा बिआह होइत त, माई अइसन काम ना करती। बाकिर जातीय अहंकार आ ई रूढीवादी परम्परा के कारण हम एह दलदल में फंसल बानी। केहू ना चाहे अइसन गलत काम कइल। हम चाहब कि समाज एह पर विचार करे। ताकी फेरू कवनो विधवा एह दलदल में ना फँसे। ओह नोकर के प्रति माई के लगाव आ नेह शक के कारण बनल। गते गते घर के आदमी के भनक लाग गइल। रंगे हाथ पकड़े खातिर कुछ लोग ढुका लागल। बाकिर चान्स ना लागल। फेर माई आ ओह नोकर के जान मार के खपावे के प्लान बनल। कहाउत हऽ कि देवालो के कान होला। एह खतरा के भनक कवनो माध्यम से माई के लागल। जान केकर प्यारा ना ह। उनुका भी जवन रोपया आ गहना रहे लेके ओह नोकर जोरे रातो-रात फरार। बड़ी दूर बड़ शहर में एह होटल से ओह होटल दिन कटे। कुछ दलाल पीछे लाग गइले। माई सुनर आ जवान रहले रही। माई के ऊहां से उठा ले लें स। माई साथे जवन करे के रहे जवन कके, कोठा पर बेच देलन स। ओहि टेम से एह दलदल में माई फंसली त फेर ना उबरली। ई दलदल अइसन ह कि एह में से जतने निकले के कोशिश होला ओतने धंसल चल जाला। एहि गली में हमार जनम होखे से कांचे उमिर में एह दलदल में धंसोर दिआइल। ना चाह के देह बेचे के परऽ ता। काहे कि पापी पेट के सवाल बा। इहां से निकलल संभव नइखे। इहां के भंडुअन के नजर हमनी पर हरमेशा रहेला। ई दुखड़ा कहत कहत राम्भा के आँख के लोर ढरक गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

रूपेश लोर पोछत कहलन "इहां से निकले के मन बा?" "निकले के केकर ना मन करेला? इहां से निकलल आसान नइखे। आ निकलियो जाइबि तब कहां जाइब। हमार कहाँ घर दुआर बा। के अपनाई...?"

"हम अपनाईब आ तोहरा के निकालब।" रूपेश कहलन।

राम्भा कहली, "इहां के भंडुआ बहुते खतरनाक आ पहुंच वाला बा। ओकर पहुँच थाना पुलिस से लेले नेता मंत्री तक बा। कबो कबो नेता मंत्री के भूख मेटावे खातिर एहिजे से भेजल जाला।"

"का नाम ह भंडुआ के।"

"रफीक मियां।"

गंव में रहे लगलें रूपेश।एक दिन रूपेश के ऑफिस से लवटत बेरा एगो अधेड़ मेहरारू के टेम्पोवाला से धक्का लाग गईल। ऊ गिर के बेहोश। तनिके में भीड़ जुट गइल। रूपेश देखलें त उठा के रिक्सा से ओह मेहरारू के अस्पताल पहुँचवलें। पैर में फ्रैक्चर रहे। प्लास्टर भइल। कुछ देरी में डॉक्टर छोड़ देले। फेर घरे पहुँचावे खातिर रूपेश रिक्सा पर बइठलें।

रिक्सावान पूछलस– "कहाँ जाय के बा?"

ऊ मेहरारू कहलस, "दलदली गली।"

थोरहि देरी में रिक्सा दलदली गली पहुंचल त ऊ एगो सीढ़ी के पास रोके के कहली। रूपेश उनुका के गोदी में उठा के कोठा पर ले गइले। माई के देख राम्भा रोवे लगली। रूपेश समझ गइले कि ई राम्भा के माई हई। ऊ राम्भा से बतवली, "ई बबुआ, अपना माई लेखा हमरा के इलाज करवलें आ घरहू छोड़े खातिर अइलें। जुगजुग जीअ बबुआ। अब चम्पा वाई के देखे के बहाने गाहक बन के जास आ राम्भा से बातो हो जाय। प्लास्टर कटावे के दिन रूपेश सीधे अस्पताल के गेट पर इंतजार में खाड़। कुछये देरी में राम्भा अपना माई के लेके पहुँचलीं। प्लास्टर कटाइल आ दवाई लिखा के अभी अस्पताल से निकलते रहन कि रोड पर भगदड़ भइल। पता चलल कि आपसी वर्चस्व के लडाई में रफीक मियां के मडर हो गइल। पुलिस प्रशासन अस्त-व्यस्त। एह मोका के फायदा उठा के रूपेश, राम्भा आ चम्पावाई के साथे फुर्र। एगो मंदिर में बिआह कइले राम्भा से। फेर जल्दी बदली कराके दोसर शहर में चल गइलें।

www.bhojpurisahityangan.com

एने रामरूप के एकांकीपन जिनिगी। बेटा बाहरे। जीवन साथी के बिना एकांकीपन से चिन्ता आ तनाव। ओह में उमिर ढलान पर। गते-गते बेमारी चपेटे लागल। राम्भा आ चम्पावाई के साथे रूपेश घरे पहुँचलें। बाबूजी बेमार। दाई खायक-पानी आ दवाई खिआवे। रूपेश बाबूजी के अस्पताल में भर्ती करवलें। बाबूजी के सेवा में दूनो बेकत लाग गइल लोग। बेमारी से देह जर्जर। ना बंचलें। क्रियाकरम से निबट के ओह घर के अउरी बिस्तार कइलें। ओहि घर में अपना बाबूजी के नाम से वृद्धा आश्रम खोल देलें। ओह आश्रम के जिम्मेवारी चम्पावाई के दे दिआइल। कुछ साल में आश्रम में डेढ़ दर्जन से जादे वृद्ध महिला आ पुरूष आ गइलें। ओहमें अधिकतर बेटा पतोह से प्रताड़ित आ घर से निकालल। रूपेश आ राम्भा जब छुट्टी में आवस त ओह आश्रम के जायजा लेस कि सुचारू रूप से चलत बा कि ना। कवनो चीज के कमी होखे ओकरा तुरत आपूर्ति करावस। आश्रम में रहत हरेक वृद्धा से मिलस आ हालचाल जानस। ओह वृद्ध महिला-पुरूष में अपना माई-बाबू के अक्स पावस।

www.bhojpurisahityangan.com

रामयश 'अविकल'

जनम	:	1 फरवरी, 1961
जनम भूमि	:	गाँव- पंडुरा; डाकघर- पंडुरा रामपुर; थाना- संदेश, जिला- भोजपुर (बिहार)
लेखन	:	हिन्दी आ भोजपुरी के कइगो पत्रिकन में गजल, गीत, कविता, कहानी प्रकाशित साथे आलोचनात्मक लेखन आ आकाशवाणी के चर्चित कथाकार, गीतकार आ वर्ताकार।
सम्पादक	:	दस्तक पत्रिका
सम्प्रति	:	भारतीय जीवन बीमा निगम में प्रशासनिक अधिकारी (अवकाश प्राप्त)
सम्पर्क	:	पकड़ी गैस एजेन्सी के दक्षिण पोस्ट - पकड़ी आरा, जिला - भोजपुर (बिहार)
मोबाइल	:	+91 7903405469; +91 9431682531

Bhojpuri Prakashan
www.sbtindia.co.in
011 - 35853664

9 789349 584082
₹240.00

Cover design : SBT Studio

sarvbhashatrust
@sbhashatrust
sarvbhashatrust
sarvbhashatrust
amazon.in/sarvbhashatrust